



महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण :  
पुनर्मूल्यांकन



महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण :  
पुनर्मूल्यांकन

संपादक

डॉ. दयाकृष्ण विजय



(C) राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

प्रथम संस्करण

१९६० ई

मूल्य

५० ०० रु

पचास रुपये मात्र

प्रकाशक

राजस्थान साहित्य अकादमी  
हिरण्यमगरी सक्टर-४  
उदयपुर-३१३ ००१

मुद्रक

महावीर प्रिंटिंग प्रेस  
चतक भाग उदयपुर



वीर रसावतार महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण बहु भाषाविद् विविध कलाओं शास्त्रों तथा विद्याओं के ज्ञाता असाधारण प्रतिभासम्पन्न और यशस्वी कवि थे। सूर्यमल्लजी रमसिद्ध कवि ही नहीं प्रमुख इतिहासकार व युगदृष्टा भी थे। सूर्यमल्लजी द्वारा सृजित साहित्य में प्रमुख हैं— चम्पू महाकाव्य वश भास्कर, वीर सतसई, बलबद विलास रामरजाट, बलवत चरित घातु रूपावली स्फुट गीत, सर्वथा आदि। वश भास्कर और वीर सतसई उनकी सुप्रसिद्ध रचनाएँ हैं। वीर सतसई तो इस युग का सर्वश्रेष्ठ वीर रसात्मक काव्य माना जा सकता है।

सूर्यमल्लजी विलक्षण प्रतिभा सम्पन्न थे। घाठ पढ़ितों को अपने समक्ष बिठाकर व घाठ प्रकार के भिन्न भिन्न छन्द उद्देश्य लिखवा सकते थे। उनकी धाणी वीरत्व और प्रोज से परिपूर्ण थी। अंग्रेजों के विरुद्ध उनके शान्तिकारी तैवर थे। विदेशियों की दासता से मुक्ति अपनी धरती के लिए मर मिटने का गायन उन्होंने किया। सृजन, राष्ट्रीय चेतना और जन जागृति की दृष्टि से वे हिन्दी साहित्य के अग्रणी रचनाकारों की पंक्ति में हैं। उनका रचनाकर्म व काव्यकोशल अद्वितीय है।

अकादमी ने महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण के व्यक्तित्व और कृतित्व पर 'मधुमती' का विशेषारु प्रकाशित किया है और अब वही सामग्री स्वतन्त्र पुस्तकाकार रूप में प्रस्तुत है। प्रस्तुत सामग्री में महाकवि के सृजन कर्म और उपलब्धियों को रेखांकित करने और पुनर्मूल्यांकित करने का प्रयास किया गया है। विद्वानों ने महाकवि के सृजन के विविध पक्षों पर प्रकाश डाला है। अकादमी—अध्यक्ष तथा लघु प्रतिष्ठ साहित्यकार डा० दया-कृष्ण विजय ने यह मानद सम्मान—काव्य निष्पादित किया है। वस्तुतः अल्पावधि में यह आयातन उद्देश्य के श्रेष्ठ साध्य प्रयासों का परिणाम है। इस सकलन के रचनाकारों व हम अत्यन्त आभारी हैं।

आशा है, सुधिजन इस प्रयास का स्वागत करेंगे।

२० नवम्बर, '६०

डॉ० लक्ष्मीनारायण नन्दबाना

सचिव

राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर

## अनुक्रम

सम्पादकीय	डा० न्याकृष्ण विजय	७
प्रथम स्वतन्त्रता सप्ताह के उत्प्रेरक कवि सूर्यमल्ल मिश्रण	डा० प्रेमचन्द विजयवर्गीय	११
महाकवि सूर्यमल्ल और बलवद्विलास काव्य	सौभाग्यसिंह शेखावत	१६
अद्वितीय बाल कृति रामरजाट	श्रीनन्दन चतुर्वेदी	३३
महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण 'कुछ घनकही' पत्रों के सन्दर्भ में	डा० आकारनाथ चतुर्वेदी	४३
महाकवि सूर्यमल्ल और उनका बंश भास्कर	ब्रजराज शर्मा	५४
राजस्थान के वीररसावतार कवि सूर्यमल्ल मिश्रण	डा० रमाकांत शर्मा	६५
पराक्रम की धरती से फूटा हुआ कवि महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण	रामरत्न गर्मा	७३
महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की स्वानन्द्य चेतना	ड० मनु शर्मा	७९
सांस्कृतिक चेतना का सोपान बलवद्विलास	श्रीमती भविनाथ चतुर्वेदी	८६
महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की प्रासंगिकता	डा० रामचरण महे द्र	९३
राजस्थानी मानक रूप के प्रस्तोता—सूर्यमल्ल मिश्रण	डा० कन्हैयालाल शर्मा	९८
महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण के काव्य में नारोत्तरव	डा० मनोरमा सक्सेना	१०४
महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण और उनका बंश भास्कर	एस० प्रार० खान	१०९
महाकवि सूर्यमल्ल और उनका काव्य	माधवसिंह दीपक	११४
महाकवि की कविताओं का चित्राकन	प्रेमजी प्रेम	११८
बंश भास्कर—एक ऐतिहासिक कृति	डा० के० एस० गुप्ता	१२६
अपूर्व नयीं रक्षा बंश भास्कर	घनश्याम वर्मा	१३१
राष्ट्रीय चेतना और क्रातिचेता महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण	डा० लक्ष्मीनारायण नन्दवाना	१३४

## स्वातन्त्र्य प्रेमी महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण

जिन्हें चारण लेखको ने 'रमश्रीर मूर्ति उद्गुण्ड अथ छ गिरा निधान सुकवि रविमल्ल' कह कर सम्बोधित किया। ऐसे काव्य गुणी एवं गाम्भीर्य के तलस्पर्शी विद्वान्-निहास एवं तत्त्वबोध के भूतिमान स्वरूप चौदह विद्या एवं चौमठ कलाओं के निष्णात ममज्ञ महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण नैर्वातिक रूप में मवत् १८७२ को वृन्दी की कीर्तिमती घरा पर भावना की कोश तथा चण्डोत्थान के अंग में साहित्य के प्रागन में जन्म लिया। यह वह काल था जब उद्गु फारसी के कवि गालिब तिल्ली प्रागरा में धूम मचाये थे। स्वान श्रीर पद्माकर जैम रममिद्ध कवि ब्रज माधुगी स जन मानम का रमाप्लावित रूप थे तथा प्रगिद्धि के गिह्वर पर थे। सुदूरपूर्व में बंगाली भाषा के माइकेल मधुसूदन रत्त एवं कवीन्द्र रवीन्द्र श्रीर काशी में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ब्रज श्रीर हिन्दी की शब्दावली की गलाका से दण के लोचनो में स्वातन्त्र्य एवं समाज सुधार का अजन प्राज रह थे। यह साहित्य की प्रौढता एवं परिपक्वता का समय था तथा चारण काव्य परम्परा का प्रतिम चरण कह सकते हैं हम भाषा कवि को विकास की पूर्वपीठिका स्वरूप साहित्य की बड़ी पुष्ट भावभूमि विरासत में मिली थी।

सूर्यमल्ल मिश्रण राज्याश्रयी चारण काव्य परम्परा में लोक भाषा के सर्वाधिक गणक हस्ताक्षर माने जाते हैं। उनके काव्यों में चारणी कल्पना तथा प्रज्ञा का पूर्व विकसित स्वरूप देखने को मिलता है। सूर्यमल्ल जन्मजात कवि थे। वे स्वभाव से उग्र थे ता हृदय से विनम्र भी थे। उनकी लक्ष्मी प्रचण्ड थी। शारदा उनके जिह्वाप्र पर लक्ष्मी पानाब्ज पर तो दुर्गा उनके शब्दाथ में विराजमान थी। वे निर्भीक तथा स्वाभिमानो थे। राज्याश्रयी होकर भी कभी राजा की परानूत मनोवृत्ति से उन्होंने समझौता नहीं किया। उन्हें अपनी लेखनी की शक्ति पर विश्वास था। चाहते थे रानिया जोहर रचती रहें राजाओं के शीश युद्ध करते हुए घोड़ों की टापो में लुढ़कते रहें और वे उन्हें अपनी काव्याजली से धमर करते रहें। वे लिखते हैं—

रण सेती रजपूतरी, वीर न भूले बाली  
बारह बरसा वापरा लहै वैर सकाल ॥



एसी ही एक कथा है, भिण्ण की महारानी ने कवि के पास मूल्य माग्न हतु चूनरी भिजवाई । तब इस कवि ने एक हा बात कहलाई कि वह इस चूनरी का माल नभी आकेगा जब वे उसे पहनकर अपन पति के माथ सती होगी । हम जानत ह, कवि न महारानी क सती होन पर उही की स्मृति म मता चरित्र लिखा ।

राजा राममिह के लिए वे शकर स प्राथना किया करत थ कि ह शकर किसी दिन हमारे महाराजा का सिर घाई की टापो की टोकर खाता दिस । एसा स्यमल्ल जसा धीर भावाप न स्वाभिमानी तथा आत्मविश्वासी कवि ही कह सकता था ।

उह वे प्रिय नही थे जिनम न तो पौष्य था, न स्वात्म्य कामना । स्वकद्रित व्यक्तित्व उह कभी नही भाया । वे स्वतंत्र प्रकृति क अलमस्त व्यक्ति थ । हवला म उगा इमली पर बने मचान पर बठकर वे कभी सितार बजात ता कभी तूलिका स चित्र रचते । उनके सितार प्रम का दखकर ही नट नागर विनोद क रचयिता राजा रत्नसिंह ने उह दा सितार भेंट किये थे ।

सुंदर मतारी पठाई रतनस ज,  
बज त पचवान की कमान कसनोसी है ।

सगीत क इतन प्रमीय कि अपन व्यक्तित्व को भूल व तीज म गीत गाती महिलाओ ने आगे सितार बजान लग जाते थ । छ रानियो ने बीच पत्नी एकभव आत्मजा को खिलाने के बहान इतना उछाला इतना उछाला कि उसक प्राण ही चले गय । परती की गवयात्रा के समय सिर पर मोठ बांधकर दूल्हा बन गय । रास्त म मिल अम्बालाल चौवे, भाई जयलाल बहादुर कलावत सगीतज्ञ स उनकी सारगी लकर श्मशान मे शव के आगे बैठ गाने लगे —

लाठी जी घूघट ता खोलो,  
म्हाने देखवा का घाय छ ।

सगीत साहित्य कला मे डूबने के बाद उह न अपनेपन की सुधि रहती थी न अपने परिवेश की वे उसी म खो जात थे ।

महाकवि की कव्य प्रतिभा अद्वितीय थी । कल्पना नवो मयिनी तथा मवदना राष्ट्रभावाप न थी । १० वष की आयु म तो उहोने राम रजाट काव्य जिसमे राजा राममिह के दोनों विवाहो का विस्तार मे वर्णन है लिख दिया था । यह रामरजाट, चत् के पृथ्वीराज रासो की टक्कर की कृति है । छंदो मयूष तथा 'धातु रपावली उनके व्याकरण एव शब्द शास्त्र क ज्ञान की दुंदुभी बजा रही हैं । बलवदिलाम रतलाम क राजा बन्धनसिंह की स्मृति मे लिखा का य है । इमम लगता है भिण्ण व रतलाम भी महाकवि का उसी प्रकार प्रिय थे जिस प्रकार वू दी । महाकवि की यगस्विता की पताका घाम घण हैं— 'वश भास्कर और बीर सतसई , एक महाप्र थ है तो दूसरा न्तिता त स्फुट काव्य एक वर्णानक है ता दूसरा भावनात्मक । वग भास्कर को राजस्थान का महाभारत भी वहा जाना है । यह रघुवग की शनी म पडभावा मरुत, अपभ्र ग गौरसना मागधी पगाची तथा प्राकृत, मे निखा चम्पू काय है । यह छन्दों

की विपुलता, शब्दों की ध्वन्यात्मकता तथा ग्रंथ की गहनता को मट्टेजे ऐसा महाकाव्य है जिसमें कही राजा को भी जाने वाली शिक्षा है तो कही पंडितों का दिया जान वाला गाम्भिर्य पान। साहित्यिकों के लिए इसमें कला और साहित्य की नई सामग्री भी उपलब्ध होती है। इसमें इतिहास व काव्य शानो समाविष्ट है। इसकी भाषा पाण्डित्यपूर्ण तथा भाव ग्रन्थपूर्ण है। इसके लेखन क पीछे भी एक कथा है। दरबार में यह बात आई कि महाभारत सा कोई ग्रन्थ लिखा जावे। महाकवि ने इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। फिर क्या था। कहते हैं सूर्यमल्ल भ्रातृभ्रातृ लिपिकों को एक साथ बिठा धाराप्रवाह लिखाते चलते थे। लिखने वाले भी माधारण नहीं, उस समय के प्रसिद्ध कवि भग्नालाल दाइमा, हूडा दाइमा, भवरजी गूजरगौड जम नामधारी व्यक्ति थे।

वग भास्कर का लेखन महाकवि ने मवत् १८६७ के बैसाख माह में प्रारम्भ किया था। यह ग्रन्थ पूरा नहीं हो सका इसका एकमात्र कारण था राजा मानसिंह की पराभूत मानसिकता जिससे कवि का तालमेल नहीं हो सकता था। कवि को वही राजा प्रिय था जो देश को पराधीनता से मुक्त करान हेतु लड़ रहे स्वतंत्रता सेनानियों का सहयोग करता था। उन्हें नहीं जचा ता वामबाडा से बारात से लौट आये। रतलाम के राजा जलदत्तसिंह के २५००० रु की जागीर के प्रस्ताव को छाड़ बू दी लौट आये।

महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने देगी रजवाडों के ब्रान्तिवारियों को सहयोग देने हेतु बहुत पत्र लिखे। उनके पत्रों से स्पष्ट है कि महाकवि समय से जुड़े थे तथा उनके मन में देश को स्वतंत्र देखने की महती तालसा थी। समय की पुकार पर ही 'वश भास्कर' को छोड़ वीर भाव जगाना अभिष्ट मान उन्होंने वीर सतसई लिखना प्रारम्भ किया। 'वीर सतसई' को स्वतंत्रता-कान का ऊजस्वित स्तवक कहा जा सकता है। यह एक अनूठी वृत्ति है। यदि महाकवि ने कुछ और न भी लिखा होता तो भी उन्हें अमर करने के लिये यह पर्याप्त है। भले ही इसके २८८ दूहे ही लिखे जा सके हों। यह रचना अपने भावों के विस्तार के कारण पूरी सतसई है। उनकी 'वग भास्कर' तथा 'वीर सतसई' जैसी अग्रणी वृत्तियाँ उनके व्यक्तित्व एवं वृत्तित्व पर प्रकाश डालने में पूरी तरह सक्षम हैं। 'वीर सतसई' वीर भावों को जगाने वाली, देश पर सबस्व वलिदान करने की प्रेरणा देने वाली तथा अपनी संस्कृति के प्रति अद्भूत प्रेम जगाने वाली वृत्ति है। इसी कारण इसके दोहे आज भी जन-जन की जिह्वा पर हैं।

जस —

इला न देणी आपणी, हानरिया हुलराय,  
पूत सिखावे पालणे मरण वडाई सुाय—

×

×

×

जिए वन भूल न जावता सेंद भवय गिडराज

निए वन जबुक ताखटा ऊपम मडे भाज ।

×

×

×

इए बेला रजपूत के राजम गुण रजाट  
सुमिरण लागी धीर सब वीर रो कुल वाट ।

ऐसी उक्तिया न केवल साय राजपूत समाज को अपितु पूरे देश को जगा कर खड़ा कर देने की शक्ति रखती हैं ।

वे ब्रिटिश शासन के प्रबल विराधी थे । उनका राजाघोष और जमीनारो को लिले पत्र इस के साक्षी हैं । जब उन्हें लगा कि राजा नवाब उनके इतने प्रयत्नों और लिखन के बाद भी स्वतंत्रता प्राप्त करने में नहीं जुड़ रहे हैं और अंग्रेजों के गुनाहम उन रहे हैं तो उन्हें अपने पर और अपने कृतित्व पर इतना रोष आया कि वे अपने निम्न साहित्य को, अग्नि में स्वाहा करने को उद्यत हो गए । जब लोगों ने देखा कि वे वीर सतसई के पृष्ठों को जलान के लिये फाड़ रहे हैं तो उन्होंने दौड़ कर उन्हें ऐसा करने मरका । इससे लगता है कि महाकवि का स्वतंत्रता प्रेम कितना उग्र था ।

महाराष्ट्र के इस अज्ञेय कवि को जिनके देश भास्कर तथा वीर मतमई पर कई भाषा लिखे जाने के बाद भी नव भाषांतरण के कारण ठीक से पत्र तथा समझा नहीं जा सका यह दुर्भाग्य रहा । भाषा की कठिनता तथा बुद्ध विद्वानों ने घटनाओं तथा तिथियों की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगाकर उन्हें विज्ञादास्पद बना अलग धलक कर दिया । खड़ी बोली हिन्दी के आगमन में मरुघरा के प्राचीन डिगल भाषा साहित्य को जन समाज से दूर कर दिया । यह तो महाकवि की स्वातंत्र्य एवं वीर भावनाएँ ही थी जो स्वतंत्रता के काल में फिर जी उठीं तथा नव महाकवि का स्मरण करने को विवश कर सके । सूय को बाल्य क्षण भर के लिए ढाकले परन्तु सूय सूय ही है । महाकवि सूयमल्ल सही अर्थों में सूय थे जिन्हें नव भाषांतरण के बाल्य ढाक कर भी नहीं ढक सके ।

महाकवि पर भारत सरकार इमो १९ अक्टूबर को डाक टिकिट निकाल रही है । इससे पूर्व उनकी प्रतिमा बूंदी में स्थापित हो चुकी है । उनकी हवेली को शोध पीठ बनाने हेतु लिया जा चुका है । एम भाषा कवि की स्मृति को म्याई बनाने हेतु अभी बहुत कुछ किया जाना शेष है । उनकी हवेली को एक वहन शोधपीठ का रूप दिया जाना अभीष्ट है ।

मैं ऐसे स्वनामधेय महाकवि को शत शत नमन करता हूँ ।

डॉ० दयाकृष्ण विजय



## प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के उत्प्रेरक कवि सूर्यमल्ल मिश्रण

डा प्रेमचन्द विजयधर्गीय

सन् १८५७ में भारत ने पहली बार अंग्रेजी साम्राज्य के विरुद्ध स्वतंत्रता संग्राम छेड़ा था, राजपूताना और उसका एक अचल हाडोती भी उस संग्राम से अछूता नहीं रहा। कोटा ने उसमें सक्रिय भाग लिया तो बूंदी में महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने अपने काव्य के माध्यम से शखनाद किया और अप्रत्यक्ष रूप से लोगों को उस युद्ध के लिए प्रेरित किया। सूर्यमल्ल के उत्प्रेरक शखनाद के ये स्वर उनके वीर रसात्मक मुक्तक काव्य वीर सतसई में स्पष्ट सुनाई पड़ते हैं। दूसरी ओर कुछ राजाओं, सामन्तों, जागीरदारों या ठाकुरों को सूर्यमल्ल द्वारा लिखे गये पत्रों से भी भारत की तत्कालीन राजनीतिक परिस्थितियों, पत्र लेखक की राष्ट्रीय भावना और उनकी आन्तरिक छूटपटाहट का पता चलता है। तत्कालीन राजपूत राजाओं में शौर्य तो था पर मुगल शासन की केन्द्र में सुदृढ़ और अविचल स्थापना तथा उसका निरंतरता न न केवल मुगल शासकों को चरम राजपूत राजाओं, उनके सामन्तों और जागीरदारों को भी निश्चित विलासिता में डुबो दिया था, परिणामस्वरूप वे भारत पर अंग्रेजों के निरंतर बढ़ते पड़ोस के प्रति अस्वस्थ उदासीन और निश्चेष्ट हो गये। परिणाम यह हुआ कि जिन देगी शासकों के राज्य में बड़े-बड़े बलशाली आक्रमणकारी भी प्रवेश करने का साहस नहीं कर पाते थे उनमें मुटठी भर दुबल अंग्रेज भी घुसकर उत्पात मचाने लगे। वीर सतसई में सूर्यमल्ल मिश्रण ने इस स्थिति का लाक्षणिक ढंग से इस प्रकार व्यक्त किया है—

जिए वन भूल न जावता  
 गद गवय गिड राज  
 तिए वन जवुक ताखडा  
 ऊषम मड घाज ।

तथा—

डोहै गिड वन बाडिया  
 द्रह ऊडा गज दीह  
 सीहए नह मकेर नो  
 सहैल भुलायो सीह ।

दूसरा दोहा लामणिक ढग म डमी बात को पुष्ट कर रहा है कि दानी शासको के प्रणय भवर मे फस जान व कारण ही विदेशी गति धोण होन हुए भी, यहा उत्पात मचा रही थी और विनाश लीला रच रही थी । एक शीघ्र पूण नवृत्व क प्रभाव म छोटे माटे राजा, सामंत और जागीरदार विदेशी गति के प्रहार क सामन घबरा कर तितर बितर हो गय थ ।

ऐसे समय मे आवश्यकता थी एस कवि की जा आत्मात्मग की महिमा बगान हुए देशवासियो को विशेषत राजपूतो को स्वतंत्रता की प्रेरणा दे सके । सूयमल्लजी ने इसी आवश्यकता की पूर्ति की । वीर सतसई क आरम्भ म उ होन सब प्रथम आरगो का ही युद्ध मे चलने के लिए आह्वान किया ताकि व वहा वीर जसी बरनी करें उसका बखान कर सकें क्योंकि यह काम युद्ध भूमि— अग्रप्रत्यक्ष रूप स प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की कम स्थली स दूर रहन म नही बन सकता—

रण हालीज चारणा, चाह अथ लग चन  
 करे सुहृड जिसडी वहा विघ सो दूर बण न ।

लम्बे समय स चारणों को अपना परम्परागत कृतव्य करन का अवसर नही मिला था और वे आराम का जीवन जी रहे थ, अब उस प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के समय उनके सामने अपना चारणी दायित्व निभान का फिर अवसर आया था, अत सूयमल्ल जी उनसे कहते हैं कि एस समय म दूर बयो, आग बयो नही आते ।<sup>१</sup> इसी प्रकार डोलियो स उहोने कहा कि रगमहल मे गान बजाने और बारात की जवनार मे जीमन के लिए ता तुम आगे बढकर आते हो अथ युद्ध भूमि (स्वतंत्रता संग्राम-भूमि) से दूर बयो रहते हो ? युद्ध भूमि मे गिरते समय कौन दूर दूर स तुम्हारे सिन्धुराग को सुन सकगा ?<sup>२</sup> उधर डोलिन भी डोली को प्रेरित करती हुई कहती है—उतावल होकर चलो देखो सबक मोटा का घाट को कस रहा है और स्वामी कवच को कस रहा है । वीर युद्ध मे जान को तयार हो रहा है, हमे भी उस प्रोत्साहित करन के लिए जल्दी

१ वीर सतसई छन्द ११

२ वीर सतसई छन्द १४

पहुँच जाना चाहिए।<sup>३</sup> इन छन्दों में चारणों और ढोलियों को प्रेरणा देने के माध्यम से कवि ने वस्तुतः स्वतंत्रता संग्राम के योद्धाओं के प्रेरक कवियों को ही अपनी ओर से प्रेरित किया है क्योंकि उस समय प्रेरक कवियों की वाणी भी मौन धारण कर चुकी थी।

कवियों का प्रेरणा देने का यत्न सूयमल्ल ने स्वतंत्रता संग्राम के मनाशियों को भी करवाया। मोक्ष प्रेरणा देना आश्चर्य की बात है। सबसे प्रथम उन्होंने उन लोगों को कामना की अपनी म्यान और घर के मोह में उमड़ने से स्वतंत्रता संग्राम में दूर रहकर घर में बँठे रहने को कहा—

खोयो बँध घर में भवट, कायर जबुक् काम,  
मोहा केहा देसडा जेय रहै मो घाम।<sup>४</sup>

उन्होंने कहा कि घर के भीतर मरना यम के नरको में ले जाया जाता है, और उपयुक्त अवसर पर आकर मरने से इस लोक में सुन्दर कीर्ति और परलोक में प्रभुता की प्राप्ति होती है।<sup>५</sup> फिर कहा कि सरदारों दोनों को नीनता के माध्यम से मिह नही कहलाओगे।<sup>६</sup> सूयमल्ल वीर भोग्या वसुधरा' के सत्य में विश्वास करते थे, इसीलिए उमड़ने के सरदारों को उन्होंने कहा कि कुल की अजित (स्वदेश) की भूमि को गवा देने वाले घर-घर में नींद में सोये रहते हैं परन्तु हे सरदारों! यह भूमि कुमारी कन्या (के समान) है। जो वीर है वही उमड़कर वर है—

रमा कवारी रावता ! वीर तिको ही वीद।<sup>७</sup>

सूयमल्ल वीरों की गरीर का जीते जी दुःख से निकलना और जीव का शरीर से निकलना एक समान मानते थे। दूसरे शब्दों में वे कायरता को मृत्यु के समान मानते थे। इसीलिए उन्होंने शत्रुओं (स्वतंत्रता के रक्षकों) से कहा—युद्ध करते हुए मरकर ही, शव के रूप में दुःख (संग्राम स्थल) में बाहर निकली प्राणों के रहते दुःख को छोड़कर न भागो तभी पीछे नेक नामी रहगी।<sup>८</sup>

अनक स्थलों पर सूयमल्ल ने स्वयं प्रेरणा न देकर पत्नियों से प्रेरणा दिलाई है क्योंकि वे नारी की प्रेरिका शक्ति मानते थे। वीर सतसई में ऐसी ही पत्नियों की प्रतिनिधि एक पत्नी अपने पति को उद्बोधन देती हुई कहती है—हे पति ! जागो, युद्ध का हज़ारों का शत्रु हो रहा है। अनाहत धृतिभि (गधु) बाहर भेंट करन

३ वीर सतसई, छंद १५

४ वीर सतसई छंद १६

५ वीर सतसई, छंद २६

६ वीर सतसई, छंद ३४

७ वीर सतसई, छंद ३७

८ वीर सतसई, छंद ७५

क लिए तुम्हें चुना रह है ।<sup>६</sup> शत्रु प्रतीक्षा कर रह है । (अप्य क लिए मांग प्राप्ति की प्राणा म) माघ घातना म उठ रहे है । वीरों के बटारो म अपनी उद्यत रहा है (य उसे पान करन के लिए उद्यत हा रहे है) । ह पनि ' ननो म निद्रा को दूर करो— जागो और युद्ध म जाओ '—

यय निहारं पाहुणा गोध निहारं गग  
धमल कचोला ऊजत नोद विद्योहा नंग ।<sup>१०</sup>

भारत की विजयत राजस्थान का धीर परतो जानती है कि उसका धीर पति न स्वाभाविक रूप से हानि वाला युद्ध क हल्ले को गुनकर कभी उठन म देर नहीं की इसलिए वह नींद म सोय हुए पति का प्रणाम दती हुई कहती है कि— 'नोदानु धव छोन्ना भीडाणा कुच पीन' ।<sup>११</sup>

जब देग की स्वतंत्रता खतरे म हो ता कुछ का नहीं प्रत्यक्ष ऐगवामी का यह क्लेश्य हो जाता है कि वह उसकी रक्षा करे इसी कारण मूयमल्ल की धीर नारी इनन म सन्तुष्ट नहीं कि दूसर ऐगमत्त जाग उठे हैं वह ता यह साहसी है कि उसका पति भी जागे इसलिए वह अपने पति से कहती है कि दूसरों के जगन म क्या लाभ ? ह लडने वाले सिंह नू जाग क्योंकि स्वतंत्रता का यह युद्ध तुम्हारे ही बल पर हा रहा है ।<sup>१२</sup> जब शत्रु सामने खड़ा तब यह है अपने पति का मन-बाह छाडने की प्रणाम क्यों न दे ?<sup>१३</sup>

स्वातंत्र्य-संग्राम क लिए मूयमल्ल ने परिणाम से पतियों को य प्रेरक वचन कहलवाय है । वे स्वयं भी अपने देग की स्वतंत्रता का अपहरण करने वाले फिरंगियों को ललकारत हुए कहत है कि—इम घर पर आक्रमण करने को घाना हो तो यमराज को बिदाकर—अपनी मरुतु का सिर पर लेकर घाना क्योंकि हमारी स्वतंत्रता को खीनना लाहे के चने खराना है और लाहे के चने खराने वाला क तो दात टूटेंगे ही ।<sup>१४</sup> मूयमल्ल ने भारत की स्वतंत्रता पर आक्रमण करने वाले फिरंगियों को साफ-साफ बता दिया था कि भारत के रक्षक धीर सनानी को ललकारना वसा ही है जैसा यमराज की मूर्छो को खीनना अथवा अपने गरीर मे स्वयं प्राण लगा लेना ह भोले लोगों । यदि यह जागकर ब्रुद्ध हो उठा तो तुम एक भी नहीं बचोगे ।—

- 
- ६ वीर सतसई छंद १२८  
१० वीर सतसई छंद १२६  
११ वीर सतसई छंद १३१  
१२ वीर सतसई छंद १३२  
१३ वीर सतसई छंद १५३  
१४ वीर सतसई, छंद २१६

जम री मूछा तागवो, घग लगवो पाग  
घोर न भोसा ! ऊरगे ज खीजाणा जाग । १५

लगभग एसी ही बान स्वतंत्रता मनानी की पत्नी भी फिरगियो स कहती है। वह उद्ध मावधान करती हुई कहती है कि मर पति को मन छोडा। उम पिटारे में बैठा बाना नाग ही ममभ्रना, घोर यह भी खान म रचना कि इम मौप क जहर स बढकर मम का दड दूमरा क्या हो सकता है ? १५ मर क स्वतंत्रता मनानियो क उत्साह घोर गीय के बन पर हा मूममल्ल फिरगियो को चनावनी तेन घोर दिलान म ममय हुए थ। एक नहीं मनेक वा उ नेन तेमी चनावनियो टी घोर ग्लिवाई हैं। देग को सोया हुमा ममभ्रकर ही घपेरो न भारत की स्वतंत्रता का खी-हरण करने का दुमाहम किया था पर मूममल्ल न घोर-पत्नी म उहें मावधान करत हुए बहनवाया कि मेरे पति को सोया हुमा ममभ्रकर मत छोडो यहाँ म चनदा। पर नोट कर पार्वती की पूजा कराघी जिमसे तुम्हारी प्रियाघो का मुहाग घण्ड बना रहे। १६ दमी कम म वद् देग की स्वतंत्रता पर घात्रमण करने वाल फिरगियो को कहती जानी है कि ह भोने सोगो ! जब तक जीवन है तब तक घर म परिवगो के माय माकर जीवन रहो। जिा के बहकाय हुए लूट की उमग म इस घर पर चढ़ घाय हो ? जान पडता है दूमगे क बहकाव म घाकर तुम्हारी बुद्धि मारी गयी है तभी तो तुम यहाँ चढ़कर घाय हो। तुम्हारी यहाँ मृग्यु निश्चित है। इमग तुम्हारे गरीरो को घनिदाह महन करना हागा घोर तुम्हारे घर मे रोना ही गय रह जाएगा। इवलिय तुम भूनकर भी घाग के ऊपर पैर मत देना उसम जलने पर राख ही बाकी बचती है। बाने नाग क फन पर मरफ घाप मारे तो उसम नाग के फन का क्या विगणा ? हम चाहे गरीब हैं भोपडियो वाले हैं पर भोपडियो को लूटन म प्राणो का मान चुकाना होना है इम बात को घ्यान म रचना ! इम कारण ममभ्रारी घपना कर घपन घर (देग) को लोख जाघो, घापया इस भोप (देग) को लूटना तुम्ह बहन मँगा पडेगा— तुम्ह प्राण देन पडेमे । १८

देग की स्वतंत्रता पर घात्रमण करने वालो को ललकारन वाले घोर उनसे प्रणिमोध लन बाच ऐमे ही वीर मूममल्ल के लिए बरेष्य रह है, कयोकि ऐसे वीरो का नाम लेकर ही वार लाग मुठ क लिए तयार होते है एत ही वीर ममस्त वीरो के मरगणीय बनन है। यहा कारण है कि मूममल्ल न वीर सतसर् म स्वय की घोर म प्रेरणा देने क प्रनिमित्त वीरो की पहिचान पर घत-गत छुन लिख डाले हैं। ऐसे वीरो म नर घोर नारी गानो ह। नरो म वीर बालक, वीर पुत्र, वीर पिता, वीर पति, वीर देवर, वीर जठ मम्मिलिन हैं ता वीर नारी मे वीर माता वीर पुत्री, वीर बहिन, वीर भाभी, वीर पत्नी घोर वीर सास सम्मिलित हैं। वीर नारी का वीरत्व-प्रेम-धाय किती काव्य

- 
- १५ वीर सतसई छंद २१७  
१६ वीर मतसई, छं २१८  
१७ वीर सतसई छं २१९  
१८ वीर सतसई, छंद २२० से २२९



म इतना मुखरित नहीं हुआ है जितना वीर सतसई में। यही तब कि वीर पति की कायरता पर वीर पत्नी की और वीर मात्र की कायरता पर रगरजन, गधिन सुतारिन प्रान्ति की व्यथा—वना जिम प्रवार इस राध्य म व्यजित हुई है वसी अयत्र दुलभ है।<sup>१६</sup> युद्ध से पलायन करने वाला व प्रति तिरस्कार की भावना और व्यंग्योक्तियाँ भी इस काव्य में अनेक स्थानों पर व्यवहृत हुई हैं।<sup>१७</sup>

भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में बूढ़ पुरुष की प्रेरणा देने के लिए मूयमल्ल ने वीर सतसई में कई युक्तियाँ अपनायी हैं। इसके लिए जहाँ उ होन वीर नर और वार नारी की उनके विविध रूपों में, पहिचान बताई है उाके वीर भाव और स्वातंत्र्य प्रेम की यजना की है आत्मोत्सग की महिमा बतायी है वहीं कायरों के प्रति व्यंग्य के माध्यम से शीघ्र, साहस और स्वतंत्रता के लिए आत्म बलिदान के लिए अप्रत्यक्ष प्रेरणा भी दी है। कायर क्षत्रियों को सम्बोधित करते हुए उहोंने लिखा कि स्वामी (दश) के नमस्कार का तिरस्कार कर भागो मत। मृत्यु के उपरांत जब यम-दातना भोगोग तब तुम्हें पता चलेगा कि तुमने कितना बुरा काम किया था।<sup>१८</sup> वे कुटाटा के पुत्र हान हैं जो पृथ्वी का नमस्कार खाकर उसका कण नहीं चुकाते। अरे भोले! किस डर के मारे युद्ध भूमि से भाग चल? क्या मृत्यु के भय से? उस प्रकार भागने से भी क्या वह तुम तक नहीं आ पहुँचेगी? यो भागकर क्या मौन से उच जाभागे? तुम तो मौत से नहीं बच सकोगे पर ऊँचे कुल की बधु-तुम्हारी पत्नी—जब दूसरी स्त्रियों का दसगी, जिनके पति युद्ध से नहीं भागे हैं तब वह शम के मारे मर ही जाएगी।<sup>१९</sup>

कायरों पर अपनी ओर से व्यंग्य करते और उनकी भ्रमना करने के अतिरिक्त कवि ने माता से अपने कायर पुत्र की और पत्नी से अपने कायर पति की भ्रमना भी करवाई है। वीर माता तो अपने कायर पुत्र से कहती हैं— हे पुत्र! मैं तुम्हें अपने शरीर को क्षीण करने वाला स्तन पान कराकर तुम्हें बड़े बच्चे के साथ पाला था। पालते समय मुझे यह मालूम न था कि तू जन्मदात्री माता के दूध को लज्जित करके युद्ध भूमि से भाग आवेगा—

पूत! महा दुख पालियो वय-बोवण थए पाय  
प्रेम न जाणा, आवसो जामण दध लजाम।<sup>२०</sup>

पत्नी द्वारा कायर पति की भ्रमना पर तो मूयमल्ल ने आठ छंद लिखे हैं जिनमें व तीसरे व्यंग्य है। युद्ध से भागे हुए अपने पति को फटकारती हुई वीर पत्नी कहती है— हे पति! युद्ध भूमि से घर कैसे लौट आय? क्या तलवारों के घने भय से?

- 
- १६ वीर सतसई छंद २८२ २७३, २७६ २७७ और २७८  
 २० वार मतसई छंद २६२ २६३ २६४ २६५ २६६, २६७  
 २१ वीर मतसई छंद २६२  
 २२ वीर मतसई छंद २६४  
 २३ वीर सतसई, छंद २६५

यदि ऐसा है तो मेरे लहंगे में घुस कर छिप जाइय । शत्रु का काई भरोसा नहीं, कहीं यहाँ घर में भी न घ्रा पहुँच—

कत ! घरें त्रिम घ्राविया लेगा रो घण प्राप्त ?

नहेंगे मूक लुकीणिय वीरी रा न विसाम । २४

श्राय व्यग्याक्तियों में वीर पत्नी कायर पति स कहती है— ह पति अच्छा हुआ तुम (जीवित) घर लौट श्राय श्राव यह मरा वेश पहनला । तुम्हारी इस प्रिया का सुहाग ता लज्जित हो गया श्राव तो तुमसे दूसरे जन्म में ही मिलूगी— इस जन्म में ता श्राव तुमसे मेरा कोई सम्बन्ध नहीं । श्राव यह मरा गहना और मेरा वेश श्राप पहन लीजिय, मैं तो जागिन बन रही हूँ और योगिन तुम्हारे किस काम की ? अच्छा हुआ, तुम्हारा चूड़ियों का खर्च मिट जाएगा— श्राव तुम्हें मेरे लिए चूड़ियाँ लाने की आवश्यकता नहीं रहगी—

कत ! भला घर घ्राविया पहरीज मा वेश

श्राव घण लाओ चूड़ियाँ, भव दूजें भेटेस ।

ओ ताहणा, ओ वेश श्राव, कीज धारण कत ।

हूँ जागण त्रिण काम—रो, चूडा खरच मिटत । २५

युद्ध भूमि से पलायन करने पर, वह अपनी प्रतिक्रियात्मक वेदना और लज्जा का व्यक्त करत हुए कायर पति स कहती है— युद्ध भूमि से भागकर और इस प्रकार अपने जीवन का बचाकर तुमने अपने जीवन को व्यर्थ कर दिया, तुम्हारी इस कायरता में मेरा तो मन मर गया है । श्राव श्राधी बाहो की चाली में अपने हाथ दिखाते हुए— सबसे सामन सधवा वेश पहनते हुए मुझे बड़ी लज्जा होती है । तुम्हारे निर के केश सफेद हो गये वृद्धावस्था आ गयी, उसको देखने हुए श्राव श्राधिक जीने की कौनसी आशा है, जिसके कारण तुमने मेरे स्तन पर रहने वाले हाथ से घास लेकर मुह में डाला— शत्रु का सामन दीन होकर प्राणा की रक्षा की भीख माँगी । २६ वस्तुतः कायरता में घणा करने वाली पत्नी ने यहाँ पति में यही कहना चाहा है कि मौत सिर पर आ पहुँची है, फिर भी प्राणों का इतना मोह है कि शत्रु के सामने दीनता दिखाते हो । धिक्कार है तुम्हें । इसी क्रम में श्रागे श्रानकर वह कहती है— हे पति ! तुम्हारे पौत्रों के पुत्र हो गये और घर में सतान का जाल खूब बढ गया है । देखो काल तुम पर लुभा चुका है— वह तुम्हें लेन जाने ही वाला है मौत निकट आगयी है, श्राव तो युद्ध से भागना छोड़ दो । २७

सूयमल्ल ने कायर पति के प्रति उमरी पत्नी के व्यग्य और भत्सना भरे शब्द ही नहीं कहलाये हैं पति के पलायन पर अपनी मार्मिक वेदना भी उमसे व्यक्त करवाई

२४ वीर सतसई छंद २६६

२५ वही छंद २६७ २६८

२६ वही छंद २६९ २७०

२७ वीर सतसई छंद २७१

है। ऐस पलायनकर्ता पति की पत्नी मनिहारिण म कहती है— मनिहारिण मरे लिए लायो हुई शृगार की यह सामग्री लेकर तू चली जा, घर फिर मेरे महल मे न घाना। मेरे पति चू कि युद्ध स भाग घाय हैं अत मेरी दृष्टि म ता व मर चुक हैं। एमी स्थिति मे मैं विधवा भला क्या शृगार करूगी—

मणिहारी जा री। परी अब न हवनी धाव  
पीव भूवा घर आविया विधवा कवण बणाव ?<sup>२८</sup>

इन समस्त उपयुक्त व्यंग्य वक्रोक्तियों के माध्यम से विपरीत व्यञ्जना के द्वारा सूयमल्ल ने वस्तुतः प्रथम स्वातन्त्र्य संग्राम के लिए गौय साहम घोर देशहित आत्मोत्सव की ही प्रेरणा दी है। इसी उद्देश्य से उन्होंने ऐम पति की प्रणसा उसकी पत्नी से कराई है जो शत्रुओं की छाती पर मेना को चढाकर भाड़े भाले से ही उन्हें रोकता हुआ उह अप्रमी सीमा के बाहर निकाल आता है<sup>२९</sup>—व्यञ्जना म विदेशियों का देश की सीमा म बाहर निकालकर वास्तविक या सम्भावित पराधीनता म दश का मुक्त कग लता है।

उपयुक्त सभी विधियों का उपयोग करते हुए सूयमल्ल न वीर सतसई को भारत के प्रथम स्वतंत्रता-संग्राम के लिए प्रेरणा का प्राम्य और प्रज्वल स्रोत बना लिया है— विगत ऐसे समय म जबकि ईस्ट इंडिया कम्पनी का एकछत्र आधिपत्य देखकर भारत के शूरवीर अपने कुल के स्वभाव को भूल गये हों और अंग्रेजों के पराधीन हो गये हों तथा आलस्य और भोग विलास म जीवन को व्यथ गवा लिया हो।<sup>३०</sup>

'वीर सतसई स्वातन्त्र्य-प्रेरणा की एक ऐसी दुबारी तलवार है जो एक और वीरो को तो दूसरो और कायरो को प्रेरित करती है वह एक ऐमा द्विस्वरी शस्त्रना है जो वीरो को युयुत्सु और कायरो को युद्धाद्यत बनाना है वह ऐसी दीप गिवा है वीरो और कायरो दोनों क घर आगन का आनोक्त करती है। वीर सतसई का यह प्रेरणास्पद रूप स्वयं उसके कवि न स्वीकारा है— किसी आत्मन्लाभावन नहीं एक उज्ज्वल सत्य की स्वीकारोक्ति क रूप म। उनक स्वयं क पद्यबद्ध गणा म यह सतसई एक ऐसी रचना है जा सुनने पर वीरो के प्राण लेने वाली है और कायरो को काट के भाति चुभन वाली है जिसे सुनकर वीर युद्ध म प्राण दे देंगे और कायर लाग तस्त हो उठेंगे। जिन मनुष्यों म वीरता नहीं है और न पूरा जोग है वे भी इसकी सुनने पर, पूरे वीरो के समान, न समाने वाल जोश स भर जाँगे। जो धीर पितकुल और मातकुल दोनों पक्षों से उज्ज्वल हैं और जो युद्ध करने मे पूरे वीर हैं वे वीर तो इस सुनकर सौगुना वीरत्व प्रकट करने का बोध प्राप्त करेंगे।<sup>३१</sup>

२८ वही छं २७२

२९ वही, छं २०४

३० वीर सतसई छं ४

३१ वही छं ६ ७ ८



## महाकवि सूर्यमल्ल और बलवद्विलास काव्य

सौभाग्यसिंह शंखावत

10983  
614192

वीर रसावतार महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण राजस्थान के बूंदी राज्य के राज कवि थे। राजस्थान और गुजरात के चारण समाज की दीर्घकालीन कवि परम्परा में वे निःसंदेह यथा नाम तथा गुण थे। वे बहू भाषाविद् विविध शास्त्रों, विद्याओं और कलाओं के महान् अध्येयता और वाणी सिद्ध कवि थे। महाकवि सूर्यमल्ल के विविध भाषा और कलाओं से मण्डित महानाय चम्पू महाकाव्य वंशभास्कर के अतिरिक्त राजस्थान के शोध विद्वानों ने वीर सतसई, बलवद्विलास रामरजाट, छंदो मयूख, सतीरासो, धातु रूपावली और स्फुट गीत सर्वों का उल्लेख किया है। किन्तु छन्दो मयूख सतीरासो जमी उन ही कोई स्वतंत्र रचना किसी भी राजकीय तथा निजी सग्रह ग्रंथागारों में प्राप्त नहीं है। सतीरासो के लिये तो यह संभावना है कि बलवद्विलास में भिनाय के राज व्यास ब्रज वल्लभ और महाराज बलतावरसिंह की पत्नियों के सती होने के छन्द हैं उह ही विद्वानों ने सतीरासो का नाम देने की भूल की है। इन छंदों

के अतिरिक्त अन्य कोई कृति नहीं है। उल्लेखित कृतियों के अतिरिक्त महाकवि प्रणीत राजा बलवतसिंह पर 'बलवत चरित' नामक १६ छंदों की एक और कृति उपलब्ध है। यह रचना बलवद्विलास के बाद में लिखी गई थी। यह प्रकार सूर्यमल्ल मजित छोटा बड़ी पांच कृतियां हैं। इनमें वंश भास्कर और वीर सतसई जो प्रपूर्ण हैं और शेष तीन पूर्ण रचनाएँ हैं। य राज की वंश भास्कर उलवद्विलास रामरत्न बलवत चरित तो ऐतिहासिक काव्य के अंतर्गत मानी जाती है और वीर सतसई भी इसमें अछूती नहीं है। यद्यपि वीर सतसई में किसी वंश वंश की गाला प्रगाथा तथा यादा विशेष का बहान नहीं है पर क्षात्र धर्म और राजपूत संस्कृति में यह पूर्ण शोध प्रोत्साहन है। इसलिये यह भी आयुधजी क्षत्रिय जाति के जातिगत स्वभाव कृत्य प्राचरण, अधिकार और जीवन-दंगन का ही अप्रत्यक्ष रूप में बहान काव्य है।

बलवद्विलास और उलवत चरित दोनों ही कृतियाँ का काव्य नायक एतद् कालीन अजमेर प्रांत के भिनाय सस्थान का राठोड़ नामक राजा बलवतसिंह है। एक ही पात्र पर दो प्रलग प्रलग रचनाएँ रचने का कारण स्पष्टतः यह माना जा सकता है कि राजा बलवतसिंह और सूर्यमल्ल में घनिष्ठ मैत्री-सम्बन्ध था और उलवद्विलास लिखने के पश्चात् भी कवि राजा बलवतसिंह के स्नेह और प्रीति में तृप्त नहीं हुआ और पुनः सक्षिप्त ही सही परंतु बलवत चरित की रचना कर अपनी प्रीति का प्रमाण दिया।

बलवत चरित में मात्र १६ छंद हैं और उमम चरित नायक की गुण गरिमा का स्वर है। वह बलवतसिंह को एक स्वधर्म पालक और अमीम देव भक्त के रूप में देखता है। बलवतसिंह अग्नेजी का विरोधी और स्वतंत्र प्रकृति के राष्ट्रसेवी व्यक्ति था। बलवत चरित में कवि राज ने इस कथन की निम्नांकित छंद में साक्षी की है—

लघन को परत् प्रताप पुहवी में पु  
धाम धाम अज्जन मुलाई छन धूती की।

लीनो ऐंचि धम समस्त सरकारन को  
छिद्र देखिबे मे स्थो निलामा दद दूती की॥

ऐसे घोर समय भनाय के अधीस अजी  
तै निबाहि नीके मन मान मजवूती की।

राजन के काज बलवत नर राज एक  
तेरे पर लूबी घाज लाज रजपूती की॥

बलवद्विलास महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण कृत ५८३ छंदों की ऐतिहासिक काव्य कृति है। यह कृति राजस्थान के अजमेर मेरवाड़ा भू भाग में स्थित भिनाय सस्थान के शासक राजा बलवतसिंह राठोड़ की सम्मथना पर सजित है। राजा बलवतसिंह

जोधपुर के राजा चन्द्रसेन के ग्यारहवें उत्तराधिकारी थे। सूर्यमल्ल ने इस प्रथम में राजा बलवर्तसिंह के पुत्रों का संप्लित ऐतिहासिक महत्त्व प्रकट करने के पश्चात् बलवर्तसिंह के जन्म, शिक्षा, विनोद भ्रातृस्नेह सती के प्रसंग पर भ्रजमेर में नियत ब्रिटिश रजिस्ट्रार बनस सर सदरलैंड एच बनल जाज सारेन्स की प्रापति और फिर भ्रजेज अधिकारियों में मेल-मिलाप प्रभृति घटनाओं का वर्णन किया है। राजा बलवर्तसिंह के विवाह, उनके धनुज बह्मन्तसिंह और जोरावरसिंह के पाणिग्रहण, उनकी सतति गयादि तीर्थों की यात्राएँ बह्मन्तसिंह के निधन और उनकी धर्मपत्नी के सहगमन का भी इसमें प्रान्तन है।

महाकवि ने इस प्रथम के प्रारम्भ में भारतीय काव्य-परम्परानुसार काव्य के दोषों का गमन और गुणों के उत्कथ के लिए शिवशिव तनय आदि पूजित गणपति, सरस्वती महर्षि वदव्यास, पतञ्जलि कपिल जैमिनी और गौतम की बन्दना की है। तदनन्तर विष्णु, कमला, शिव-पार्वती ब्रह्मा मावित्री, माता पिता और अपने गुरुदेव के प्रति श्रद्धाज्ञापन कर प्रथमायक क पूर्व-पुरुषों का ब्रमाणत सक्षिप्त वर्णन किया है। यह वर्णन कायकुञ्ज का त्याग कर मरुदंग में धान के पश्चात् का अधिक विस्तृत और ऐतिहासिक आधारों से युक्त है। यहाँ सक्षिप्त रूप में ग्रथ का कथासार दिया जा रहा है। राजा कुणस्थल के उत्तराधिकारी राजा पुत्र हुमा। उसके तेरह पुत्र उत्पन्न हुए जिनमें रामोडे की पुण्यवीर करहा, कफालिया, चन्देल भुगलाणा, जलखेडिया जैवत, मूरमा, मूर वायहम भर्मपुरा कमधज और बीरिया शाखाओं का प्रचलन हुआ। पुत्र के धर्मवद्ध हुआ है जो अभिनदान देने के कारण तानेश्वर कहलाया। उसने अपनी स्वसा का विवाह हाडा नरेश रामनास के साथ किया। उसके भ्रजयचन्द्र हुआ। उसका पुत्र भ्रमयचन्द्र और उसका विजयचन्द्र हुआ। विजयचन्द्र ने वद्विजनों, कवियों और याचकों का एक भ्रव राशि का दान किया। उसका पुत्र जयचन्द्र हुआ जो सनाधिक्य के कारण 'दल पाखुला' के विरुद्ध स विभूषित हुआ। जयचन्द्र का पुत्र बरदाईसेन और उसके सिंहा न जन्म लिया। दिल्ली व काय कुञ्ज धवनों के अधिकार में चले जाने के कारण सिंहा न कायकुञ्ज नेश का त्याग कर द्वारिकानाथ के दशनों की नामना से पश्चिम दिशा की ओर गमन किया। उसने सहपरिग्रह यात्रा कर धववधरा में पल्ली (पाली) नगर में प्राकर विश्राम लिया। तब पल्ली बड़ा सम्पन्न नगर था। वहाँ के निवासी रात दिन दस्युदलों से भयाक्रान्त और असुरक्षित बने रहते थे। पल्लिवानियों ने सींहा का पराक्रमी जानकर उससे अपनी रक्षा की प्रार्थना की। उसने लोभित घाटकों का उन्मूलन कर पाली निवासियों को अभय किया और द्वारिकानाथ की यात्रोपरांत लौट कर स्थायी शांति व्यवस्था का वचन दिया।

राव सिंहा के प्रताप से अभिभूत होकर खुजराजीपति ने अपनी राजकुमारी का उसके साथ परिणय किया और अपने शत्रु राजा लक्ष्मराज (साखा) कच्छ नरेश का उन्मूलन करने का आग्रह किया। राव सिंहा ने लक्ष्मराज को रणभूमि में धाराशाही कर अपने सबधी चावड नरेश का निरापद किया। तदनोपरान्त द्वारिका प्रस्थिति से

लोट कर पाली के परिजनो का जो घटिको स त्रस्त थे अभय किया। और मटपुर (महेवा) को विजय कर डाबियो और मोहिल क्षत्रियो को राज्यच्युत किया। राव सिन्हा न प्रति भट पुडोर पर आक्रमण किया और उमी युद्ध में वह वीरगति को प्राप्त हुआ। उसके सिंहासन पर आस्थान प्रतिष्ठित हुआ। आस्थान के पचात् ब्रह्मराज राज्यपान, काढ़, जलहन, छाडा, तीडा और राव सलखा उत्तराधिकारी हुए। राव मल्लिनाथ ने मल्लिनाथ, जैत्रमल और वीरमदेव तीन पुत्र हुए। मल्लिनाथ ने महवा का पट्ट प्राप्त किया। और जैत्रमल तथा वीरमदेव ने सीवाना तथा खेड प्राप्त को अधिकृत कर वहां का शासन दिया।

राव मल्लिनाथ के जगमाल, भारमल, और रणमल नामक तीन पुत्र हुए। मल्लिनाथ की सतति का महवा पर अधिकार रहने का कारण उनकी महवा शाखा की प्रसिद्धि हुई। राव मल्लिनाथ के समय में भाडगनेर का शासक जोहिया दल्ला परिग्रह सहित मल्लिनाथ की छत्रछाया में आ रहा और राव मल्लिनाथ को उपयान स्वरूप स्वरूप के दाल दिए। दल्ला को घनाढय जान जगमाल ने कैतवतापूर्वक उम मारकर द्रव्य हरण का आयोजन किया। किंतु छलाभास हा जान से दल्ला मल्लिनाथ का आश्रय त्याग कर उसके भ्राता राववीरमदेव के पास खेड जा रहा और वीरमदेव की प्रतिउपकार में प्रसिद्धि प्राप्त अपनी समाधि नामक श्रेष्ठ घोड़ी में दी। इस पर कुमार जगमाल राव वीरमदेव पर क्रुद्ध हो उठा और वह घोड़ी उस समर्पित करने की धमकी दी। राव वीरमदेव पारिवारिक कलह से भीत होकर अपने पुत्र देवराज गागा देव, जयसिंह, विजयराज और अपनी पत्नी चावडी सहित खेड का त्यागकर सानावा ग्राम में आया और वहां के शासक राणगदव की राजकुमारी के साथ विवाह किया। तदन्तर पटरानी चावडी और चारो राज पुत्रो को मे नावा से रखकर स्वयं नवप्रणीता रानी सहित दल्ला जोहिया के पास जागलू प्रदेश में चला गया। जोहियो ने अपने पुत्र उपकार का स्मरण कर राववीरमदेव का हार्दिक श्वागत किया और जागलू का आधा भाग उस को दिया। जागलू में वीरमदेव के पुत्र चुण्डा का जन्म हुआ। वीरमदेव ने जोहियो के उपकार का विस्मरण कर पुत्र जमोत्सव के ब्याज से उनके कुलपूज्य वरुण फरास का उमूलन किया तथा गुरुर के लोहू को बन्धो पर छिटक कर उनकी अवमानना का आग्रह काय किया। और दल्ला के दामाद का बंध कर उसके शासित ग्रामो पर आधिपत्य कर लिया। इस अनयता से क्रुपित होकर दल्ला के अवरोध करने पर श्री राव वीरमदेव पर आक्रमण कर उस मार डाला। तब राव वीरमदेव की पत्नी मागलिमाणी अपने शिशु पुत्र चुण्डा सहित वहां से निकल कर कालाऊ ग्राम में प्रच्छन्न रूप में रहने लगी। भाला वारहठ न उनकी महायता की।

चुण्डा का व्यस्क होने पर ई दा क्षत्रिया न उसके साथ अपनी कन्या का विवाह किया। और सतिश सहायता रखर राजा हमीर पट्टिहार को परास्त कर मडौर पर चुण्डा को अधिष्ठित किया। राव चुण्डा के चतुर्दश पुत्र हुए जिनमें रणमल ने अपने अग्रज गनुगाल और उसके पुत्र नबद का सहार कर मडौर पर अधिकार कर लिया।

उमने सिपसवाटी के सिधलो को पराजित कर उनके ३६० ग्रामों सहित मौजूद भाग कर  
 अपना स्वा स्यागित किया। राव रणमन क घाघराज कर्णसिंह (चम्पतराय-काधिल  
 और जोधराज प्रभात प्रतापी २८ पुत्र हुए। जोधराज (जोध) न घाघराज-से गुरिसिंह  
 छोनकर मडौर पर अधिकार कर लिया और सवत् १५१५ वि० मे अपने नाम पर  
 जाधपुर नगर का निर्माण कर उम राजधानी का गौरव प्रदान किया।

राव जाधा के सूरजमन उदयरान दूरा कमसिंह रतनसिंह विक्रमराज  
 (बोधा), बीदा घादि द्वादश पराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुए। राव सूरजमल (1) के बाधा  
 और उसके गंगादेन (गंगा) तथा गगदेव क राव मानदेव न जन्म लिया। राव मानदेव  
 का मिहामन राजा चन्द्रमन न प्राप्त किया। किन्तु राजा चन्द्रमन के मनुज उर्मसिंह ने  
 बाङ्गाह भवबर की मीय शक्ति प्राप्त कर चन्द्रमन से जोधपुर छोन लिया। किन्तु राजा  
 चन्द्रमन अपनी स्वतंत्र प्रकृति के कारण धाजीवन गाही हूकूमत का विरोधी बना  
 रहा।

राजा चन्द्रमन के पुत्र उग्रमन न मदस (मादलिया) भील को मारकर भिनाय  
 को अधिकृत किया। उग्रमन का उत्तराधिकार राव कमसन न ग्रहण किया। कमसन के  
 माहस और वीरता की शारूयाधिकारों से प्रभावित होकर बाङ्गाह न उसे तिली  
 ग्रामनित किया और ग्राम दरवार का आयोजन कर माहिमरातिब के सम्मान न वर्द्धित  
 किया और बलस विजय के लिए विदा किया। बलस न ग्राममन पर वादशाह न ह्वाथी,  
 घाडा पला और महित राजा की पदवी प्रदान कर कुण्डाना विजय पर भेजा। राजा  
 कमसन न तोपों का धरा टालकर कुण्डाना पर आक्रमण किया। उक्त युद्ध मे राजा  
 कमसन का मनुज घाघराज सिरच्छेदन के बाद भी शत्रुओं पर खड्गाघात करता हुआ  
 वार गति को प्राप्त हुआ। अतः शत्रुओं का ध्वसन कर विजय प्राप्त की। तब वादशाह  
 न राजा कमसन के पुत्र को कुण्डाना का मैनिब अधिकारी नियत किया। उदयभानु ने  
 राजा छत्रपति शिवा को अधिकारच्युत कर वहा शाही व्यवस्था स्थापित की और फिर  
 स्वदा क लिए विदा प्राप्त की। उमने पश्चात् क्रमशः केशरीसिंह जगतसिंह बन्ससिंह  
 सालिसिंह दलेलसिंह उदयभानु (द्वितीय) और सूरजभानु भिनाय क अधिकारी बन।  
 राजा सूरजभानु क चरित्रनायक बलवतसिंह बरूतावरसिंह और जोरावरसिंह तीन पुत्र  
 उत्प न हुए। राजा बलवतसिंह का विक्रमाल १८७३ मे जन्म हुआ।

तदनन्तर प्रथकार ने राजा बलवतसिंह के जन्मग्रहो का वणन किया है।  
 जन्मकुण्डली क वणन क कवि ने अपने ज्योतिष विद्या के ज्ञान का प्रगटन किया है।  
 चरित्रनायक क जन्मग्रहण के समय मंगल काय का उल्लेख करते हुए राजस्थान म पुत्र  
 जन्मोत्सव पर सम्पन्न किए जाने वाले रिवाज घाल बजाता, मधु और स्वण शिशु के  
 मुख मे देता नालच्छेदन, विभो को दान, यज्ञादि मनुष्यदान आदि का चित्रण किया है।  
 इस प्रकार सांस्कृतिक अध्ययन के लिए इसमे पर्याप्त सामग्री है।

यहाँ कवि ने बलवन्तसिंह क द्वय लघु भ्राताओं का आयुक्रम भी प्रकट किया



है। बलवन्तसिंह को पितृमुक्त नहीं मिला। वि० श० १८८१ में उनके पिता राजा मूरजभानु कालधम को प्राप्त हुए और उनको भ्रिगाय का सिंहासन मिला। यह विद्वद् जनों की मसद से मन्त्रणा कर राज्य मघालन करने लगे। इसमें अधिम बत्तात म बवि ने वेदमत, जनमत और बौद्धमत का विवेचन किया है। जानकाण्ड त भूमिहित वणन म बवि न योगमामाना, उपासना, भक्ति धानि का प्रालेखन किया है।

धायधम का धास्थान करत हुए बवि न धारो वण उनके विहितवम, चारों धाधमो तथा राजधम पर अधिक विस्तार क साथ प्रकाश डाला है। राजधम म काग, सना मत्रीपरिषद, उनके गुण भेद और कत्तव्यों, ानु मित्र दण्डनीति का वणन किया है। सेना मे गज भदव, रथ, पदाति सना, गजास्यो की जातियाँ, उनक सामुद्रिक धुभा धुभ लक्षण और उन लक्षणों के गुणदाय बतलाये गय हैं।

राजा बलवन्तसिंह की दिनचर्या म सध्या बदन समद ास्राध्ययन, ास्य सघालन भद्रवागेहण, प्रातेट और सगीत नृत्य के आयोजनो पर भी विचार किया गया है।

पत्रह वष की आयु म बलवन्तसिंह द्वारा पितृध्याद करने के लुलित गयापुरी की यात्रा तथा मधुरा, वन्दावन, गोकुल और गिरिराज यात्रा सम्पन्न कर लौटने का प्रालेखन है। कथित वय म राजा बलव तसिंह का कछवाहो की खगारोत शाखा क पचवर सस्थान के स्वामी सुमेरसिंह की राजकुमारी धमरकुवरि क साथ विवाह करने का भी उल्लेख ग्रन्थ म पाया जाता है।

सवत् १९८४ मे राजा बलवन्तसिंह के अनुज बन्तावरसिंह का मेवाढ क धनोप ठिकाने के स्वामी राणावत देवीसिंह की कमलावती नामक राजकुमारी से पाणिग्रहण हुआ। उसम छोटे जोरावरसिंह ने दो विवाह किये। प्रथम कछवाहो की राजावत शाखा के भवानीसिंह की कन्या जडावकुवरि और द्वितीय कछवाहा जोरावरसिंह की पुत्री से पाणिग्रहण हुआ।

राजा बलवन्तसिंह ने तेबीस वष की आयु प्राप्त होते ही अपने राज्य मे सूयदेव का मन्दिर निमित्त किया। आपने पिता की स्मृति मे छत्री बनवाई और प्रजा के सौर्य क लिए जलाशयो का निर्माण करवाया। आपने राज्य के प्रत्येक ग्राम म केशवराम भगवान् के मदिरो का निर्माण कर अपने कोश से उनकी सेवा पूजा का प्रबन्ध किया। प्रजा के लिए धर्माय प्याउएँ प्रारम्भ की।

उसी काल मे राजा बलवन्तसिंह के राज्य व्यास प० ब्रजवल्लभ का निधन हो गया और उसकी सहधर्मिणी न पति के शव के साथ आत्मदाह करने का निश्चय किया। उसके पारिवारिक जनो न उसे ऐसा न करने लिए बहुतेरा समझाया पर वह अपने

निश्चय पर अडिग रही। तब यह समस्या राजा बलवर्तसिंह के समक्ष प्रस्तुत की गई। बलवर्तसिंह ने उसके कौटुम्बी जनो द्वारा उसे पुनः अपना सहगमन का निराय त्यागने का प्रयत्न करवाया और शेष जीवन भागवत्भक्ति में व्यतीत करने के जीवनयापन की राज्य द्वारा व्यवस्था करने का आश्वासन दिया। किन्तु वह अपने आग्रह से जब नहीं हटी तब उसे सहगमन हीन की स्वीकृति मिली। यह समाचार जब अजमेर स्थित अग्रज प्रशासक जाज लारेंस को गुप्तचरो से मिला तो वह बहुत ही रुष्ट हुआ और राजा बलवर्तसिंह को तत्परता से अजमेर बुतवाया। वह अपने दलबल सहित जार्ज लारेंस के पास गया और घटना का यथातथ्य वक्तान्त उसे कह सुनाया। रेजीडेण्ट जार्ज लारेंस बलवर्तसिंह की साहस तथा निर्भीकता से स्तब्ध हो गया और उसने उसे दण्डित करने के स्थान पर अपनी मन्त्रणा परिषद् का सदस्य नियुक्त कर सम्मान प्रदान किया।

इस अप्रिय प्रसंग के पश्चात् ही राजा बलवर्तसिंह पर पुनः एक भयकर दुःखद विपत्ति को सहने के लिए उद्यत होना पड़ा। उनके प्रिय अनुज बभतावरसिंह का असामयिक निधन हो गया और उनकी धर्मपत्नी कमलावती ने पति के साथ सहगमन की आकांक्षा की घोषणा की। उस समय अजमेर में कनल सदरलैण्ड रेजीडेण्ट था। सती-प्रथा को कानूनन अर्द्धघोषित किया जा चुका था। राजस्थान के जयपुर, बीकानेर, जोधपुर और उदयपुर प्रमति सभी राज्यों के शासकों से समझौता हो चुका था कि यदि उनके शासित राज्य में कहीं कोई सती हागी तो उस अपराध का दायित्व उन पर होगा। ऐसे विकट संकटकाल में राजा बलवर्तसिंह के स्वयं के घर में ही आ बनी। पहिले तो राजा ने सती की अनेकविध समझाया किन्तु जब वह सहमत न हुई तब उसे दान-पुण्य कर सती हो जाने की स्वीकृति प्रदान की। इस वक्तान्त को श्रवण कर रेजीडेण्ट क्रुद्ध हो उठा। बलवर्तसिंह को अजमेर बुलवाया। किन्तु इस बार भी बलवर्तसिंह के प्रताप, सत्यवक्तव्य और साहस के समक्ष ब्रिटिश सत्ता की मौन ही प्रहण करना पड़ा।

अंत में काव्यकार ने काव्यनायक की धमनिष्ठा, प्रजारजन, वदा यता और यावप्रियता का वर्णन करते हुए ग्रथ का समापन किया है।

यह ग्रथ कवि ने वंश भास्कर के सजन के मध्य समय निकालकर रचा था। यह ग्रथ-निर्माण का स्पष्टीकरण करते हुए कहता है—

### बोहा

मगि सिख नप राम तो, बुल्ल्यो कवि बलवत ।

किय अन्धधन तत्र कह सब पाटव जह सत ॥

रहि भनाय तेरह दिवस, इम कवि बुदिय भाइ ।

इम बलवतविलास, किय, हिय प्रियता हरखाइ ॥

वसन्तभस्कर के बनत विष प्रवसर काटु यात्रि ।  
 विय प्रवध यह मिहिर कवि वाजिक मुहुरन कात्रि ॥

इस प्रकार कवि की प्रथम प्रणयन की उद्घोषणा स्पष्ट है कि राजा बलवत्सिंह की अभिकांक्षा पर इस प्रथम का प्रणयन हुआ था । प्रथम निमाल प्रारम्भ की सूचना में कवि ने सवत् १६१५ की राधाप्रष्टमी व्यक्त की है—

जह शक विक्रम राज की, सर सति नय नुग मान ।  
 तीजी उज्जवल राघ सिधि इति प्रवध उत्थान ॥

बलवद्विलास का सजन राजा बलवत्सिंह की सम्मथना पर हुआ है अतएव कवि ने इसमें राजा बलवत्सिंह के यशस्वी पूर्वजों का सन्निपत्त इतिवत्त मन्निहित कर उनके स्वयं के जीवन के कतिपय उपात्त कार्यों का वर्णन किया है और मध्य-मध्य में कवि ने ज्योतिष, गणित, राजतन्त्र, योगशास्त्र, पाक विज्ञान, धातुबेज, युद्धकला, स्थापत्य कला, नगीन नृत्य और वाद्यबलाद्यो को भी वर्णन में स्थान दिया है । सूयमत्न अनेक भाषाभाषा तथा अनेक विषयों के उद्भूत विद्वान् थे । अतः बलवद्विलास ने अनेक विषयों का वर्णन हुआ है ।

राजा बलवत्सिंह के उदय पर भिनाय में जो जन्मात्मव्य भनाया गया उसका कवि ने कई पृष्ठों में वर्णन किया है । इसमें विदित होता है कि कवि गाम्भीर्य ज्ञान के साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान का भी पूरा सम्मथना था । शिशु के जन्मकाल पर सम्पन्न किये जाने वाले संस्कारों का वर्णन इन वर्णन की साधकता सिद्ध करते हैं—

वज्जिग घाल विमाल भूप बलवत् लेत भय ।  
 मिहिर भाटु महिपाल अधिक मध्यि विधि उत्तम ॥  
 नियति सिद्धि छिदिनाल मधुर् हाटक मुल धरि मुल ।  
 भूमुर मह्यन भोजि सत दिव धनु अमित सुम् ॥

कविजन प्रसन्न सब रीति करि गज ग्रामन पूज प्रथित ।  
 सविधान हवन जप पाठ सह कलित श्राद्ध नादिय कथित ॥

कवि ने इस कृति में राजधर्म पर विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है । वर्णव्यवस्था में धारो वरु उनके कर्तव्य, त्याग्य और परिपालनीय गुणों का शास्त्र-सम्मत बालेखन किया है । विद्याध्ययन समाप्त कर गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने का वर्णन करते हुए कहा है—

इम गुरु गृह पठि धायु का बट चतुष्व वितान् ।  
 गुरु अभीष्ट दे स्वीयगह उपयम निरचहि भाइ ॥

जो असहिष्णुता जननि कुल, स्वक असभोगा सुद्ध ।  
 क्रम सबरा ऐसी कनी, व्याहै पढु सु प्रबुद्ध ॥

राजनीति म साम, दाम, दण्ड और भेद का अतीव महत्त्व व्यक्त किया है । मनुस्मृति याज्ञवल्क्यस्मृति और चाणक्यनीति ग्रंथो मे दण्डनीति पर पुष्कल रूप मे वर्णन मिलता है । सूयमल्ल ने भी दण्डविधान का बलवद्विलाम मे अच्छा विवेचन किया है । जहा भेद से कायसिद्धि न हो वहा दाम का प्रयोग करने का निर्देश मिलता है । राजनीति के कवि ने सोलह भेद अंकित किए हैं—

सिद्धि जोन भेद सन जबहि उपदा प्रयोग जिम ।  
 सोलह विघ नृप सोहु कहत क्रमते अभौष्ट इम ॥  
 देश्य श्राब्द कर द्विरद सप्ति निबसय परसासन ।  
 पुरट कनी पन नारि खानि वेत्तकर भूखन ॥  
 सोलहो भेद प्रति पत्तिजसु अयनाम अनुसार इन ।  
 नहि अय प्रकट जिनके नृपति कछु कहियत सुनहु तिन ॥

अग्रिम पक्तियो म कवि ने दामदण्ड के सोलह भेदो की सक्षिप्त रूप मे व्याख्या की है ।

राजतंत्र का प्रमुखत इस कृति म महाकवि न राज्य के समस्त अगों का स्पशन किया है । राजधम, राजनय कोश, सचिव, मंत्री, सेनानायक दुगपाल, कोशाधिपति, वद्य, प्रतिहार प्रभृति को योग्यता एव दक्षतादि का वर्णन किया है । सेना के सप्त अगो क विवेचन की भाति ही यौद्धिक सकट मे दुगों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला है । दुगों की श्रेणी निर्धारण करते हुए लिखा है—

भूप बलवत दुग नीरमय अद्रिमय अस्ममय ऐम इष्ट कायम बखाने जात ।  
 वनमय मिट्टीमय महमय मत्यमय दारूमय एहि जगती मे जोय जानै जात ॥

अच्छ पहिले द्व इनमे रु पट मध्यके जे मध्यम ओ अतिम का अघम अमाने जात ।  
 अत जल दारु घत तैल नालि गोले आनि दुग विच सचय समस्तन कँ ठाने जात ॥

ऐसे सुदृढ और सग्राम सामग्रो से सज्जित दुगों का स्वामी ही शत्रुघा से अभीत रह सकता है और अवसर प्राप्त होने पर प्रतिवासी देश पर अधिकार करने म सफल होता है—

अग छठो यह दुग इहि, निखिलन सज्जि नरेम ।  
 रहै बलिष्ट हु सो मुररि, दब्बै निकट प्रदेस ॥

इसी पद्धति से कवि ने सना क पशानि गज, पद्व घोर रय घगा का बल्लन  
 किया है। गजादरो की जानियाँ घुमानुभ गामुद्रिक लदाग, स्वभाय रग, घाहृति  
 प्रभाव और गति का उवान किया है। गिभा एणन म अघ्ययन गजास्य गचालन यन  
 याग कम शास्त्राभ्याम और दनिचचर्या को लिया है। गस्त्र मचालन म शम्भो के प्रकार  
 प्रभाव और सचाननत्रिया—“गध्य का बल्लन उपलत्प हाना है। कवि के चरित्रनायक का  
 गिलोल द्वारा निदानेवाजी का एक घनाधरो छत्र म घनलोशन की गिए—

निरयहि निउरी बलवत वसुधापति घो  
 सोदर समेत क्षुरली म सन भ्यात करि ।

कोहल मतीर द दसागुल कपित्व बित्त्व,  
 ब्रमते कितही स्थूल चयन के पात करि ॥

मदूरक मृत्तिका मिलाय गुर गोल गाढ़े  
 सान करि जात बद्रूकन सो बात करि ।

तारी द तराके जत्र स्वस्तिक को फरिप्त  
 मेरिदेन कुजन गिलोशन की घात करि ॥

पूव आधुनिक काल म वाहन के रूप म अश्व का महत्वपूर्ण स्थान था। गानि  
 और युद्धकाल उभय समय वह मानव का अभिन्न साथी माना जाता था। उस पालने  
 के अतिरिक्त सवारी के लिए शिक्षित करने म बहुत श्रम करना पड़ता था। मध्यकालीन  
 योद्धा क लिए तो अश्व का सर्वोपरि महत्व था। शिक्षित करने पर ही घाटा मनुष्य क  
 लिए उपयोगी बन पाता था। राजा बलवतसिंह द्वारा अपनी सवारी के लिए घो को  
 चालें सीखा कर शिक्षित करने का एक घनाधरी छत्र म सुन्दर बल्लन किया गया है।  
 वह चक्री की भाँति वत्तुलाकार घूमने म बड़ा पद था—

हायन छ वार मत्त कायन लुलायन क  
 कधर कठोर ज्यो काटि देत बकरी

अस भवनीस होत वारह बरम बय  
 कासु कुत पट्टिस कृपान कलाप करी ॥

साप्र गत माघ होत निस्सह निदाघ होत  
 अस्वन प्राघ होत वाघ होत बकरी ।

टकरी टराई करा प्राव जाव अस्वन को  
 बीधी सकरी विष चलात जसे चकरी ॥

सवत् १८२६ वि० म राजा बलवतसिंह ने पितृश्राद्ध के लिए मयुरा और गया

तीर्थ की यात्राएँ की थी। उस समय उनके साथ जा सना थी उसका कवि ने मौक्तिकान्त  
 छन्द में धार्जम्बी वरगा किया है। ध्वज पताशामो सं मज्जित गजादबो पर धारुड  
 योजामो का गणा द्यविचित्र सा हश्य उपस्थित करने में मक्षम है। कतिपय पक्तियाँ  
 देनिए—

र्म सरदागम यवन संस्य । नराधिप हृदिय मासं नभस्य ॥  
 कनिष्ठ लघु सिमु रविय निरत । उगार मद्दादरं मध्य उपेत ॥  
 निसाना ध्यानन तमि निधान । बजे सिग् भरे गिको न त्रिघात ॥  
 नकीजन सकुल मन्त्रि ललकव । फन्त्रिय पीलन पै बहर्गक ॥  
 नभावत भूतैल हर्किंय नांग । मच्यो रज उबर अबर माग ॥  
 मंतगज यो गिरि जगम मान । त्रिप जिहू निभर क निभदान ॥  
 ठमक्रिय घट प्रतिध्वनि ठानि । ठमक्रिय त्रविय बाबिय बानि ॥  
 सनक्रिय प्रोथ तुरगन आस । रनक्रिय पवत्तर अकत्तर बाम ॥  
 चले ह्य भूपत चित्रित चान । तच पन नागि नस नखराल ॥  
 कली लघु बेवत मम्मिमत कान । मुरे बर कधर कक्कुट मान ॥

इस प्रकार कवि न गया यात्रा अजमर यात्रा और आसुट वरगन में अनक  
 म्यलो पर अपना वरगन-वीशल दगाया है। आसुट-वरगन में धुद्र जीवो का न मारन का  
 उल्लस किया है। मृगराज म सिंह वराह और चित्रनाटि का वरण देखिए—

मृगराज बिबिध भावत मलगि । सद्गहि नूप मायक तुपक सगि ॥

✓

×

×

बहु मृगराज गत्रल खडग च वराह । वधे स्वता आरूढ बाह ॥

बलवद्विनास म कवि न भिनाय क राजव्यास ब्रजवल्लभ और राजा बलवान  
 मह के कनिष्ठ भ्राता बस्तावरसिंह की घमपरती के सती होने का वरण किया है।  
 बस्तावरसिंह का सवत् १९१४ की समाप्ति में निघन हुआ था।

अधिप करत बलवत डम, राज्य धर्म कुन रीति ।  
 वेद इन्दु निधि भू बरस, विक्रम सक् गय बीति ॥  
 नूप मध्यम सोदर निपुन, बक्षतावर बर बीर ।  
 बपु तह छोरघो नियति बस, सात्र्ये नर गण मार ॥

गानो ही सतियों का होना राजा बलवन्तसिंह के लिए भयंकर घमपात तुल्य था। क्योंकि ब्रिटिश सरकार सन् १९०२ के ग्राम पाम ही सती प्रथा के प्रतिरोध के लिए रियासतों से समझौता कर चुकी थी। पन्स्वरूप कोटा में सतियों का नहीं हान दिया था। वही यह प्रथा लाड हॉस्टिगज के समय में ही बन्द की जा चुकी थी, किन्तु राजस्थान में प्रचलन बन्द नहीं हुआ था। सन् १९०२ वि० में महाराणा स्वरूपसिंह के नाम लिखे घस वी एव स० १९०४ वि० में उन महाराणा को लिखे कनल सर हनरी लार्से के राजकीय पत्रों में सतीप्रथा के प्रतिरोध के लिए पूर्ण निषेध पर बत दिया गया है। सतीप्रथा का अन्वेष घापित करने के लिए बीकानेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा और जोधपुर के ग्रासको के नाम लिखित कनल रिजिस्ट्रार जाज लार्से, जाज मॅट पट्रिक मजर टलर और विलियम फ्रडरिक के पत्रों में अनेक उल्लेख हुआ है। ऐसी स्थिति में अजमेर के सनिंकट और रजीडेन्ट के सानिध्य में सती हो जाना महान् विपत्तिकारी माना गया और दोनों ही सतिया के लिए दो बार राजा बलवन्तसिंह को अजमेर जाकर अपराध स्वीकारकरना पड़ा। राजा उनसे तमिह द्वारा उल्लिखित घटनामा पर प्रदर्शित निर्भीकता, धमनिच्छा साहस और मत्स्यभाषित का सूयमल्ल न उत्तम रीति से तथ्यात्मक धरण किया है। बलवन्तसिंह के महोदर बरुतावरसिंह की घमपत्नी कमलादेवी का नाम कवि ने यथास्तवन किया है। बलवन्तसिंह और कमलादेवी का वार्तालाप भी सुन्दर बन पड़ा है। कमलावती के धरण का एक मनहर छंद उद्धृत है—

स्वामि बरतावर को स्वग जात साचे मन

स्वात सग ससृति की नेक बासना न ली ।

अचल जो जोरघो सो न तोरधा गया

जोखा जित्ती रडा ग्हे घूरि तिनके मुखभंगी भली ॥

पीहर ह सासरे का पावन करन छाद

व्याम विधुन के विमान की अचली ।

अस्वमेध अघ्वर उदक उपमन उठि

देति डग डिगर चिता पें कमला चली ॥

कवि सूयमल्ल सतीप्रथा का अनुमोदक था। कमलावती के प्रारम्भ में रचित घनासरी छन्दों में उसने बध्म्यजीवन बिताने को सहमत नारियों पर तीखा बटाश बरतते हुए कहा है—

रवि रविमल्ल नाह चाह सा उछाह आनि,

स्वच्छ कुल माध्विन मिल न ऐसी लीनो लाह ।

नाक लोक नारिन में कित्ती कमनीय कीनो

चूरी तज तिनकी गरुरी गजि दीनी दाह ॥

घासुरी सुरी र नारी नागी किनरी,  
लोकाकुल नारि न रिभाई गई देवन की दरगाह ।

सोता दयी प्राणीप धरू धति उतारघा लोन,  
उरमा लगाइ अनसूया कन्नो बाहू बाहू ॥

बलवद्विलास में सूर्यमल्ल ने पद्य के साथ-साथ प्रारम्भ में गद्य का भी प्रयोग किया परन्तु वह भास्कर के गद्य की तुलना में बलवद्विलास के गद्य में प्रपञ्चाकृत प्रोज्ज्वलित्य का अभाव है । उदाहरण के लिए बलवद्विलास के गद्य की कुछ 'पक्तियाँ' उद्धृत हैं— जोईयो तो जीव रे साटे समाधि जिगडी घोडी देर पुरी ही प्रत्युपकार करि—घ्राप रो लीषो उद्वार दे घ्राया तथापि वीरमदेव घ्रायना वडो तरह बघाएणी करि घ्राप रा घ्राघा घ्राम दे र पाणि नू उएरा तबोल रो पालो करि प्रस्वेद रे ठाम रहिर रासता समस्ती रो स्वामि करि राखण दुरा । जठ ही वीरमदेव रे पुत्र चूडो हूयो जि कणारा उच्छन म स्वामी रो अनुमन पाइ साथ रा रजपूत उणा रा पीरा रा फराम बढाइ बाराहा रो पन मइजना र माये रालि दला रा जामाता नू मारि उण रा बाटा रा दोइ दुग गावि धाइ भाई प्रमुख दुगाँ रा मालिना नू भाजि महा अधम रो पन चाखण दुका ।

यद्यपि महाकवि सूर्यमल्ल ने इस काव्य में उदारमना क्षत्रियोचित गुणनिधि राजा बलवन्तसिंह की सुकीर्ति का बहुविध गान किया है तथापि वह अपने आश्रयदाता सूरीनरेरा रामसिंह हाडा की कृपा एवं स्नेह का स्मरण कर [कृतज्ञता—प्रकाश करना नहीं भूला है । राजा बलवन्तसिंह द्वारा देवालय तथा मदिरो के निर्माण और हाथी, घोड़े, ऊँट गायें भूमि और द्रव्य—दान का वर्णन कर रामसिंह के प्रति निवेदन किया है—

हडुवतिम पति हडुवीर दुदिय बसुधावर ।

रामसिंह अधिराज राव राजेद्र धमधर ॥

सब गुन स्वभति समेटि अहो रविखम मेमन अर ।

बदन मस्तक वाक्य सोधि जो हुव प्रणहि सब ॥

जनु कण जुधिष्टर नल जनक इक बनि बुदिय अवसरन ।

रविमल नाथ अणव गहिर सोहु मुदित बलवत सन ॥

बलवद्विलास का मजन जसा कि पहले संकेत किया गया है वंश भास्कर महाकाव्य की रचना के मध्य अक्षर निबाल कर किया गया है । अतः बलवद्विलास की भाषा और शैली भी वंशभास्कर का अक्षर अनुसरण करती हुई प्रकट होती है । महाकवि सूर्यमल्ल सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, पाली, ब्रज और डिगल भाषा के विदग्ध कवि, विद्वान एवं इतिहासवेत्ता थे । बलवद्विलास में ब्रज, डिगल, सस्कृत, अपभ्रंश और प्राकृत





## अद्वितीय बाल कृति रामरजाट

श्रीनन्दन चतुर्वेदी

कविगजा सूयमल्लजी की प्रथम कृति रामरजाट स्वयं कविराजा की प्रथम काव्य कृति ही नहीं वरन राजस्थानी साहित्य की प्रथम बाल कृति है। कृति के नाम पर तो रचनाएँ कितनी ही मिल सकती हैं किन्तु एक दसवर्षीय कवि की काव्य कृति में प्रवधात्मकता के साथ जो गल्पगत प्रौढत्व यहाँ लक्षित है वह इस आयु के अन्य कवि की कृति में दुर्लभ है। अतः इस राजस्थानी साहित्य की प्रथम बाल कृति कहना अनुचित न होगा। राजस्थानी में आगे बढ़ कर हिन्दी और विश्व की अन्य भाषाओं का खगोला जाए तो भी कदाचित ही रामरजाट जैसी अन्य बाल कृति उपलब्ध हो सके।

ग्रंथ की समाप्ति पर श्री सूयमल्लजी ने एक दोहा दिया है—

भवतु गरम अठार सौ, माल विमासी मत ।

रवि वसत पाँच रहति, गिरा सपूरण ग्रथ ॥

उपरोक्त आधार पर रामरजाट का रचना काल सवत् १८८२ विक्रमी की वसन पंचमी (समापन तिथि) है।

सूयमल्लजी का जन्म काल 'वीरकाव्य पृष्ठ ७६, कवि रत्नमाला' पृष्ठ ११४, 'राजस्थानी साहित्य की रूपरेखा' पृष्ठ १४४ 'दिगल में वीर रस पृष्ठ ६८ और वीर सतमई की भूमिका' पृष्ठ १० के आधार पर सवत् १८७२ विक्रमी है। इस प्रकार 'रामरजाट' की रचना पूरी होने पर सूयमल्लजी की आयु १० वर्ष ठहरती है।

रामरजाट के अंत में यह भी उल्लेख मिलता है कि इस की रचना तत्कालीन



यद्यपि गिल्प का कोई उल्लेखनीय चमत्कार रामरजाट में नहीं है तथापि दम वर्णों के विसृष्टि से जो अंधकार की जा सक उतने वही अधिक उतरप प्राप्त होना ही इस ग्रंथ का चमत्कार है ।

रामरजाट में प्रवर्षात्मकता है किन्तु कोई कहानी नहीं है । क्रम म एक व बान् एक प्रसंग चरते जात हैं । भाव्यही छत्र म बूंदी के राज परिवार की गोपनीय परम्परा का चारण शैली में यथोक्त किया गया है । वही अन्वय का प्रसंग है, वहीं श्रीरामजैव का, वही दारा का और वही मरहटा हुल्लर के प्राये हाडाराव का मुख्य तानन का । प्रथ की उक्त हस्तलिखित प्रति के चौथे पृष्ठ में कथा प्रसंग स्पष्ट में चलती है । यहाँ से महाराज राजा रामसिंहजी के वचन का अर्थ प्रारंभ हुआ है । वे वही उमरावों के साथ विहार करते और वही बोट-रुग्णों पर तोपें चढ़ाते हैं । अभी गुल्ले म उदत पत्नी का मार गिरात है । किन्तु अन्वय प्राप्त होने पर रामसिंहजी का मगई-सबध धावाई किन्तुगाम (मन्त्री) द्वारा जाधपुर के राजा मान की कथा में तय करवाया जाता है । मावे का अर्थ निम्न प्रकार किया गया है—

युधि फागुण नोमी विहद मड माया ह्म मेल,  
किन्तुगाम ऊद्धव किया स्वाम धर्म सुचेन ।

तदुपरात विवाह के लिए बारात प्रस्थान करती है । बारात के तेरह स्थानों पर रुकन का उल्लेख है— पगारां देवली, केकडी, सलाह राममरधाम, श्रीनगर कावडिया स्थान, पुष्कर, ब्राह्मणयावाम, मेडता बोरुदा, पीपाड और बीमलसुत नगर । मूयमल्लजी स्वयं इस बारात के साथ थे । मूयमानिसूदम प्रसंग भी उनकी दृष्टि में छूट नहीं पाए । बारातियों के हाथ मुडा घोन' तक का उहोने अर्थ किया है—

अब चढे नरन जीड मु प्राय, घर जण हाय-मुडा धुपाय चत्र बुदी पडवा के  
नि बारात न उसी रास्ते बूंदी के लिए प्रस्थान किया । बूंदी पहुँचते ही भुम्भुनू का दूत विवाह-सबध लिए आ पहुँचा । पर्याप्त इनकार के बाद भी दूत का प्राग्रह अटल रहा । सबध स्वीकृत हुआ और फिर बारात जाधपुर होती हुई भुम्भुनू पहुँची ।

इसके १० दिन बाद बारात वापसी है । फिर वर्षा अर्थ, तीज त्योहार में रामसिंहजी के अर्थ का अर्थ नायिका-नक्ष-गिह हय गज अर्थ हैं । नवरात्रा की पूजा अर्थों के अर्थों का अर्थ रामलीला अर्थ है ।

दीपावली के बाद पूर्णिमा तक बूंदी में रहकर रामसिंहजी गिहकार के लिए प्रस्थान करते हैं, इसका अर्थ एक दोहें में है—

दीपमाल कातिक दरस हीडा वगमि हजूर,  
पछे गिहकार पधारिया, पूयू उनरया पूर ।

पहले दबलाए के डेरे पर शिकार का अर्थ है और फिर पीप की पाचें पर शिकार का । शिकार में बदर, स्यार, गिह, साबर, चीतल आदि मारन का अर्थ है । गणपति दर्शन, जीमनार गोठ के पक्वान, पुलाव, सरदारो का आफू चढाना, भग पीना आदि तक के उल्लेख इस प्रसंग में है ।

रामरजाट मे भावपक्ष कम, कला पक्ष, अधिक उभर कर सामने धाया है। यद्यपि रामचंद्र, मोतीराम, हनुमान, विमली, पद्मिनी, दूधारी घाटि छत्र मिलते हैं। भास्करा, पद्मिनी, दूधारी छत्र और 'दूहा' का प्रयोग विशेष रूप से मिलता है। भास्करा छत्र में एक वरान इष्टव्य है—

बंदी गढ़ बर, रामण छत्र घर राव ।

भग छत्र ऊपर मुरराज जेम सुभार ॥

दरम—चित्रण में कवि को पर्याप्त कुशलता प्राप्त है—

दिन गहा पाछली घड़ी दोष,

सत्र जान ऊतर जाट सोय ।

श्रीर—

भेरी, मृदंग धनक नाति सुषरी र ढाल तबूर तानि ।

अलगाजा सहनाई अपार करनाल घणो, बाजे भवार ॥

दूहा बेश में सज राममिहजी का वरान इष्टव्य है—

सजि गयद पूठि चढियो सुमाज, रामण मभरी बीर राज ।

धिर मुकुट बांधि बेनरयो साज, वरिण सीस सहरा दुति बिराज ॥

उर जलज हीर माला अपार, मोतीर बडा मुबरण मुडार ।

दिग दाइ तरफ चम्बर दुलत, मदमत मतगत भलमलन्त ॥

विवाहात्सव में जुडा समाज कवि की कल्पना का वहाँ से वहाँ ले जाता है। उपमा श्रीर रूपक अलवारो का यहाँ प्रयाग हुआ है—

जोघाण जनकपुर जेमजाण,

बूदी सु भयो"या ज्यु बखाण ।

रामण बीद सम रामचद्र,

मिधिलेस भान मोजा समद्र ॥

मत्री सुमत्र भूत किसन राम,

सारणा काज कृत धरम स्याम ।

रामरजाट वस्तुतः वरानात्मक काव्य ग्रंथ है। मारवाड का स्थानीय रंग (लोकल कलर) भी बाल कवि की दृष्टि से छिपा न रह पाया। यदि ऊँट का उल्लेख न आता तो क्या मारवाड-रंग न होता। देखिए—

मिरपाव कडा, मोती समाज गजराज ऊँटडा करत गाज

हमर अनेक दीधा हुताय, मिरपेच श्रीर गहणा सहास ।

राजा न विवाह के दाद इक्कीस दिन तक त्याग नेम क्या बाँटा इद्र के मसान वर्षा की कभी लगादी—

नरनाथ बाटियो त्याग नेम, इक्कीस दिवस भद्र इद्र जेम ।

कवि की दृष्टि से सूक्ष्मातिसूक्ष्म वायु व्यापार भी नहीं बच पाता—

चक्कमक पयरी भाङ क सलगाया लगर

तथा—

बिद्वामराय धाफू चढाय, गलियार भाग दुणा कराय !

रामरजाट का सर्वाधिक महत्वपूर्ण अंश है— 'प्रवृत्ति चित्रण' । तीजतयोहार के भाषण में बूंदी की छटा दशनीय है—

इम उद्यव तीज प्रारभ किया, भव बीज चमकत राह मिहूँ,  
भन मगल धोर भ्रमगल भौकत, मार कोहाकत राति दिहूँ ।  
चलि वाय प्रचड उदड धूँ दिसि, वादल जुस्य भवासभ्रमे,  
विसनस मुभाव उछाव बघोतर, राय भसीविधि ताज रमे ।

वर्षा बगन में कवि ने कितने ही छंद रच दिए हैं । उसकी लेखनी रचना ही नहीं चाहती जस—

प्रति नीर प्रवाह चलत उतावल गाजत खोह जिता गिर म

अधियार निसा बणि सावण प्रावण मद समागम राह मिलै ।  
जल लहर छोल भ्रवाल जमी पर, पोत गमी परजाणी प्रलै ।  
पहरात पटा, अहरात अखडित, खडित भू पहरात खम ।

नारिया सोलह शृंगार कर निकल रही है—

भालह सिनगार सजि अनुसाऽ अधिक अपार उद्धार ।  
कीर चप कज्जल प्रति जिहि लज्जल उयो दुति विज्जवल सुभवार ।

रामरजाट में केवल जड़ प्रवृत्ति का ही नहीं मानव प्रकृति का चित्रण भी दशनीय है । शृंगार के प्रति नारी का सम्मान, नारियों का झुंड में 'इकट्ठे' निकलना, मट्ठे पग' घर घर कर चलना, बाजार में प्रति भीड़ देख गलियों का माग से निकल जाना, महलियों का कुंड पर जाना इकट्ठा होना आदि इसी के उदाहरण हैं—

निकसी बहु नारिय, सहज सगारिय, नागन प्यारिय सहज सर्वे,  
मिलि भुड इकट्ठे, बनि बनि लट्ठे धरि पग मट्ठे, तुरत तवै ।  
प्रति भीड बाजार, परि अनपार, गला मभार निकसि गई,  
सय मिमटि सहैली, कुण्ड अकैली, जहाँ सब भेली, जाई गई ॥

तीज की सवारी में घोड़े पर सवार रामसिंहजी वर्षा में भीग जाते हैं । उनका उत्साह दशनीय है । वर्षा की झड़ी में वस्त्रों के रंग बह चले हैं फिर भी वे तीज में रमे हैं—

उण धार राम चडियो उदड, वानत वीर यो रमे प्रचड ।  
भीजता रग, चुकता भ्रमग, रत हरित केसर्या वहत रग ।

रामो अतवेत्यो महाराज मत्र किया वेसरयां गरव माज ।  
 नाचतो यको घज राज नूर हाथ म लिया भातो हजूर ।  
 इण रीति मदन मूरति उदार, धारा रग बहुतो नीर धार ।  
 इम हुप्रो महल दावन अमग नाचत मन्हा वोहा राग रग ।

तीज त्योहार के अवसर हेतु हाथियो को ले जाना नहलाना पीछना, जगाली और  
 बनाती रगों स चित्रित करना आदि दृष्टव्य है । हाथियो का वरण कितना प्रभावशाली  
 है—

सनीसर गहुर केत समान प्रभागिर कज्जल क परिमाण ।  
 इमा गजर, ज दराज अमग, धम नभ चाचर जेग सुवग ।  
 कढै मद भट्टिय जम कडाव भर णिम ताइ पटा भरणाव ।  
 अमै जिण ममर डबर भोड न आवत धावत माहिन नोड ।

इसके बाद रगो और साज-सामान मे सजाए गए हाथियो का चित्रण बड़ा मजीब है—

जगाल रगालर लाज दरज्ज बनात म ढकिय भून गरज्ज  
 सगीसर मडिय कु भ स्थान वैध गल भन्नर नाद विधान ।

हाथियो का यह वरण मोतीदार छत्र मे किया गया है । इस प्रकार की तीज सवारी मे  
 विष्णुजी के सुत श्री रामसिंहजी कूड पर पहुँचते हैं । कवि उह कूड पर पहुँचा कर  
 ही नहीं रुक जाता । वहाँ की चतुर्भुज छटा का भी चित्रण करता है—

चो तरफा प्रमुदा चतुर लड हीना तटकाय,  
 हीद अपछरि ज्यू हरखि, विरा खिए भासा साय ।

वर्षा के बाद शरद ऋतु आरंभ नवरत्न प्रारंभ हुए

काव १ ऋतु परिवर्तन के साथ छद बदल लिया । शैलीगत परिवर्तन भी दृष्ट-  
 है । मुजगी छद मे कवि लिखता है—

बरखा गई बीति आई सरह,  
 हुमा दुदमी साज नीमाण नह ।  
 करे पूजन नो तिन देवि केरो,  
 धुर नह नीसाण बबी धनेरो ।

इसी समय चहुवाण (महाराजराजा) सूरि माताजी के यहां आकर रक्त  
 शतिका के भाग बकने मैस आदि का बलिदान करते है । इस प्रसंग मे ममे के बलिदान  
 का प्रसंग बड़ा चित्रापम है—

मसो तीजो भली इहाँ हाजिर जद मायो,  
 ऊँली ऋड भावला, दूत जम सो दरसायो  
 धजबड रामे घणी भाति पटकी बध ऊवर,  
 पायो कटि धर मोहि जार खटकी जारावर

कर जोड़ि आप पूजन कर, भगति प्रेममय भाव सू,  
 प्रति हुई प्रसन उए वार में, रक्त दतिका राव सू ।

उल्लेखनीय है कि वीर सतसई के सपादक ग्रंथ, सबंधी कहेयालाल सहल, पतराम गौड और ईश्वरदान आशिया ने उपरोक्त उद्धरण को महाराज राजा रामसिंहजी द्वारा विजयादशमी के दिन खेला गई शिकार का उदाहरण बताते हुए वीर सतसई के प्रथम संस्करण की भूमिका में उद्धृत किया है। उन्होंने बिना किसी किंतु परतु क स्थापना करती कि 'दस वष की उम्र में रामरजाट ग्रंथ बनाया जिसमें बूदी क रावराजा रामसिंहजी के शिकार और दौरे का वणन है (वीर सतसई प्रथम संस्करण की भूमिका, पृष्ठ २६)। उन्होंने फिर लिखा कि रावराजा रामसिंहजी ने विजयादशमी के दिन जो शिकार खेला था, उसका लेकर यह ग्रंथ लिखा गया है। (वीर सतसई की भूमिका, वही संस्करण, पृष्ठ ६८)।

असलियत यह है कि रावराजा रामसिंहजी दीपावली की हीडें बगस' कर उसक पडह दिन बाद पूरिमा कर उसके पीछे अर्थात् विजयादशमी के कम से कम बीस दिन बाद शिकार के लिए गए ।

आश्चर्य है कि इतने व्यापक शिल्प और काव्य सौंदर्य समन्वित ग्रंथ को बिना पढ़े उन विद्वानों ने मात्र 'शिकार और दौरे' का ग्रंथ धारित कर पूरी तरह महत्वहीन बता दिया। उह अवश्य रामरजाट की यही प्रति हाथ लगी होगी जो बिना सिर खपाए पढ़ी भी नहीं जा सकती थी। जल्दी में जो कुछ उनके पल्ले पडा उसकी गहराई में न जाकर उहान मानस बना लिया कि यह शिकार और दौरे का ग्रंथ है फिर रामसिंहजी को विजयादशमी के दिन ही शिकार खिलादी और रक्तदतिका के आगे अष्टमी के दिन किए गए अंसे के बलिदान को शिकार का उदाहरण बताकर उद्धृत कर दिया ।

सच्चाई यह है कि रामरजाट बाल कवि की रचना हाकर भी उच्चकोटि की साहित्यिक कृति है ।

नवरात्र के पश्चात् विजयादशमी का पव आता है। यहाँ रामलीला वणन में कवि की कला चरम निखार पर दृष्टिगोचर होती है। रामलीला का बडा विशद वणन है जो बूदी में उस जमाने में हुआ करता होगा ।

रामसिंहजी की सवारी उतरती है। विरधीचद नाहरा को दूत बना कर रावण का मनाने भेजा जाता है। दूत रावण को समझाता है—

दस सीस दूत कहियो जदन, भगति भाव प्रति भेस सू,  
 जानकी देरि सब तजि जिनो, प्राणि मिलो अवधेस सू ।

रावण का उत्तर दृष्टव्य है कि ब्रह्मा और ब्रह्मपति उनके यहाँ वेद वांचत हैं। दसो दिग्पाल सेवा में रहते हैं। किन्नर और गंधव सगीन उच्चारते हैं, नारद सदा उसका काय पूरा करते हैं, वह तो देवराज को भी शरण देने वाला है। बीस बिस्वा तलवारा के भटके भेलेगे। रावण राम से नहीं मिलेगा ।



ब्रह्मा अरु ब्रह्मस्पति बेमा मा आगल बाँच ।  
 दस ही भड दिग्पाल सत् सेवा मुक्क माँच ।  
 किन्नर गधव कित्ता इता सगीत उचार  
 नारद घावै नित्त सदा कारज मुक्क गारै ।  
 सुरराज सदा राखू गरण, घाप रूँ प्रतिमान मू ।  
 भूट खगा बीस विसवा भलै, मिने न रावण राम मू ।

दूत और रावण की नौकझोक लम्बी चली है फिर युद्ध बरण है जिमम हमारा बाल  
 कवि भूल जाता है कि वह रामलीला का बरण कर रहा है । वह प्रमन युद्ध का चित्रण  
 करने लगता है—

सिर तूटै राकस लड सूर, घडफटै बाणा धाक घूर  
 नाचत कमध अनेक नाच, अनेक घ्राछट खडग घ्राच ।

वीभत्स रस का चित्रण दृष्टव्य है—

गहलत गद भपटत घ्रीघ, पत्र घरि भोगणि थोण पीध  
 घड तडफै धरती पत्र धार, माया प्रति जान मार मार,  
 श्रोयण चली मरित्ता मरूप माचिमा कीच पल रम रूप

कवि न धरती पर प घड तडफा दिए कबध नचा दिए शोणित की मरिता ब्रह्मा  
 कीचड कर निया— जम सक्चा युद्ध हा रहा हो । इद्रजीत म भी उमन ऐमा ही युद्ध  
 करवाया है—

घरा रूड धाव पडी मुड पाव  
 बकै बेक बीर, तध त न तौर,  
 मही कीच मरुचें धिती पाव लुचुचें ।

राम रावण युद्ध म विशेष दृष्टव्य है बाल कवि का भालापन । उमन युद्ध क रावण को  
 जसा देखा वसा लिख दिया । वह पात्र जो रावण की भूमिका मे रहा लडत समय  
 पृथ्वी पर पीक धूक रहा था और पान चबो रहा था । हो सकता है उमन तबाल का  
 पान साया हो और उस बार बार पीक धूकनी पड रही हो—

घका धूमो धाक धीक, भटवकाँ उडाँला भीक,  
 प्रथी पै नाचतो पीक चावता तबाल ।  
 रूडाडा करतो राड बीस हाथ वात्र राड  
 फका मार मूडा फाड चरुव किया घोल ।

घाया रामचद्र घोड जुषा कर हाथ जोड  
 दीत्या कर तीडि दीडि खचता बुवाण ।

रावण की चेष्टाओं का यहाँ कितना सजीव चित्रण हुआ है। 'दाँट्या करे' शब्द तो इतना समीचीन है कि उसे किसी अन्य शब्द से बदला भी नहीं जा सकता। रावण इसके बाद भाग जाता है। किन्तु कवि इस रावण को भगाकर भी रावण वध करवाता है—

'रावण मार्यो राठ करि, भटका बाही भोक ।'

ऐसा सगता है कि रामलीला के लिए जो रावण खड़ा किया गया वह जीवित पात्र था, जो फिर भाग गया और जो नवनी रावण धर्मात् उसका पुतला रहा होगा उसका वध किया गया।

रामरजाट में पूरी प्रवधात्मकता नहीं है किन्तु घटनाओं के क्रम में सरथ सूत्र भी विच्छिन्न नहीं हुआ है। स्वतंत्र प्रसंग कितने ही इसमें गुंथे हैं जैसे घोड़ों का बणन हाथियों का बणन, नायिका नख गिन्न, बूंदी नगर बणन, तारागढ़, चाबरज्या आदि के बणन दबसाएँ के शिकार का बणन, पोय की पाँचों का शिकार का बणन आदि।

विशेष ध्यातव्य है कि दस वर्ष की भ्रष्टाचार में भी सूयमल्लजी कवि कर्म के प्रति कितने आस्थावान थे। उनके अनुसार सुकवि सत्य भापी ही होता है। वे तारागढ़ का बणन करते हुए लिखते हैं—

मरघ धीतला भोकला नाहर गुंज नत्ति,  
बचन भद्रगा औरबर, सुकवी बोलै सत्ति ।

सुकवि के सत्यवादन की प्रतिष्ठा मानवीय मूल्यों में कवि की आस्था की परिचायक है और उनके प्रौढ़ चिंतन की भी। तारागढ़ और चाबरज्ये के बाद कवि ने जहाँ बूंदी का बणन किया वह प्रतिपाद्योक्ति में बहक गया। उसे बूंदी शहर दिल्ली जैसा दिखने लगा—

मारण दुनमण भोकला, धारण ऊमल्ली,  
सारान बूंदी सहर दीखता दिल्ली ।

समग्र रूप से देखने पर रामरजाट शिकार और दौरे का प्रथम मात्र नहीं बरन् एक सामाजिक काव्य प्रथम ठहरता है। इसमें सन् १८८२ धर्मात् १८२५ ई काशीन बूंदी के सामाजिक पर्वों—तीज त्योहार दशाहरा, राजा की सवारियाँ, रामलीला आदि के चित्रोपम बणन हैं। कदण रस के प्रतिरिक्त सभी रस इसमें हैं। हास्य पूरा न होकर रसाभास की स्थिति रावण कुम्भकण के वातालाप में बनती है जब रावण कुम्भकण की भली सलाह न मानकर कहता है—

'घुलै नीद धाराम करो घर ऊँच सतावेँ थाक ऊपर ।'

रामरजाट के मक्षिप्त प्रसार में कल्पना बुद्धि प्रतिभा और शैली चारों तत्वों का समन्वय है। धर्माय काम मोक्ष म से कोई पुरुषार्थ यद्यपि उसका लक्ष्य फल नहीं है

तथापि तरकासीन समाज मे उसकी प्रासंगिकता को स्वीकारना होगा। वह तरकासीन यूदी के सामाजिक जीवन का दृश्य है उसके वर्णन बिग्री मासकवि की कृति में हुआ है। वह स्वनि काव्य नहीं है बलु कवि की प्रायु क सापदा मे काव्य घोर कवि की महत्ता को नकारा नहीं जा सकता, उसकी अभिप्रायक अभिव्यक्तियाँ घोर विरोधम बलन उसे किसी भी बाल कवि की कृति से एतदम प्रसंग से लडा करते हैं।

इस जोटि की रचनाओ मे यदि रामरजाट को विदल की प्रथम समय बाल काव्य कृति कहा जाए तो प्रयुक्ति न होगी। हाडोनी की यह रचना रात्रस्यानी प्राय की तो प्रथम समय बाल कृति निर्विवाद रूप से है ही।

—

## महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण 'कुछ अनकही' । पत्रों के सन्दर्भ में

डॉ० श्रीकारनाथ चतुर्वेदी

महाकवि सूर्यमल्ल अपने युग के प्रतिभाशाली एवं प्रभावशाली व्यक्ति थे । उनकी प्रभावशालिता तो इसी में समग्र है कि तत्कालीन युग के प्रभावशाली राजा-महाराजा ठाकुर, मामत, महाकवि द्वारा अपने सम्मान में व्यक्त की गई पत्रियों के नियंत्रण लालायित रहा करते थे । आज स १०० वर्ष पूर्व डाक-तार का विस्तार पूर्ण रूप से नहीं हो पाया था राजघरानों में हजरतारे पत्र के माध्यम से ही बहुमूल्य वस्तुएँ एवं अनलिखे व्यक्तिगत संदेश प्राप्त थे जो गरिमायुक्त व्यक्तित्व के अंग थे ।

वग भास्कर महाकवि की नाव्य साधना का पुण्य फल है और आज कवि की धर्मयुगीनता का प्रमुख स्तम्भ है साहित्य साधना का माध्यम अत्यन्त दुर्लभ है । इस कला-काण्ड पर यग और कीर्ति अत्यन्त दुर्लभ है । कृपण साहित्य देवता किमी भाग्यशाली का ही वरदान-हस्त में आशीर्वाद दे पाता है, अथवा अनक जीवन का साहित्य उद्योग की मात्र खान बन कर रह जाते हैं अथवा नीव का पत्थर पर महाकवि सूर्यमल्ल तो विवाद प्राणण के प्रतिभापित सूर्य हैं जिन्होंने अष्टगणितियाँ पर विचरण करते हुए भास्कर मयूखों से नाव्य एवं इतिहास के कुहरे ढक कोनों को उद्योतितमय किया है । आज इतिहास साहित्य की परंपरा में वग भास्कर का महत्वपूर्ण स्थान है । विद्वान् इतिहासकार विगत शताब्दी से इस महत्वपूर्ण ग्रन्थ का सन्दर्भ ग्रन्थ के रूप में उपयोग करते चले आ रहे हैं । महाकवि सूर्यमल्ल के मन्दन में अनक प्रवाद प्रतिष्ठ हैं जिनके माध्यम

म लोकोत्तर प्रतिभा र घनी महाकवि सूयमल्ल प व्यक्तित्व एव कृतित्व परिचय का तानाबाना बना जा सकता था। वग भास्कर के व जननता हैं तो गामतो म ह्वात् पन्त रनन वाला वीर रम म श्रोत प्रीत मयनाद भी है। यह मात्र राज्याश्रित परावर्ती ठगुरमुहाती कहन वाला चारण ही नहीं व न् तात्या रोपे का दुनध्य चम्बन को पार कराने वाला मातृभूमि का विनम्र मवक है जिसकी धमनियो का गोलता रक्त मामनी को तलवार उठा कर एक बार भाग्य धजगा लेने की प्रेरणा दता है। महाकवि क हृदय की धडकन वीर सतनई व दोहो म विवद है जिगम राजस्थानी घातम बलिदानी सस्कृति का सार सशेष म आ गया है। महारवि सूयमल्ल साहित्य मराज र रवि है। ठाट भाषा क पूण पणित तत्त्व बोध क मूनिमान स्वरूप इतिहास क प्रतिद्वाना, चौन्ह विद्या निदान चीनठ रता निपुण शौर भीमामा राव्य शास्त्र योग शास्त्र शास्त्र के तलस्पर्शी विद्वान थे। उनकी असाधारण प्रतिभा का परिचय तो दस वष की अवस्था म ही मिल गया था जबकि उहीन गवराजा रामनिह की वारान म लीट कर दूरी क परपरागत तीज-त्यौहार एव गिकाट पर आधारित 'अमरजाट' की रचना का थी।<sup>१</sup>

जब किन्ही काणोवश वग भास्कर का लिखा वीच म बंद हो गया था तब रतलाम नरेश बलवत्सिंह के नाम लिख पत्र म अथाह पान का परिचय देते हुए कवि न उल्लेख किया है—

अर विज्ञाप्त एक मालूम हासी अठे तो अय म्हाणे ग्य को निर्माण मीरूप छ सो मीरूप ही रहतो दीखे छै तीमू आपणी मरजी दो पांच हजार अथ बागवा धी हाइ तो विठाय की मरजी होय अर जी भापा न मरजी होय अर ज्या छै न मू मरजी हाय तो छद १ वा अलवार २ वा गकुनशास्त्र ३ वा धमशास्त्र ४ वा नीति १ दाता २ प्रमुख अथशास्त्र ५ वा कामशास्त्र ६ वा गणित प्रमुख ज्वातिपशास्त्र ७ वा शब्दाशास्त्र ८ वा अभिधान कोप ९ वा नायक नायिका लक्षण १० साहित्य शास्त्र ११ वा संगीतशास्त्र १२ वा काल निगय १३ वा पुराणी निखय १४ वा बनेपिन १५ वा पातजल १६ वा उत्तर भीमासा १७ वा हय लक्षण १८ वा शिल्प शास्त्र १९ वा गवादिपशु परीक्षा २० वा रत्न परीक्षा २१ वा वतना सब विषया म स्वल्प २ परिचय छ त्या म जा विषय पर मरजी हाय तीकी इवारत निर्माण करना की आना देवा जी की मरजी हाम तो ऊ प्रत्युत्तर का हुकुम क साथ ही फरमाई जावै अरर निखाई जाव और जो न मरजी हाय तो ए फुटकर पद्य तो माफिक शहर म तागिदगी हाजिर होवो ही करसी।<sup>२</sup>

वगाल गुजल ९ सवत् १६१४ प्रस्तुत पत्र स्पष्ट है कि महाकवि सूयमल्ल काव्य शास्त्र के साथ अनेकानेक विषयो के तलस्पर्शी विद्वान थे। वग भास्कर एव बलवत्सिलास म अवातर प्रसंगो क रूप न अनेक विषयो की खर्चा हुई है। अष्टम रागि के अतगत महारवि न रावराजा रामनिह के पान अभिवद्वन हेतु वेदो एव उपनिषदो का

१ सवत् सरम अठारसै साल विषामी सत रवि वसत पाचे रहसि गिरा सपूरण अथ ।

२ रतलाम नरेश के नाम लिखित पृष्ठ वही न २ पत्र क्रमांक ३२

मार निचाड कर रख दिया है।<sup>१</sup> अपने पत्रों में उन्होंने अपनी जानकारी के विषय में जो लिखा है, उन सबका साधारण ज्ञान भी यदि उन्हें रहा ता हमें समझ में नहीं आता कि इनने विषयों की जानकारी रखने वाला कोई दूसरा साहित्यकार राजस्थान में उनके मुकाबले में रखा जा सके।<sup>२</sup>

## मदिरा प्रेम

सामंती सत्कृति में प्रमत्त वसूदा म' मदिरापान ता सामाय शिष्टाचार के अंग रहें हैं।

महाकवि भी अपनी दैनिक दिनचर्या में इन सभी मादक द्रव्यों का सेवन करते थे। अतिवदन की स्थिति में काव्यधारा बग से फूटती थी जिसको लिपिवद्ध करना लखको के लिये समस्या बन जाती थी। दूर-दूर से कवि का रुचि की वस्तुओं उनके सम्मानार्थ जप्त घोड़े, सितार व मदिरा भेंट स्वरूप भेजी जाती। भिरणाय नरेण दलवत-मिह न मदिरा अनुदानाय भेजी थी जिनकी प्रणामा में कवि न निम्न पद्य लिखा था—

माद कर ऐसा मधु मधुर पढायो भूप  
छायो बठ केतकी गुलाब सुम छाज प।  
स्वाद पुनि सरस सुधाइ तै, सुहाया सून  
लाखन क लखत नमायो बैन लाज प।

ज्यो ज्यो रविमल्ल का नजीक नियरायो गेह।

त्यो त्या रविमल्ल<sup>३</sup> हाय माहित सुगंध सुख ताज प।।

टीकाकार महोदय ने भी सूयमल्ल का जीवन चरित्र लिखना चाहा था और इस मादक में वृत्ति के कौंसिल के मन्वर पण्डित गंगासहाय जी से उन्होंने सूयमल्लजी के प्रमत्त जीवन-चरित्र की सामग्री मांगी थी। प गंगासहाय जी ने प्रत्युत्तर में लिखा था कि सूयमल्लजी का जीवन-चरित्र लिखा हुआ ता है ही नहीं और उनका देहात हुए तीस वर्ष व्यतीत हो चुके हैं, उनके समय के मनुष्य विद्यमान न होने से श्रृंखलाप्रद जीवन चरित्र नहीं मिल सकता।<sup>३</sup> वेद है कि महनीय व्यक्तित्व का सही मूल्यांकन नहीं किया जा सका। महत्वाकांक्षी रावराजा राममिह चाहते तो 'बश भास्कर' की अवशिष्ट मयूखों को पूरा कराने के उपरांत उत्तराधिकारी पुत्र मुरारीदास एवं गोबधनजी चौधे से इस काय को पूरा करा सकते थे। उनके निरोधान के साथ साहित्य इतिहास की महत्वपूर्ण सामग्री भी तिरोहित हो गई। सौभाग्य में महाकवि के असाधारण व्यक्तित्व से संवर्धित पत्रों की वा बहिष्ता प्राप्त है, जिनके पत्र अब जीर्णोद्धार में हैं कुछ प्रत्यत मुरुचिपूर्ण ढंग से लिपिवद्ध हैं जिनमें महाकवि के अंतरंग व्यक्तित्व एवं कृतित्व

१ बश भास्कर

२ बीर सतसई भूमिका ८३ (दूसरा संस्करण)

३ बश भास्कर—पूत्र पीठिका पृ ५

क मूल साध्य है। उन घातत पत्रों में न कुछ महत्त्वपूर्ण घण घणायु प्रस्तुत किए गए हैं। महाकवि मूयमल्ल के अनन्य व्यक्तित्व के मर्म में घात किया गया है— सरस्वती का स्वयं विद्या मन्थन करना, पत्नी की दास-दासिनी पर मीर बोधक निराला निवालना गीत गाने महिनाओं के घण गिणार अज्ञान रचना घातमजा का उद्घातन उछालते उदम कर देना कमी के पद पर घण घणायु पर वाच्य साधना करना भिन्न की रानी का गती हात पर घमर कर देना का वरत देना रावराजा रामविह के निर का बोहो की टापों के मध्य लुडकता हुआ रजन की घातमजा धरक करना मर्मर के अप्रतिम मुत्तर यथा के बलपूर्वक भेज देना पर रुठ जाना घोर घबानान की प्रकर रूप में घातिय मत्त करना घोर घपन ५२ चलो के माध राज परान की घात करना आदि घनेको एसी घटनाओं के जिनमें कवि की गमी प्रतिभा उभरन मयती है वे सासायिक भूमणों से बचना घोर परक है। काव्य जिनका जीवन-धन है घोर माप ही साधना लड्य है। निर्भोवता स्पष्टवायिता स्पष्टता ही जिनके व्यक्तित्व के प्रमुख उत्कीर्ण बिन्दु हैं घणाह ज्ञान जिनका भूषण है मत्यवायिता जिनके जीवन का घटल सिद्धांत है। मूयमल्ल मात्र घतीन की घटनाओं का लिपिबद्ध रजन वाता इतिहास कार ही नहीं है, बल्कि दूरदर्शी भविष्यद्विद्या कथानायक है जिनके सामन निरालाय वातावरण में डूबत-उतरात भारत का भविष्य है।

घायो जाननि घामव हमारे उमवत घाय,  
भेख भवानि गोरि दोगी दरवाज प।

### सगीत प्रेम

महाकवि मूयमल्ल सगीत के विशेष अनुभागी थे। उह स्वयं का भी सगीत का विभिन्न रागो राग-रागिनिया का विगण जान था। सगीत-प्रेम की चरम सीमा हम उस समय दिखाइ देता है जपरि के पत्नी का घात क ऊपर रजन से पूव भी सगीत साधना करना नहीं भूले थे। जे कभा काव्य रचना करत करत कवि का मन ऊव जाता था तब सितार लेकर टूटेली में डमरी के पद पर बने मचान पर जा बटत घ घोर इस स्थायी का पद मान लगा थे।<sup>१</sup>

भासज धारो मनडो कहु न दीस छट भाग भवन।  
इण वता थय्य धुनी न दीस।

महाकवि के समसामयिक ग गारी कवि राजकुमार रतनविह (नटनागर विनो के रचयिता) अनुरागी मित्रो में से थे। उहोंने मूयमल्ल के सगीत प्रेम के निबहन के लिये दा बहुमूल्य सितार भेंट की थी कवि ने निम्न कविता में आभार व्यक्त किया है—

मुद मितारी पठा रतनम ज,  
बज ते पचवान की कमान कमनी सी है।

१ बीर सतसई भूमिका पृष्ठ २५ (द्वितीय संस्करण)

२ बीर सतसई पृष्ठ (द्वितीय संस्करण)

उठन घनाय सौन नैन की घनागी नच  
 रागिनी ठनी सी मोह पाउस मनोसी है ।  
 गुनन गनीसी सोच समनीसी जिहें,  
 गुनन सुरेण हू वा वामन वीनी है ।  
 बोना वही बीतो के बजाने म त्रिनाद माहि  
 रभा के रिम्कान म धरीव हू घनी मो है ।<sup>१</sup>

महाकवि व व्यक्तिगत सग्रह मे वे ानो मितार धाज भी उपलब्ध हैं— जिनक तारो का कवि न अपनी उगत्रियों से स्पग कर जीवन का सगीन दुहराया था ।

### कवित्व

महाकवि मूयमल्ल व सग्रह म त्रितन भी पद्य उपलब्ध ह, उनम श्रोपचारिक गद्य निबदन के बाए साहित्य माधना बी हा चर्चा है । कुछ पत्र कवि ने व्यक्तिगत रूप म लिखे थे, जिनम उनकी वाच्य माधना, प्रथ रचना एव कथ्य पर प्रमाण पडता है । बलवद्विलास की समाप्ति पर भिरणाय तरण वनवतसिंह का कवि ने जो पत्र लिखा था, उनम प्रथ रचना के अंतरग पक्ष पर प्रमाण पडता है । पत्र का महत्वपूर्ण भग्न यथावत् उद्धत किया जा रहा है । पत्र का उत्तराद्ध कवि की मानसिक वेदना की निजी कहानी है । दोष भाग म वनवद्विलास के कथ्य पर प्रमाण डाला गया है ।

धर गया कातिक म म्हार गुनम की व्याधि का प्रकाप ज्यादा हुवो नी सा एक माम की ता मीश मिली धर मागनिर मे धाराम हो गयो तो सी ऊ ही मेद का ग्रहाना मू ऊ महीना की मीश (धवकाग) फेर मागी मिली ई रो निमास ओई म निरतर परिश्रम करि प्रथ यो बलवद्विलास पुगे किया— आपनी तरफ की धीचा पर लिखी धावा करि मा नी हेतु सामला हुमा ती पर उतरते पीप मे तो सीख मागी छी सो मिली नहीं पर धापका लिखवा सो कदाचित् खेवाह म गाल मिनती ता बी दिन चार पाच मवाई मिनती दीख नहीं प्रथ (धग-भास्वर) की अठ बी त्वरा छै नी गो अठे प्रथ यो बलवद्विलास वा सागापाग अथ सहिन थवण करिया म महीना दाई मो कम लागे नहीं क्योंकि आथस्यक विद्या छ तयो म कम १ उपासना २ आत्मज्ञान ३ वार्ता ४ राजनीति ५ मुद्रम त्या का विषय धम का माधना धर सिद्धि तथा भक्ति का साधन सिद्धि नीति का साधन, सिद्धि इत्यादिक समस्त ही विषय धापकी धानानुसार महलया गया त्या म कम काण्ड पर धरवा की धर स्तुत्या धागय [ई म मव त्रुणाश्रम का धम, उपासना तथा जीविका धर स्त्री धम य सब धा गया धर उपासना पर अस्या को रूप पचरायादिन प्रथो का धागय नात काण्ड पर उपनिषदा का तथा उत्तरमाभासा साख्य पातजल का धागय धर धैठे ही -यायवैशेषिक, पूव मोमासा का धागय वार्ता पर विश्व जीवन नादिन अयगास्स का प्रथ नो धागय नीति पर चारम्य १ कामादस २ प्रभुव नीति का प्रथ को आसय नी मे प्रथम अगाराज नी का गुणा मे छै ही गुन नीन शक्ति त्या मे ही



मत्र का पाँचो का भ्रग धर च्यारी उपाय भेत्त सहित कह्या गया दूजो भ्रग घमात्य ता का लक्षण ॥ तीजा भ्रग मैत्री ती रा लक्षण ॥ चौथो भ्रग मती का लक्षण त्या म ही पाँच रत्न, सात उपरत्न तथा सुवर्ण १ रोष्य २ या का गुण दुपण परीक्षा तथा मगत्त वत्त भ्रन या का भेदा महित लगण पाम भ्रग दग ती रा भन्त महित लगण छठो भ्रग दुपा ती का भेदा सहित लक्षण मन्म भ्रग सना ती रा लक्षण भेत्त महित त्या म ही हाथी, घाट की जाति गुण दुपण परीक्षा तीण हो मनापनि प्रभुन राती रा ममस्त ही मित्तागरा का लक्षण पछ विवाह याग सी लर भवार ताई बी निमावट म लिखी भाई मो ममस्त ही भापकी शुभचर्चा शिकार, गुरली विलाम मगीन, भ्रजमेर गी चडाई या छना महगमन महित मली गई बाता देखता मो महीना को घवमर ता गहुन कम मिनया परतु मरस्वनि ने ही कृपा करि कि इतना मा जिना म और इतना मा ग्रथ म य मव विषय मागापाग प्रा गया परतु पूव लिखि व्यवस्था करि बिलय न राणी ममाया तीमा भाई राम ब्रगमजी क साथ चिरजीवी मुरारीदास (पुत्र) भेज्यो छै सा य श्रवण करा दमी धर ई की गक्ति प्रभाव भ्रय लगावगी उठै बी भ्रय बोल के वास्ते द ग्रथ म पनाच्छेत्त करि नि्या छ तीमा दन्त को भ्रय बिना पद छैत्त सो भधिक होमी परतु कमी विषय छ जठ व योग म विलष्ट पन्मी मा ई का विशेष प्रान्त तो वग भास्कर पूरो हुवा पछ सीध (भवकाग) मिल्या पर भ्रावमी उचित तो छै नही परतु सुत्तामा का सा तदुल भ्रगोकार करमी ।

प्रस्तुत पत्र बलवद्विलाम के कथ्य पर प्रकाश डालता है और साथ ही कवि के प्रगाढ अध्ययन एवं पाण्डित्य का परिचायक है। महाकवि माध इतिहासन ही नहीं वरन् पौराणिक ज्ञान के कोष थे जिमका परिचय 'वश भास्कर' के प्रथम भाग एवं 'बलवद्विलास' में देखने को मिलता है।

वश भास्कर तो कवि की अक्षयकीर्ति का आधार स्तम्भ है। ग्रथ रचना के समय ही कवि की ख्याति यानामात एवं मवार माधनो के अभाव में दूर-दूर तक फल चुकी थी जिम देख कर आश्चर्य होता है। कनल टाड और सूर्यमल्ल दोनों ही सामयिक इतिहासकार रहे। कनल टाड के साथ राजकीय प्रतिष्ठा एवं नामक का प्रभाव था जबकि सूर्यमल्ल के पास अपनी प्रसाधारण लोकोत्तर प्रतिभा थी जिमने उन्हें प्रतिष्ठित किया था। भारतीय नामत इतिहासज्ञ ही नहीं भारतीय लोगो की गतिविधि पर हर क्षण नजर रखन वाले अंग्रेज भी सूर्यमल्ल की काव्य रचना से परिचित होना चाहते थे। स्वतंत्रता संग्राम के पूर्व अंग्रेज शासक पर्याप्त चौकन्ने हो चुके इसी कारण में अजमेर मेरवाड़ा के इन्सपक्टर आफ स्कूल्स मिस्टर फालन ने सूर्यमल्लजी का लिखा था—

'सिद्ध श्री बूनी शुभ सुयान कविवर श्री सूर्यमल्लजी बारहूत जोग्य लिखी अजमेर से श्रीयुत मि फालन साहिब वहादुर इन्सपक्टर जिले अजमेर और मरवाड़े की सलाम वचना तुमने याय व्याकरण काव्यानि सस्कृत में और भाषा की कविता में जो नवीन ग्रथ बनाया हो उनके नाम और बनाने की मिति और उनके श्लोको की सख्या भाषापूर्वक व्योरेवार लिखकर हमारे पास मेहरबानी करके भेजना चाहिये। इस पत्र का प्रत्युत्तर गीघ्रता में भेजेंगे जो। किमधिकम् और विशय करके भाषा के ग्रथो की चाह है उन ग्रथो में से कुछ श्लोक व कवित्व दाहानि और उन ग्रथो का आशय क्या है

जल्द लिय कर भेजेंगे। हस्ताक्षर पावन मिति चंद्र बुद्धि २ सवत १९१५ त्रिपुरीस  
२४ मार्च १८५७

प्रस्तुत पत्र अग्नेजी मरकार की जागरूकता का परिचायक है साथ ही एक  
गानगी पूर्व खड़ी बोली के मुठ प्रयाग का भी एक उदाहरण है।

सूयमल्लजी ने जो प्रयुक्त दिया वह बश भास्कर ग्रंथ रचना के काल तक  
कथ्य पर प्रकाश डालने में पूर्ण समर्थ है। कवि न खड़ी बोली में ही उत्तर देते हुए  
हैंगे। का परिचय देते हुए अग्नेजी प्रयोग पर आक्षेप लगात हुए लिखा था-

स्वप्नि श्री मदनजमर पवन शुभ स्थानस्थ मवसदुपमा याग्य प्रजा परिचानक  
कवि विश्व शुभ वाक्क सरापकार श्री श्री मिस्ट्र फालन माह्व बहादुर योग्य लिखितम  
बूनी वास्तव्य मिश्रण सूयमल्ल का सलाम वचना अत्र शुभ तच्च वावत्कमजस्य बी  
हमतह- अक्षर पत्र आपका प्राया वताच पात हुआ। आपन मर बनाय सस्कृत १  
भाषा-२ के ग्रंथ तथा तिनके विषय प्रमाण तथा निर्माण का समय इनका प्रदन  
लिखी उत्तर माग्यो अत्र जनिथ सवन् १९९६ ने वशाक्ष म मेरे का श्री सरकार की  
घाना हुई कि चाहूवाण वग चरित्र माहिव प्राथ और कलिगुग लग पीछे विकरम भाज  
तामी नरेद्रमय तिनके चरित्र भी विस्तार म धार ऐसी घाना हुई तब स ही मैं ग्रंथ  
का निर्माण प्रारम्भ किण परन्तु बीच बीच दुर की तीथयात्रा तथा बीमारी और  
काम की घाना म प्रवाम अग प्रावश्यक कारण रूप विघ्न हो जान स वप त्स की नागा  
हा गर् और वप घाठ म अत्र ग्रंथ पैनीस हजार के लगभग निर्मित हा चुका है जिसमे  
सस्कृत प्राकृत व पत्र तथा बूज-भाषा की विभक्ति प्राथिक है। तामू यून कोई २ स्थान  
पर मर भाषा की विभक्ति क गन्न की कविता है। कई २ केवल शुद्ध सस्कृत प्राकृत  
अपभ्रंश औरमनी मागधी पगारी इन ऊ भाषाभा की कविता करी है। अब हजार  
छ सान के लगभग ग्रंथ कर बनान का इरादा है। जिसकी ग्रंथ सरकार की तरफ म  
भी प्रतिवरा है। इसम जान हाता है कि वप एक म पूर्ण हा जावगी इस ग्रंथ से जुदा  
और नाई अग्र्य अग्र्य मरा बनाया नहीं जो कुछ यात है सा सब शिक्ष इस ग्रंथ मे ही  
लिख दिया है सो आप जानेंगे और पूर्ण होगा ता अजमेर व ही छापेखान मे पाच सौ  
सात सौ पुस्तकें को छपान को भेजी जावेगी। आपका पत्र भेजने स बडा अपूव आह्लात  
हुआ जिमम महरवानगी मालूम हुई और मर उनाय पथ प्रति ही चाहते नो तो मरजी  
जम विषय की इसारत करन से भज जावेंगे और महरवानगी वैसी ही बनी रह और  
एक विनक्ति ह कि आप क इतिहास बगर वताता के पत्र आवते हैं और पहले भी  
आप की कई किताबें निकली हैं जिनमे शब्द का एक स्वरूप नहीं छपता किसी मे  
अकटाबर १ कही अकटाबर २ कही अकटाबर ३ कही अकटाबर ४ कही अकटाबर  
५ और कही अग्नेज १ कही अग्नेज २ कही अग्नेज ३ कही अग्नेज ४ ऐसे भिन्न  
२ स्वरूप देखने से शुद्ध अशुद्ध का निश्चय नहीं होता और इतिहास बगर के पत्रो मे भी  
कई अग्नेजी शब्द अधिकारियो की सजा बगर के छपे प्राते हैं जिनका भी अग्र्य हिंदी  
मे मिला करे तो कोई बान का सदेह नहीं करे। अग्नेजी पारसी मे परिचय नहीं है जो

जनता के लिये उपयोगी है। पत्र का विलंब आवश्यक् कारणतर से हा गया जिसका माफ करना चाहिये।

मिति ज्येष्ठ बुध ११ दानिवार वि० सं० १९१६

महाकवि सूर्यमल्लजी के व्यक्तिगत संग्रह से राजस्थान के प्रसिद्ध इतिहासज्ञ कवि राजा राममल्लदासजी का पत्र उपलब्ध हुआ है जिसको प्रासंगिक रूप से चर्चा कर देना बाछनीय होगा—

स्वस्ति श्री वदी शुभस्थानस्य सरापमा योग्य मिश्रण ठाकुरा श्री मुरारीगण (सूर्यमल्ल के पुत्र) योग्य उदयपुर निगम वास्तव्य कविराजा श्री जी की मुर्दाष्ट कर ममीचीन है। राज्य को शुभ सामाचारण निरंतर अपक्षित है अपरच मा दिन राज्य को कुशल पत्र नही आयो सो दूर दश को मिलाप तो पत्र द्वारा ही होये कह सो लिखावता गृही समाचार जायती कि ठाकुरा सूर्यमल्लजी को बढयो बश-भास्वर' ग्रंथ को एक अरित्र जी मे श्री पाटेश्वरराय को बरखान भी विशेषतर होय। काव्य रचना भी प्रमा होये सा लिखाप डाक माग पासल मे भजिवायद मो अठ श्री जी के कण किया तावया और अठा योग्य काय स्वस आण लिखाय करसि।

श्रावण शुक्ला ४ बुधवार सं० १९२६

अतिम समय—

सरस्वती पुत्रो के भाग्य की रखायें लगभग एक ही मनीन से लिखा गई है चाह को भारत-दु हरिश्चन्द्र हो या जयदाकर प्रसाद चाहे प्रेमचन्द हा या निगला। निघन्तव की धूप म तपना और साहित्य साधना करना ही जीवन का लक्ष्य रहा है। सूर्यमल्ल भला अपवाद कम हा सकते है? जीवन भर जिसकी भोली प्यार और सम्मान

भरी रही हो वही आश्रयदाता एक राजा रामसिंह के नामन 'याय संगत आधिक याय के लिय सदैव जूझता रहा। क्या महत्वाकांक्षी रावराजा रामसिंह महाकवि की प्रतिभा के साथ 'याय कर सके। कुछ भी कहना असंगत होगा पर निमय स्वच्छ सिद्धांतप्रिय व्यक्तित्व की कठोर चट्टान के नीचे कहणा की अनलोला प्रवहमान देखते ह जा पत्रो के कगाओ को चीर कर बह निकती है। वि० सं० १९०६ मे सूर्यमल्ल ने विनक्ति स्वरूप एक पत्र लिखा था जिसकी प्रथम पक्ति इस प्रकार है—

'विनक्ति पत्र धाज का धाज न बाचनी तो ईष्ट मपथ छ'

और फिर मे याय एक कहणा की लवी कथा गूथी गई। पत्र का कुछ अंश इस प्रकार है—

'मोलयो एक मालूम हावसा म्हारे हजार बीम विवास छे अर दुमाध्य दीली है तो सू पहला अज दरिद ता नवा सादिवा लागती सू आराम तो हाल हुयो नही परतु बैद्य न बताओ की पध्य की परवानगी नही बस्ती अर स्त्री का छेद मे जो कोई टया की घत्र कराई तो पर ये हुकुम लाग्य कि टामा सू दीजो तीकी बी बिलेम चिठा हई अरमारों से हान मिटता दीमे नही इ वानते की कठई परमाय औपम मिले ती का

तिल्लाम पर वी घटन को विचारी छै तीसू एक घटन म दो ही बात सही जासी अ य दुलम हाई ती कै भौपध यई कोडी कथा म आवे ई मू या बी जाडी की ।

मिति कार्तिक कृष्ण ३ स १६०५

बाद मे प्रकारण ही रावराजा का आश्रय भाव भी शिथिल हो गया फलस्वरूप उपेक्षित क्षणा म भी कवि को जीना पडा । उही तिनो की स्मृति इस पत्र म उल्लिखित है—

पीपलया जयपुर क ठाकुर फलसिंह क नाम लिखित पत्र का आवश्यक अंश इस प्रकार है—

अर माघ सुधि म वू दी मे आरू गजिर हुवा तो नखन तो मरजी ही दीमी ही परतु घणो कान लागे तो को मानी ही जाव छै तीसू भौरा क तो दण्ड एक साल का हामिल हुमा अर म्हारे रूपया तीन सौ बरसाल दण्ड का लिखी दिया बडा तकाटा सु पुराणा बोहरा सलकार ही दिया त्या का रूपया पैस असबाब घर को तमाम विकी सरकार ने चौडे अरज करवो तो बरस तीन सौ मौजूब च क रियो और एकात को भौसर मिले नही और क हाथ अरज करावा सो ग ग तीन तीन बरस मालूम हुई नही रतलाम सू माघ म आया पाछे फागुन मे अरज करानी छा मो आल ताई मालूम नही हुई छ असी दोख छ क भूडा सू ता सीख न देणी अर ।

तो ठीक छ अर कबर जी की तथा महाराज कु वार का विवाह की बी कोडी एक हाल ताई तो वरुक्षी नही अथ को बणावो बी परसोहि मजूर अथ का लेखक बगर तमाम चुडा ही दिया सुगावाइ कर नहि तीसू चित्त पर बरस २०० निहायत उदामी बढ रही छ ।

पौष शुक्ला प्रतिपदा म १६१४

रावराजा रामसिंह की नाराजी बाह्य रूप म भले ही प्रकारण लगती हो पर सकारण रोग का कारण था पर रूप से स्वमल्ल द्वारा काला की फौजो (स्वतंत्रता संग्राम के सनानियो) की मन्त्र करना जिसने रावराजा क सामन दुविधापूर्ण स्थिति पैदा कर दी थी, रावराजा न भेट करना बंद कर दिया था उन पर २००) रु का विशेष दण्ड प्रतिवय के हिमाब स किया गया । रणताओ को अथाह वसूली के पीछे लगा दिया इससे कवि का मन विरक्त हो गया । फिर रावराजा न कवि की गतिविधियो पर प्रतिबन्ध हेतु पुन वश भास्कर के लेखन कार मे व्यस्त कर दिया । कवि को अब इतिहास क उजले पृष्ठों की अकित करना था पर आश्रयता इतिहास के इस कटु सत्य को नही सह सके और कतिपय मायताओ के आघात पर 'वग भास्कर अछूरा रह गया । कवि ने उन दिनों को इन शब्दो मे स्मरण किया है—

भौर अथ 'बलवद्विलास तीन सौ के अनुमान तो परार कू बणाय तू प्रायो तो पी छै बंशाख का महीना एक मे बणी गयो छो ती पीछ लागत ई ज्येष्ठ म वश भास्कर' पूण करिवा का हुकम हुवा ती की चौकस पर पुरोहितजी १ अग्निश्रजी

२ गन्धा गया तथा का नाम तो पहली का पत्र में लिखा ही था गो यामू पाठ निहा  
 हाजरी मातूम परि देवा की परमाई जो प्रत्याट जाए मातूम कर ।

ती मैं वो बोई दिन परिश्रम तान पहर तो कम जाणो छ जनी में ही उगत  
 को हुकुम भाव छ भर लगव बोई पान राखी दिवा छ मा घाया घायो निय ही  
 बगावटी लिखी जाव परतु मन ता परिश्रम पूरो ही पढ च इननी घोप्रता पहनी होतो  
 ता रातरा घाटवां मात म हा जाती परतु भ्रम परका जट गो ही या सीजता हाई ठा  
 सा घाने ही ई श्रय की बगावटी म पूरो दा पढी का भवगर मितता नही रात्रि में  
 पढी दा घढी का बगावटी हाती तीसा परहाट प्र म नही पूरा हा ता जन्ती न्या  
 जावता

ज्येष्ठ वृत्त ५ म १६१५

एक श्रय पत्र म व्यवस्था की चर्चा करत हुए रत्नपुर क नासक बह्नाबसिंह  
 का कवि न लिखा था—

सरकार ने श्रय वग भास्वर का निर्माण का प्रारंभ फेर बगया हर व  
 एक म समाप्त करि देवा को हुकुम हुओ ती की चारन पर पुराहित रामगापालजी निय  
 म्बालाल जी म दौनी मार पास राब्दा सो समस्त ही दिन की बगावटी की हाबिरी  
 निय ही मूत छदा की तथा छदा की गिनती स सरकार म लिखा भेज छ घर न-दो  
 तीन महानो से हवली रही वा म बी कोई काई समय म प्रसादि जाणो कित ही दुनावा  
 लियो छ पाच सात दिन म रात्रि क समय हवली की सीग हाई छ । फजर (गुवह) ही  
 पाछ चाकरी म बुलाई लयो छ ।

मिति माघ शुक्ल स १६१५

रत्नपुर के शामक बत्तावरसिंह जी क नाम लिखित अतिम पत्र राग जय पर  
 खद करत हुए लिखा—

चित्त म दु खी पर हाल विशेष हदि न जायो क्याकि भव मारो देह बी अब  
 भग १ गुल्म २ का प्राबल्य करिर रुण ज्यादा रह छ तीसू जावो ही छ सा जाएगी ।

मिति बगाल शुक्ल पक्ष ६ सवत् १६२४

रावराजा रामसिंह महाकवि की भस्वस्यता के कारण अतिम दिनों म  
 वहुत चिंतित रहे उनकी व्यक्तिगत देखभान के लिय उह गठ म बुलवा लिया था ।  
 वही उनका उपचार चलता रहा पर रागो न गरीर जजर कर दिया था । महाकवि की  
 मृत्यु दुग म २ी विस १६२५ को हुई । इस प्रसंग की चर्चा बश-भास्कर की भवशिष्ट  
 मसूखा क लेखक मुरागीदास (पुत्र) न इस प्रकार की है—

भूत दव अक नचि (१६२५) मुचि मुचि केर  
 एकादशी ग्यारह धार तीन वेद नाडी दिबर भात  
 मिश्रण नवींद्र रविमल्ल बद्ध भाय यतई  
 बूढी दुग माहि प्रमु तिम्बर नेर पात

मा सुनि अनंत शोक परिके नरद्र माय  
 स्नान करि अनल अजलि दिये ऊ तात,  
 तास पुत्र अगुन मुरारी दास नामक वा  
 अभियुत धान ग्रानि दे विसामी हित दिखात

आश्चर्य है कि वीर सतसई के विद्वान प्रय का ध्यान इस प्रामाणिक साक्ष्य की  
 ओर क्यों नहीं गया ? जो कि अतिम और प्रामाणिक साक्ष्य है ।

अब तो सून रावले, भावल जी की यावडो, वर निजनकक्ष, जजर पालकी,  
 अकुश सितार काल की क्रूरता से क्लुपित हवेली और उसमे बदाजो के लिय धरोहर  
 क रूप मे रखी हुई हस्तलिखित प्रतिलिपियाँ मैक्ण पृष्ठा की वश भास्कर सहायक  
 मामाजी राजाओ के हस्तलिखित उनके पुनीत स्मृति चि ह है आ शताब्दी पूर्व महाकवि  
 की अविगिष्ट धरोहर के रूप मे सुरक्षित है ।

# महाकवि सूर्यमल्ल और उनका वंश भास्कर

ब्रजराज शर्मा

विविध वर गुणाना पालको रुदिपुर्ण,  
गहन विविध वत्त कारको वंश भानो ।  
नपति वर वराप्तो धीर चित्ताब्ज पोष  
ह्यपररविरिवानीत् चारण सूर्य मल्ल ॥

— रामनिह शतक (अप्रकाशित)

यहा महाकवि कुञ्जबिहागीजी ने अपन रामनिह शतक मे सूर्यमल्ल को दूर  
सूर्य कह कर स्मरण किया है । वस्तुतः सूर्यमल्ल असाधारण प्रतिभासम्पन्न इतिहास  
विद्वान् थे । वंश भास्कर वीर सतमई के अतिरिक्त उनकी दूसरी अमर कृति है । जह  
वीर सतसई मे, राष्ट्रीय चेतना वं जातीय स्वाभिमान के पास्परिव बमस्  
विद्वकरण के अनन्त वीरतापूर्ण भोजस्वी स्वर मुखरित ह वही वंश भास्कर मे व्यापक  
वीरत्व-भावना सहज और स्वाभाविक वीरोत्साह वीर-मज्जा सय तयारी और  
प्रयाण वीरो की उत्साह भरी हुकार चारणो की उद्दीपनकारी गवोक्तिया- यहा वहा  
सबत्र विखरी पढी ह जो पाठको तथा श्रोताओ मे वीर रस का मंचार करती है ।

एक और वंश भास्कर वीर रसाणव है उसमे युद्धवीर दानवीर सत्यवीर  
धर्मवीर -वीरता के सभी सद्गुणो स युक्त पात्रो के चरित्रो का समावेश हुआ है वही  
वह दूसरी धार कवि क प्रगाथ पाठित्य का अद्भुत कोश भी है । इसने व्यतीत वह  
ऐतिहासिक वत्त रत्नो की मजु-मन्पा भी है । इन त्रिवेणी मे अवगाहन किये बिना  
य ध का मूल्यांकन सम्भव नहीं है ।

वग भास्कर म कवि न कई एक भाषाओं का अभिव्यक्ति के लिए प्रयोग किया है। सस्कृत, प्राकृत, प्राकृत मिश्रित भाषा, शुद्ध ब्रजभाषा, महदेशीय भाषा आदि सभी भाषाओं का यहाँ प्रयोग हुआ है— कवि को सभी भाषाओं पर अच्छा अधिहार है। ग्रंथ म गद्य पद्य दोनों का प्रयोग है। गद्य प्रायः गृह्यण हैं। कवि ने फारसी में भी रचना की है। इस भाषा वैविध्य के कारण ग्रंथ (श्री कृष्णसिंह वारहट द्वारा टीका कर लिये जाने पर भी) सामान्य पाठक के लिए कुछ दुरूह हो गया है। इसका ज्ञान कवि को भी था— इसीलिए उसने सरलीकरण प्रक्रिया के अंतर्गत 'ग्रंथ-नियम' शीघ्र से सभी भाषा सम्बन्धी कृष्ण ज्ञानन योग्य सकेत दे दिये हैं। ये सकेत भाषा विद्या की विभक्तियों, अव्ययों तथा व्याकरण सम्बन्धी दूसरी सामान्य पहिचानों के लिये हैं। अस्तु।

वग भास्कर की रचना बूढ़ी व तत्कालीन महाराजा श्री रामसिंह के आग्रह और उनके उत्साहित करने पर महाभारत तथा श्रीमद्भागवत को आधा मानकर हुई गयी है। यही कारण है इस ग्रंथ की वगण काली उही भाषाओं के ढर्रे की है। कथावस्तु को पहले समान ढाल में कहकर फिर विस्तार म व्यास शैली में कहा गया है। महात्मा तुलसीदास का मानस भी इसी शैली म प्रस्तुत हुआ है। वग भास्कर सम्पूर्ण भारत का भारी शक्ति का विस्तार इतिहास नहीं है। उसमें इनका उल्लेख छोटे तौर पर हुआ है। विस्तृत जानकारी तो उसमें बूढ़ी राज्य के इतिहास की ही है। प्रसंगिक दूसरे राज्यों, दिल्ली सल्तनत की घटनाओं का भी जिनका सम्बन्ध बूढ़ी राज-घराने में भी पाया बहुत जुड़ता है— वगण उसमें है।

कवि ने इनका अपने ग्रंथ के आरम्भ म स्वयं उल्लेख किया है—

यह समान उद्देश्य किये, वरनो अब करि व्यास ।  
 मुनहु घराधव दे श्रवण कुल चहुषान प्रवास ॥  
 इतरन बिच अनपत्य मृत चरिहों विरिचि चुदान ।  
 हहुन का सब अकिल हों, विरथर पूव बखान ॥

### ग्रंथ की प्रेरणा का स्रोत

यह स्मरण रखने की बात है कि वग भास्कर का मूलतः कवि है। उसकी इन साधना का मूलस्रोत भारतीय सस्कृति है, भारतीय सहिष्णुता मूलक धर्म है। अतः उसकी प्रतिभा म इन दोनों की रक्षा और पोषण म दृढ़ कल्याण देख इनके पापको के उत्कृष्ट और अत्यन्त म प्रसन्नता और खिन्नता के दृशन किये हैं। ग्रंथ में श्रुतिनिन्दा के प्रसंग इन्हीं तत्वों की प्रेरणा के फल हैं। इस विषय के स्पष्टीकरण के लिये वग भास्कर के एक दो प्रसंगों का उल्लेख अनुचित न होगा।

ईरान के शाह अबूफर के भारत आक्रमण के समय, चौहाण गोग की—जिसकी चपगाठ अथवा पुष्पनिधि 'गोगानवमी' के रूप में सदियों से हम मनाते आ रहे हैं—सहायताय आय भारत के अनेक छोटे-बड़े राजाओं को गोग जब यह कह कर लौटाना चाहता है कि वह स्वयं गोग को परास्त करने म तमय है और उनकी सहायता की उमे



भावश्यकता नहीं है, तो राजाओं ने जा गोग को उत्तर दिया, वह अत्यन्त गौरवपूर्ण और भारतीय आत्मा का मन्त्रास्वर है। उन्होंने कहा—

मिच्छन्तौ इव को बनें सा वन समस्तान् का पराजय ।  
एक कारण एह, प्री मुख जाय दुष्टान् प सुप्रे भय ॥

गोग के स्वर में राष्ट्रीय चेतना के स्थान पर मिथ्या यह और प्रदूरदर्शिता थी जबकि राजाओं के कथन में दूरगामी दुष्परिणामों के प्रति सतकता के भाव थे। काग<sup>1</sup> यह चेतना, यह एकता का भाव यह सतकता, देश के प्रतिनिधियों में प्राणे भी बनी रह पाती? हा सूर्यमल्ल ने इस मनोवृत्ति को ग्रथ में जहाँ भी प्रवसर आया है खूब सराहा है। कवि को यह सदैव अस्मरता रहा कि उसके आश्रयताता ने मेवाड़ से वर पाल का दिल्ली की जी हज़ूरी में लाभ लेखा। आत्म सम्मान बेचकर अपनी में मनमुटाव रखना उसे कभी नहीं भाया। उमने कहा—

निरखहु हाडा राम नप ऐमी बत्तन प्रज्ज ।  
वरतै मिच्छन्तु हुकुमवस अचरज, बडन प्रवज्ज ॥

इसी तरह एक दूसरे प्रवसर पर कवि ने अपने आश्रयताता के पूवज को चित्तौड़ पर आक्रमण हेतु बढ रहे अनाउहीन विलजों की महायताय अपने पुत्र को उसके साथ करते देखा, तो उसने व्यग-पूर्ण उलाहता लिया है—

भूप कनिक सहचर भय नियति नञ्ज मिलिमग्ग ।  
सग कनिन दिय आत सुत, इव रहि राग उत्तग्ग ॥

मच तो यह है कि नारी गौरव स्वातंत्र्य भावना, स्वदेशी का जीवन में प्राग्रह सूर्यमल्ल ने साधना मात्र रहे। इसके अनेक उदाहरण ग्रथ में सत्र मुनभ हैं।

### सूर्यमल्ल इतिहासकार

वश भास्कर के ऐतिहास पर कई एक विद्वानों ने प्रश्नचिह्न लगाय हैं। उनकी उसमें बढवा माटो द्वारा दिय साहाय्य में कल्पना अधिक तथ्य नम दिखार्दिया है। प्रवश्य ही सूर्यमल्ल का मुसलमानी शत्रु लेखकों की निष्पक्षता पर कम विश्वास रहा था। यद्यपि उसने त्वारीख फरिस्ता 'अकबरनामा आदि ग्रथों में सत्कार लेकर सामग्री के सत्यामत्य का निश्चय किया पर उसको सदेह इस विषय में बना रहा। अग्रज लेखकों के विषय में उसको उतना मदह नहीं था पर उनकी भी पूर्ण-यथायता की वह कम म्दीकारता है। उसने स्वयं अपने ग्रथ में इस इस प्रकार स्वीकारा है—

तवारीख फरिस्ताऽऽ म्लच्छिन्नेभ्यो विनिश्चितम् ।  
तथाऽकबरनामादि यवनानीभ्य उद्धतम् ॥  
दिल्लीगाना प्रति प्रथमायाति महदन्तरम् ।  
अद्भुत यमतकयपि गीरैकेऽप्युच्छालिपि ॥  
प्रभूत मन मासाय दिल्लीराडयवनावस्ती ।  
उद्देश्य नादिताप्या हा दापरालम्बन क्वचित् ॥

अग्नेज लखको के विषय में उगका कहना है कि उहाने भी प्रायवित्त में रहने वानो का वृत्त यथाय-कई जगहो पर-नही लिगा—

अग्नेजवृत्तमार्याणा प्रायावत निवामिनाम् ।

म राजा बलि निर्गति यायाध्यच्युत बहु ॥

इसी प्रकार तर्पण यवनोद्देश्य सन्देशि स्वीकृता मन । — मुसलमान लेखना को भी वह सन्देश न दखता है । उम प्राय नगरों की विजयमनीयता भाती है । वह कहता है कि प्रायों का बतान अधिक समीप का और मत्प व विरक्त है—

'प्रायवृत्ताहत्वस्वात्त समीप्यनोऽधिकम् ।

इतना सब कुछ दोष परिहार सामग्री हान हुए भी वग भास्कर में कुछ घटनाओं का प्राये पीछे हाना और कुछ घटनाओं की निधियां शुद्ध न होना बताया जाना है— जो गही है । पर इन त्रुटियों को कवि ने स्वीकारा हुआ है और यह लाचारी से हुआ है ।

अन्त योम लग अन्तरमु विगुर्वापर बोध ।

तिनमो अन्तर अधिक तब, बतन ममय विरोध ॥

कवि ने योम अरम का अन्तर स्वीकारा है— पर अन्त कई जगह इससे अधिक वा भी है । यह अन्तर अनिच्छ परित्र तक कवि ने माना है । घटनाओं के व्यतिरिक्त के सम्बन्ध में उमन कहा है—

कहि स्वकरु अपरेहि कहै कहैक अन्तर काल ।

कहै अन्तर ममकाल कहै पै सम्भव महिपाल ॥

कहै पहिली पीछ कहैक, पीछ हुव पहिलै सु ।

बडि प हापन योस सो, हाडजुपुबन है सु ॥

परन्तु हाडा बरीसाल व चरित्र में बूनी पर आक्रमण करने वाले मालव के सुलतान होशंग की जगह सूयमल्ल न वाजबहादुर लिख दिया है जा अवश्य ही ठीक नहीं है । काल क्रम और घटना व्यक्तिक्रम सम्बन्धी सामान्य ऐतिहासिक कुछ भूलों के पाये जाने पर भी देग व अनेक विद्वानों ने वस भास्कर की ऐतिहासिकता को मुक्त कठ से सराहा है । वग भास्कर की टीका करने वाले उद्भट विद्वान् श्री कृष्णनिह न सूयमल्ल को निष्पक्ष, निष्पृह मत्पवत्ता और अद्वितीय लेखक माना है । भूमिका भाग में उन्होंने सूयमल्ल की भूरि भूमि प्रशंसा की है । महामहोपाध्याय श्री श्यामलदान न भी सूयमल्ल को आदर-पूर्वक स्मरण किया है ।

इतिहासक मध्य विद्वान् डा श्री मुरालाल शम एम ए डी लिट ने कोटा राज्य के इतिहास में लिखा है कि "स० १८९७ में सूरजमन मिश्रण ने वस भास्कर नामक बूंदी राज्य का काव्यमय विस्तृत इतिहास लिखा जिसमें प्रसंगवश कोटे के कई नरेशों का उल्लेख है । यह ग्रन्थ चार भागों में विभक्त है और इसमें कुल ४०४३ पृष्ठ हैं । ऐतिहासिक गोप की दृष्टि से इसके प्रथम दो भाग तो विशेष महत्त्व के नहीं हैं परन्तु तृतीय और चतुर्थ भाग बूंदी कोटा अथवा राजपूताने के इतिहास के

लिए ही नहीं, बल्कि भारतवर्ष के इतिहास के लिए भी उपयोगी सामग्री म भर है। काटा राज्य के इतिहास में सम्बन्ध रखने वाले इस ग्रन्थ के अधिकांश स्थान अतिव्यापक और प्रामाणिक हैं। डाक्टर साहब ने सूयमल्ल और टाट की प्रामाणिकता को वश भास्कर के गुजन की शर्तों के प्रथम में एक बार फिर गणना करने में दुहराया है।

इसी प्रकार प्रसिद्ध इतिहास लेखक श्री पृथ्वीसिंह महताब भी हमारा 'राजस्थान' ग्रन्थ में पृ. २६४ पर लिखा है—

'वनत टाट का ग्रन्थ प्रकाशित होने ( १८३५-३६ ई० ) के बाद अपने मनुके इतिहास को हिन्दू-मुस्लिम संघर्ष के रूप में दर्शन और उसी रूप में उनकी व्याख्या करने की एक नयी प्रवृत्ति ने जन्म लिया था। कोटा (?) के कवि भूरजन द्वारा वशभास्कर नामक एक बृहत् काव्य-इतिहास की रचना ( १८३५-६८ ) इस नयी प्रवृत्ति के साहित्य का एक अच्छा नमूना है।

इस तरह हमने देखा कि सूयमल्ल की प्रभावशालिता ने भारतीयता-राष्ट्रीयता की भावना को लेकर साहित्य क्षेत्र में पदापण किया था। चाहे इतिहास हा चाहे कोई दूसरा विषय संघर्ष करि का दृष्टिकोण व्यापक राष्ट्रीयता का रहा। उस रामसिंह की इसी कारण प्रशंसनीय लगे क्योंकि यह साहब का साल, विद्या विदधि का प्रालम्बन थे। उसके लिए उसने कहा—

तुही कलि भूपन का मिला दिन,  
तुही सरि साहन सौं भुविलन।

रेखाङ्कित वाक्य विचारणीय हैं। साहब का साल अर्थात् अग्रज नामका के हृदय का शल्य और 'तुही सरि साहन सौं भुविलन' अर्थात् विदेशी शासकों द्वारा परतंत्र हुए मातृभूमि को मुक्त कर मुक्ति दिलाने वाला। स्पष्ट ही ध्वनि है कि स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय सहयोग करने वाला राजा रामसिंह ! चूंकि राजा ने ऐसा कुछ जाहिर तौर पर नहीं किया था अतः यह व्यंग्य उसे वाय क्षेत्र में क्रियाशील होने के लिए था। अस्तु।

### सूयमल्ल की बहुज्ञता

जैसा कह चुके हैं सूयमल्ल के व्यक्तित्व का एक पक्ष उसके बहुज्ञ पंडित का भी है। इस विषय में तो कवि के लिए जितना कहा जाय कम है। वश भास्कर ग्रन्थ के प्रथम भाग में कवि ने विविध विषयों की जानकारी विषय प्रवक्तक आचार्यों द्वारा दिलाई है। राक्षसों से प्रताड़ित और प्रतिकार करने में अक्षम आचार्यों ने ब्रह्माजी के मकट से छुटकारा पाने का उपाय पूछा है और इसी सन्देश में आचार्यों का ज्ञान-कवि के द्वारा-अपनी रचना में उठेरा गया है।

चाहे विप्लवाचार्य द्वारा प्रवर्तित छंद शास्त्र हो चाहे महर्षि गौतम का वाग शास्त्र, पतंजलि का योग हो चाहे पाणिनि का व्याकरण-सभी साहित्यिक भूषा में बड़े प्रस्तुत हैं। जैमिनि के कम-मिद्वान व्यासजी के तत्व (अध्यात्म) पान कीस्त ने

गकुन शास्त्र और कणाद, शालिहोत्र के अनुमिति, पशु विद्या की भी मध्यक चर्चा का भास्कर म है। इतना ही क्यों, कुत्तो, बकरियों, गायों और बलों के शुभाशुभ लक्षण, भूमि परीक्षण, जल गोधन आदि विषयों का उल्लेख भी यथास्थान हुआ है। कवि का शास्त्र ज्ञान, उसकी शैली निपुणता, उसका गहन अध्ययन का भास्कर की रचना में सबत्र बिभरा है। कवि की बहुगता का यथाय जान तो उसकी समग्र रचना को पढ़ने से ही हो सकता है। हाँ, उसकी कुछ वानगी म छोड़ा अनुमान लगाया जा सकता है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है।

भगवान परशुराम म ध्रूव निगाना साधन की विधि का उल्लेख इस तरह किया है—

‘पूरक मी मर ऐंचिपुनि, कुन सौं धिर धापि ।

सह हृष्टति छोरयोनुमर, ब्रम च्युति ह्यं न कदापि ।

शाङ्गर मुनि ने बँल के अक्षरे बुरे होने की पहिचान बतात हुए कहा—

‘पग उठात जिमि पवतें युम यह भार वहैन ।

हृष्णसारनिभ, भस्मनिभ, वृक्षडिग धूल रहै न ॥

कीचड से बचकर चलने वाला—उसम डरने वाला—बँल भार वहत कर सकने म असमथ होता है। हृष्णसार भृग या भस्मी के रग का बँल भी समृद्धिकारक नहीं होता।

भाषाय भरन न ब्रह्मा से निवेदन किया कि आपने रागसो की बिना परिणाम मोके वरदान दिया है। परिवृत्त धलकार मरग आपने उर देकर दुखो को धामप्रित किया है। विष वृक्ष, जिसे आपने बोया तथा सीचा है मरगा कय तब सफल होने से क्या रहेगा ?

‘बयो वहाँ लमि नहिं फलें तिवमान विरव रक्म ।

धलकार परिवृत्तजिमि दे वर लीहाँ दुख ॥’

इसी प्रकार साहित्य में अधिधार्य में लडयाय तथा व्यंग्याय का उत्तरोत्तर उत्कृष्ट व्यक्त करने के लिए उसने बताया है—

‘विरत भये अधिधादिज्यो ललत व्यजनादोर’

आयुर्वेद औषधि विज्ञान में पारे का बडा मडूत्व है। इसी बात को सूयमल्ल ने इस प्रकार व्यक्त किया है—

‘धम प्रवतन दुष्ट दमि इतर अप्य सम कौन ?

ज्यो औषध भ्रूलोक में पारद सम दूजोन ।’

विषम—ज्वर तथा उदर कुमिनागक औषधियों को क्रमश निम्नलिखित तरह व्यक्त किया गया है—

साधु भक्त सबही भजे बडत खलन को दौर ।

अमृता मधु धन हरतें ज्योविषम ज्वर घोर ॥

उपसम रूप उपाय कछु हरि घनामय होन ।

होहु अत्र कृमि खलन पर, तत्र राजिका लीन ॥

इसा प्रकार अथ अनेक ऋषियो तथा महर्षियो के सिद्धांतों का कथन प्रथम में है। सवतरूपोपक कुरंग द्रव्य निर्माण विधि तक का वर्णन भी वहाँ पाया जाता है। बवि की बहुज्ञता और पान्थिय की देखकर बड़ा आश्चर्य होता है।

### सूयमल्ल कवि

सूयमल्ल जसाकि पूय म पह भाय ह सिद्ध वाणी के रसवादी सभ्य महाकवि है। वीररस उनकी साधना का मुख्य मंत्र है। यद्यपि रचना में प्रमत्तानुरूप मुख्य रस के पोषक तत्त्व के रूप में वीररसतर रसों का भी समावेश देवन में आता है पर प्रधानता वीर रस ही की है। वीर रस का स्थायी भाव उत्साह है और दुःखी सञ्चार जीवन के युद्धतर क्षेत्रों में भी देखा जाता है और इस प्रकार धमवीर, सत्यवीर धीरवीर दानवीर आदि के स्वरूप स्थिर होते हैं। वश भास्कर में भी इन स्वरूपों के दर्शन होते हैं। परन्तु मुख्य रूप युद्ध वीर ही प्रथम में पाया जाता है।

वीर रस का आत्मभ्यन क्षत्रु हाता है। आश्रय के उत्पन्न की यज्ञना के लिए गानु के शीघ्र प्रताप, शक्ति और साधन सज्जा का वर्णन होता है। इस प्रकार वीर के गौरव और दप की अभिव्यजना होती है। युद्ध दुःखी चारणादि की उमह वद्धक उत्तिया इसके उद्घापन विभाव है। रण कौशल दिखाने वाला युद्ध की बात सुनते ही उत्साहपूर्ण हृष से भरजाने वाला वीर इस रस का आश्रय होता है। हृष रोमाच, बारबार शस्त्रों पर हाथ जाना नेत्रों में युद्ध के लिए तत्परता का भाव आदि वीररस के अनुभाव हैं। हृष मद मस्ती निश्चितता—इसके सञ्चारी भाव हैं। घटनाओं की विविधता और व्याप्ति की दृष्टि से युद्ध वीर में सभी वीरत्व के भावों का समावेश हो जाता है। वश भास्कर प्रथम सभी प्रकार के वीर चित्रों का सुन्दर सङ्ग्रह है अनूठा एलबम है।

कुछ चित्रोपम वर्णन प्रस्तुत है। माडू के सुलतान ने बूंदी पर आक्रमण किया है। बरीसाल ने सीमित साधन होते हुए भी मुकाबला करना साध तयारी की है। माडू का बेगुमार सेना का प्रतिरोध करन, बूंदी की अल्पसंख्यक कितु वीर दुकड़ी उपस्थित है। मृत्यु सामने देख राजा ने बूंदी शहर के दरवाजे खोल दिये—

मरन महीपति अखिल इम अरर खुलाय आय ।'

और फिर—

नमात भू हमस्ता हल्ल वगिसल्य निक्कस्यो ।

खुलाइ द्वार क किबार आजि फार टरतरयो ॥

कस दुता अड अग द्रग रग दडते ।

चले तुरग ज्यो कुरग यो मलग मडते ॥

इस पद्याग में आश्रय हाहा वीर में आत्मभ्यन मुसलमानी मना न भिडन का उल्लेख

हृदय, देखा जा सकता है। घोर घागे जमा रोमांचकारी युद्ध हुआ, उसकी भूतक देखिए—

झरी कृपान यो खनाकि ज्यों भूतकि भूतनरी ।  
हरै प्रवीर प्रीन हीर होत चीर डलनरी ॥

×

×

बरत राज धरजराज मिच्छराज पै ब्रम्हो ।  
दुराम तास दति खास पत्रहास तै दम्हो ॥

समस्य तस्य हृषिप हृष्य धाजिमत्प सप्रस्यो ।  
रक्ष्यो दुमग्न स्वग दे बरग्न लग्न जोरस्यो ॥

भई मुष्टिनि मुष्टि है मिराधि वट्टि यो भली ।  
नगी कि यान बान प्रान कान ब्याल कु डली ॥

कटन मुष्टि छुट्टि रारि चीहपारिमो करी ।  
बियो स्ववाह घोर गाह भो निगाह सो करी ॥

बैरासाल के खडग से हाथी की जिसमे उसने घोड़े का सिर पकड़ रखा था— सूड कट गई है। मुनतान का हाथी मेशान छोड़ भागा है सिर पर भारी चोट आई है। मदेह घोर उत्प्रेक्षा प्रलंबारी की समृष्टि युक्त वणन बड़ा मजबूत बन पड़ा है। भयाल युक्त घोड़े की गदन का हाथी द्वारा मूड स पकड़ने की कवि ने, साप द्वारा अपने बच्चों का बचाने के उपक्रम के रूप में देखा है। वणन घागे बड़ा विस्तृत है। पड़ते समय तलवारों, बरछों घोर भाला की टकराहट में उठने वाला स्वर कानों में भरता सा लगता है। बैरीसान, जावदू घोर निम्मदब के युद्ध बेजोड़ हैं। बैरीसाल के सिर के चार हिस्से हो गये हैं उसने उभे कमरदब में बाध लिया है। सिर कटने पर उसका स्वयं लडता है। बहोत होकर गिरता है पर तु थोड़ा बेत घाने पर वह फिर लडता है। जावदू ने भूमि लार्थों से पाट दी है— कटे हुए मिरों से युद्ध भूमि पर मतीरों का खेत जान पड़ती है।

मलेच्छ मुड पट्टिके मतीर खेत की मही ।'

युद्ध वणन मूयमत्ता न बढो ही प्रवाहमयी भाषा घोर सजीव गली में प्रस्तुत किया है। भलाउद्दीन बिलजी द्वारा चित्तौड़ पर धरा डालकर युद्ध करने घोर सत्रिधो द्वारा प्रतिरोध का रोमांचन वणन हो या उम्मेदसिंह द्वारा दबलाना गाव के समीप नदराम खत्री की विशाल याहिनी से टकराने का दृश्य प्रस्तुतीकरण, मल्हार राव हालकर और जयपुर की सना क बीच हुए वगरू का युद्ध हो या गनु गत्य हाडा की दारा के सहायक रूप में लड़ी लडाइ सवन्न मूयमल्ल के वणन वीर—रस वणन करत चलते हैं।

मराठों की सेना का सामना करने की निकलती जयपुर नरेश ईश्वरीसिंह की सेना का एक दृश्य है—

चावन धरण तै सरस्वती की सरवस्व,  
धदिजा की वस्त्र ज्या दुसासन के भरतै ।

छद्म छप्पई तै ज्यो प्रपचित प्रगर पुत्र,  
 बीज बहुधा त वर मुँ धारिपर त ॥  
 धारिधि तै बीधि, मारतइ तै मरीधि,  
 तरस तरगा स्रोत गंगा गिरिपर तै ।  
 गोनम त 'घाय राजराज तै ज्यो राय एगें—  
 क्रूरम कटक कठयो जयपुर नगर त ।

धीर फिर बूढ़ी नरेश उम्मेदसिंह धीर महाराजा के भागिय भाषवसिंह जो मराठे  
 सना के साथ उपस्थित थे धनु पर बैस ही टूट पड़े जैग कए पर धनु न न भाङ्गना  
 किया था—

'करिष्यजाम कुम्भयै पिते प्रचारि परय व्हे ।'

एक धीर तोप-युद्ध प्रलय का शय उपस्थित करता है तो दूगरी धीर पर  
 सवारो के हाथो के करतय दिखाई पडते हैं । छोटे कटत हैं, पैदल छत्ते हैं धीर हाथियो  
 की कणिकामें कट कर उछरती हैं ।

वितड वाटिकान दत हस्ति दत उपरें ।  
 किरै सु मु भ बोहले पत्ताडु घट निक्करें ॥  
 कटत सु ड कक्करी प्रवृत्ति पाय पीन कै ।  
 विलासनास ईपिका र आलु असि कीन कै ॥  
 कटिल्ल कणिकावली भटा हूदावली भय ।  
 धरिष्ट के अपष्ट व द ककोम कद उनय ॥  
 वनै धरी पलास कान धनु नागवल्लरी ।  
 कलज पीलु पणिका कसेर तोरई करी ॥

इस पचास में हाथियो के दात, हथ कु भस्थन मू डें, नक्का में कटती दिखाई गई हैं  
 धीर उन पर वाडियो से उखाड़े जा रहे मूले, तोड़े जा रहे बैगन बिलरे प्याज,  
 ककडियो की उत्प्रेक्षायें कवि न की है जो बहुत ही सुन्दर बन पडी है ।

धीर रस का उदय धीर उदय एव उनकी वधाधि का क्षेत्र बडा ही विस्तृत  
 है । अयाय होते देखकर नारी या निबल व्यक्ति को अपमानित होना की स्थिति आने  
 पर, धीर मौन नहीं रह सकता फिर चाहे अयाय करने वाला उसका कितना ही  
 धार्मीय क्यों न हो उसका उस पर कितना ही एहसान क्यों न हो । बूढ़ी पर जयपुर  
 का अधिकार महाराजा जयसिंह ने अयायपूर्वक उसको कमजोर समझ कर लिया है ।  
 उम्मेदसिंह ने बहुत प्रयत्न किया कई लडाईया लडी पर जयपुर के पते में उसे नहा  
 छुडा पाये धीर धात में मराठो से सम्बन्ध स्थापित कर उसे मुक्ति दिलाई । मराठो का  
 यह उम्मेदसिंह पर भारी एहसान रहा । पर मल्हारराव के पुत्र खडेरराव ने ईश्वरीसिंह  
 के उहूर लाकर मरने पर जब उसकी रानियो को अपने घर में डालकर ऐश करने के

विचार व्यक्त किये तो उम्मेदसिंह का स्वाभिमान इसे महन नहीं कर सका, उसने मल्हारराव से कहा—

हम सिर तुम एहसान किय, इन पर डारि चपेट ।  
जा समझहु कृतघन हमहि तो बुदी यह भेट ॥  
यह भनीति जो नीति करि, मनै हमहु प्रमत ।  
अखिल दिखावै अगुलिन, विखविख करिवत्त ॥

×

×

अधरम करि लैवो उचित, पाक दमन परवीन ।

युद्धवीर के प्रतिरिक्त उम्मेदसिंह मे दानवीर, धीरवीर और धमवीर आदि कई सात्विक गुणो मे युक्त वीर स्वरूपो का समावेश हुआ लगता है । वश भास्कर मे बीसियो छोटे बड़े युद्ध-प्रसंग हैं । सभी मे कवि ने मौलिक शैली मे युद्धो के उनकी तैयारी के जीवत चित्र खड किये हैं और सबत्र वीर रस और कही कही रोद्र रस मिश्रित वीर रस धारा प्रवाहित की है जो पठनीय है ।

वश भास्कर मे काव्य का कलापक्ष

काव्य के कला पक्ष के अ तगत भाषा, छन्द अलंकारादि आते है । वश भास्कर मे अनेक भाषाओ का प्रयोग हुआ है, पर युद्धो का वणन 'प्राया ब्रजदेशीया' प्राकृति मिश्रित भाषा' मे है और बडा ही प्रवाहमय है । गद्य भी बडा ही सुंदर है और अधिकाश सचरण और अलंकृत है ।

त्रय मे छन्द मात्रिक और वर्णिक दोनो हैं । सङ्कृत तो वर्णिक छन्दो मे है, पर एक दो स्थाना पर हिन्दी मे भी 'शादूलवित्रीडित' छन्द रचना मिलती है । छन्दो का प्रयोग सबत्र युद्ध उनका वजन तुलाहुआ और रसानुकूल है । कुछ अचलित-कम प्रचलित-छन्द भी है जा सहज सुपाठ्य नहीं है । पर एमे कम ही हैं । अलंकार, रचना मे स्वाभाविक रूप मे आये हैं, वे रचना को बोधित नहीं करत । रचना वैमे अधिकाश मे अलंकृत है और प्रवाहमयी है । अर्थालंकार शब्दालङ्कार और उभयालंकार-सभी प्रकारके अलंकार वश भास्कर मे सहज रूप मे प्रयुक्त हुए हैं । कुछ एक अलंकारो के नमूने देखिए—

१ गज्ज के धरियार जिमि वज्जन लगयो लोह । (पूर्णापमालकार)

२ मूरिजन मूरति छ तकन की जानै जाहि  
मूरजन जानै खुरली मे बहूतै बढयो ॥ (उल्लेख)

३ हाहा रहै वाके यह हाहा देश मे न राख  
बह सतसत्र यह अगणित सत्रधाम ॥ (व्यतिरेक)

४ रन जिमि मूरन कौ मुदिर मयूरन कौ ।  
विधु विरव सूचन कौ कज्ज को कठोर घाम ॥ (मालोपमा)

५ जहै केतन विच कप चक्रवाकहि वियोगवस ।  
बधन सर बायीन रहत कनव मृगयावस ॥ (परिसन्धा)



६ दिसिदिस देमि दीडिपपनपताय मनि,  
भूपणदिसाय मजु रिभवविगाना ज्यो । (परिमर्या)

× × × ×

निसजनिसर्ग नृपराम की मगुनि साधी  
विताकर यदन नुनार्य वाराना ज्यो ॥ (भ्याजस्तुति)

इसी प्रकार उत्प्रेक्षा, रूपक प्रतिपादित भाषि धलारारों का प्रचुर प्रयोग प्रथम प्रसिद्ध है। सागरूपको का युद्ध-वर्णनो म सुन्दर प्रयोग है। प्रतीय और प्रतीकों के बन पर उभरने वाली रचनातिगधोक्तियाभी अच्छी बनपटी है। एक उदाहरण प्रस्तुत है—

सिंहनि धविगय गिह मो जित गावहु धनधन ।

जिन हृत्थिन कृमन जनन ते धायन धुमडन ॥

जिनहित लघन लपि व गदा धोरन मग ।

सहज ते धायत गुँ वारन भद्रन वग ॥

यही सिंहनि 'गिह व्रमग महारानो धोर वृन्नी नरग उम्मगिह क प्रतीक है धोर 'वारन भद्रन वस उमडती जयपुरी क्षत्रिय सेना के।

वश भास्कर, धनुशाम, यमक इत्ये जस गङ्गालारो का ता कोप ही है।

सारंग यह है कि वश भास्कर राष्ट्रीय भावनामा म धोतप्रोत सुमनन महा कवि की भाव पक्ष धोर कलापक्ष-रानो दृष्टियो से उरदृष्ट रचना है। हमम कवि की धद्मुत प्रतिभा, असीम ज्ञान, निष्पक्ष इतिहास धोर धतूठी गैली क धान-दायो दशन होते है। कवि राष्ट्रीय हित म वीरता के ज्ञान का प्रतिपादी है। इम दृष्टि मे वीर सतसई से वश भास्कर ज्यान्त दूर नहीं है।



## राजस्थान के वीररमावतार कवि सूर्यमल्ल मिश्रण

डॉ० रमाकान्त शर्मा

वीररमाप्नावित राजस्थानी साहित्य के सम्बन्ध में १८ फरवरी १९३७ को राजस्थान रिसर्च मागपटी, कनकता के प्राण में विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने समापति-पद से भाषण देना हुआ कहा था

‘भक्तिरत्न का काव्य तो भारतवर्ष के प्रत्येक साहित्य में किसी न किसी कोटि का पाया ही जाता है। रामा-वृष्ण का लेकर हरेक प्रांत ने साधारण या उच्चकोटि का साहित्य निर्मित किया है लेकिन राजस्थान ने अपने रत्न से जा साहित्य-निर्माण किया है उसकी जोड़ का साहित्य और कहीं नहीं पाया जाता और उसका कारण है राजस्थानी कवियों ने कठिन सत्य के बीच में रह कर युद्ध के नगाडों के बीच अपनी कविताएँ बनाई थीं। प्रकृति का ताण्डव रूप उनके सामने था। क्या आज कोई कवि अपनी भावुकता के बल पर फिर वह काव्य निर्माण कर सकता है? राजस्थानी भाषा के साहित्य में जो एक प्रकार का भाव है— जो उद्वेग है— वह राजस्थान का स्वाम्य अपना है, वह केवल राजस्थान के लिये ही नहीं सारे भारतवर्ष के लिए गौरव की वस्तु है।’ कवीन्द्र रवीन्द्र की उक्त वाणी की साधकता को शतप्रतिशत प्रमाणित करने वाले कवियों में वीर प्रस्विनी वसुधरा राजस्थान के कवि सूर्यमल्ल मिश्रण का नाम निश्चित रूप से शीघ्र है। रणखेती रजपूत री’ की शान को सिखलाने वाले तथा ‘इला न दणी भापणी के स्वाभिमानी गुह मन्त्र को फूटने वाले कवि सूर्यमल्ल का जन्म चारणों की एक मिश्रण शाखा के एक प्रतिष्ठित कुल में वि. स. १८७२ में बूढ़ी,

राजस्थान में हुआ। इनके दादा बदन कवि और पिता चण्डीदान की बूनी दरवार के प्रसिद्ध कविओं में गणना थी। कवि स्वयं निम्नता है—

बदन सुकवि सुत कवि मुकुट, धमर गिरा मतिमान।

पिंगल द्विगल पटु भय पुरधर चण्डीदान ॥

इही चण्डीदान (पिता) और मयान चाई माता की सनान से बहिराज सूर्यमल्ल मिथ्याग। आप साहित्य सरोज के कवि, यद्भाषा के पूर्ण पण्डित, तबदाश के मूर्तिमान स्वरूप, इतिहास के प्रसिद्ध गाता, चौहू विद्या-निधान, चौमठ कता निपुण और भीमासा, काव्यशास्त्र, योगशास्त्र, याय, व्याकरण, पानकाव्य, गानिहोत्र, गानु शास्त्र आदि के तलस्पर्शी विद्वान थे। कवि के बग-बुदा का ब्यौरा हम प्रकार है—

ईश्वर  
|  
मावलदास  
|  
भूपाल  
|  
रामदास  
|  
भानद  
|  
नवलराय  
|  
चतुभुज  
|  
बदन  
|  
चण्डीदान  
|  
रविमल्ल (सूर्यमल्ल)

सूर्यमल्ल बचपन से ही असाधारण प्रतिभा सम्पन्न थे। कहा जाता है कि पांच बय की आयु में ही कवि को धमरकोष के तीनों काण्ड कठप थ और सात बय की आयु में ही इन्होंने काव्य रचना प्रारम्भ कर दी थी। २० बय की आयु में तो आप 'राम रजाट' नामक पद्य-ग्रन्थ बना लिया था जिसमें बू दी के राजराजा रामसिंहजी के गिकार और दौर का बखान है। शिशु सूर्यमल्ल पर अपने माता-पिता का असीम प्री अटूट प्रभाव पडा था। बस भास्कर में कवि लिखता है कि अपने ब नमस्कार करता हूँ जिनके शिक्षानुष्ठान से मैं जो

अथवा बदमि भवानाचण्डीदानौ  
वच्छिदानुष्ठाननामया मनुष्यायुषते

कवि न घपन जीवन म ६ विवाह बिय जिनका नामोल्लख वश भास्कर मे मिलता है। कवि की पत्निया के नाम थ— दीला सुरजा, विजयिका जसारू, पुष्पा और गोविन्दा। इतने विवाहोपरात भी कवि को सतान सुख प्राप्त नहीं हुआ। कहते हैं सूर्यमल्ल न एक पुत्री हुई थी जिसे पिता न प्रमीम प्यार न ही मृत्यु का नीद सुला दिया। मरण कवि उस अत्यन्त अन्धावस्था म खिलान के लिये जोर जोर स झुला रहा था उसी स चञ्ची का प्राणा न हा गया। राजस्थानी साहित्य के ममज विद्वान डा मोतीलाल मनारिया कवि सूर्यमल्ल मिश्रण के व्यक्तिगत जीवन पर प्रकाश डालते हुए लिखते हैं कि— सूर्यमल्ल ब विनासी, मरण तुनुव मिजाज एव स्वतंत्र प्रकृति के पुरुष थे और घपन व्यवहार म इनन रूखे थे कि लोग उनके पास जाना भी पसन्द नहीं करते थ। य दिनरात शराब न नशे मे घुम रहते थे और इन बात की कल्पना भी नहीं कर सकते थे कि बिना मदिरा-पान के भी कोई मनुष्य ठीक तरह न घपना काम कर सकता है। प्रवाद है कि जिस समय इनकी एक स्त्री का देहान्त हुआ उस समय भी ये शराय पीकर उसकी दाह-क्रिया के लिये घर म जाहर निकले थे और कविता बनाने लगे थे। सूर्यमल्ल का जीवन ही शराब पर निर्भर था। पर फिर भी नशे मे य इतने उमत्त नहीं हा जात थे कि शरीर की सुध कुछ ही न रह। इतना ही नहीं, नशे की हालत म इनकी कल्पना शक्ति और भी मजग हो उठनी थी और दो भादमी जो इनके दाहिनी और बाईं तरफ बैठे रहते, बडी कठिनाता मे उनकी उम समय की कविताओं को निस्त पाने थे।'

राजस्थानी कविया मे सूर्य न समान भामित होने वाच कवि सूर्यमल्ल मिश्रण का स्वगवाम बू दी म ही सवत् १९२५ मे (मुगी त्वीप्रमाण के मतानुसार) हुआ। डा सुनीति कुमार चाटुजा के अनुसार धारावाहिक रूप स जा साहित्य-परम्परा मधुसूत-काल स हजार ५८९ तक चली आई उस ही सूर्यमल्ल ईसा की बीसवी शती के द्वितीयाध तक पहुँचा कर विदा हो गये। घपन काव्य और कविता को Lay off the Last Ministrel बना गये और वे स्वयं बने The Last of the Giants अलवर के सुप्रसिद्ध कवि रामनाथजी कविया न कवि के स्वगवास पर निम्नलिखित भरमिय कह—

मिलता कासी माह कवि पिढता सोभा करी ।  
 चरचा देवा चाहि, सुरग बुलाया सूजडो ॥  
 देस कविद हुआह, रहिया सो आछा रहो ।  
 सामद गुण सूजाह तो मरता बिनस्यो तनि ॥  
 थई मृत्यु घारीह, कुण मेरे करतार सू ।  
 सतम लगी खारीह सुणता काना सूजडा ॥

**समूल रचनाए एव उनका वैशिष्ट्य**

भा शक्ति के प्राराधक और देवी सरस्वती के पुजारी कवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने अनेक ग्रंथ-रत्न राजस्थानी साहित्य को प्रदान किये। इनके द्वारा रचित ग्रंथो की

सख्या घाट मानी जाती है, जिसे नाम हैं— (१) वग भास्कर (२) बतवर्द्धन  
(३) छत्रोमयूख (४) वीर सतसई (५) गमरजाट (६) मतीरामा (७) पुत्रर शक्ति  
सवैये प्रादि (८) धातुरूपावलि ।

वगभास्कर तथा वीर मतसई इनकी सब प्रसिद्ध रचनाएँ मानी जाती हैं।  
डा० सुनीतिपुमार चाटुर्ज्या ने वगभास्कर की तुलना सफ्टा के 'महाभारत' से की है  
तथा 'उम विद्याल एतिहासिक महाकाव्य की मजा में अभिहित किया है। सरल  
नाहुटा लिखत है कि 'उनीसवीं शताब्दी के अन्त के एतिहासिक काव्यो में महाकवि मूल  
मल्ल का वगभास्कर' अत्यन्त प्रसिद्ध वीर महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इनकी वार सतसई में  
७०० दाहा के स्थान पर केवल २८८ दाहा ही मिलते हैं किन्तु हिन्दी वीर रचयिता  
साहित्य की सतसई परम्परा में उस अग्रणी सतसई का भी अपना अग्रगण्य स्थान  
स्थान है। कुछ आलोचकों ने वीर सतसई को 'अपूर्ण वीर मतसई' या 'वीर दाहावनी'  
कहना अधिक युक्तियुक्त माना है।

कविराजा सूर्यमल्ल मिश्रण की वीर सतसई के बारे में लिखा गया है कि  
वीर सतसई' इस युग का सत्यष्ट वीर रसात्मक ग्रन्थ है। यह समस्त ग्रन्थ सरल एवं  
प्रसादगुण युक्त प्रवाहमय राजस्थानी में रचा गया है। लोकप्रियता की दृष्टि से सूर्यमल्ल  
की वीर सतसई का सर्वाधिक महत्व प्राप्त है। सकीएँ भावों से पर सावजनीन भावों  
का चित्रण वीर मतसई की एक अद्वितीय विशेषता है।

'स्वल्पा च मात्रा बहुला गुणद्वय की उक्ति इनका काव्य में पूर्णरूप में चरितार्थ  
होती है। स्वल्पभाषिता तथा सरमता के गुणों के कारण कवि की कृतियाँ सदैव स्मर  
णीय रहेगी। कवित्व शक्ति कवि की रंग रंग में बसी हुई थी। इस सम्बन्ध में कवि का  
वाच्यकाल की एक राक्षक घटना पर प्रकाश डालना अप्रसंगिक नहीं होगा। कहते हैं कि  
एक बार सूर्यमल्लजी जब सात ही वर्ष के थे उनके पिता दरबार में जाते समय उनका  
बह गया कि हम पीछे आते तब तक एक गीत (डिगल का एक छन्द विनोद) बना  
रखना। सूर्यमल्लजी खेलकूद में इस बात को भूल गये। पिताजी ने वापिस आने पर  
पूछा तो कुछ स्तब्ध होकर कह दिया कि हाँ, बना लिया। उस गीत का मुना कवि  
कहने पर वह प्रसिद्ध गीत उस समय बोलते गये जिनकी अंतिम पंक्ति निम्न  
निम्नित है—

साहे जेण बेला धूज सातू ही काफरी सूबा ।

वाहे जेण बेला धूज सातू ही बिनात ॥

इसी वाक्यकवि ने प्रागे चकर 'वग भास्कर' के रूप में अपनी प्रथम मयूकों  
का परिचय दिया और उनकी गणना ३० के पसिद्ध ५ रत्नों में हुई—

आगानने जीवणो नानभाडी दण्डी चण्डीदानज सूर्यमल्ल ।

गा नाग ते तत्पमीप जमीत (हमीत) भूमत रत्न पचरत्नानिबु प्राम् ॥

कवि की इतिहास चेतना

साहित्य-ममता एवं इतिहासविदा ने कवि सूर्यमल्ल मिश्रण को इतिहास-वेत्ता

साहित्यकार के रूप में भी सम्मानित किया है। बूदी व राजवंश के ऐतिहासिक दस्तावेजों के रूप में वग भास्कर' एक बहुत बड़ा गद्य-पद्य-ब्रह्म मौतबर सत्यवक्ता कवि चारण स सम्बोधित किया है।

इतिहास की दृष्टि में 'वग भास्कर' कितना सही है, इस विषय में विद्वानों में मतभेद है। डा गौरीशंकर हीराचंद घोषा न लिखा है कि सूयमल्ल ने वश भास्कर नामक विन्वृत पद्यात्मक ग्रंथ लिखा जिसे मंत्र दिए हुए चौहानों तथा हाडों के इतिहास का गद्यात्मक सारांश बूदी के पण्डित गंगासहाय न वश प्रकाश' नाम से प्रसिद्ध किया है, वही बूदी का इतिहास माना जाता है। सूयमल्ल एक अच्छा कवि था, परन्तु इतिहासवत्ता न होने से उसमें उक्त पुस्तक में प्राचीन इतिहास भागों की रचना सही लिया है। उसमें सैकड़ों वृत्तिका पीडिया भरदी है और विस १५८४ (ई सन् १५२७) तक के सब मवत् तथा ऐतिहासिक घटनाएँ बहुधा वृत्तिका मिली हैं। उस समय तक का इतिहास लिखने में विशेष खोज की हो ऐसा पाया नहीं जाना। कवि का लक्ष्य कविता की ओर ही रहा प्राचीन इतिहास की विद्युद्धि की ओर नहीं।

पटभाषा ममय रवि सूयमल्ल मिश्रण निश्चि। रूप में विद्युद्ध इतिहासकार नहीं था। एक साहित्यकार से पुष्ट इतिहास की कल्पना भी नहीं की जानी चाहिए। किंतु जो कुछ भी उन्होंने रचने का और इतिहास के मर्ममिश्रण से दिया है उनमें इतिहासकारों के लिये अपने इतिहास सूत्रों के वातायन खोल दिए हैं। बूदी नरेश महाराज राजा रामसिंह (स १८७८-१८८५) की आज्ञा से कवि न सवत् १८८७ में इस ग्रंथ को लिखा। इसमें प्रधानतः बूदी राज्य का इतिहास वर्णित है पर प्रमगवग राजस्थान की दूसरी रियासतों का इतिहास भी थोड़ा बहुत आ गया है। कवि कृष्णजी बारहट न इसकी टीका की है और टीका सहित ४३६८ पृष्ठों में समस्त ग्रंथ छपाकर तैयार हुआ है।

उपरोक्त टीकाकार के अनुसार ऐसा सत्य वक्ता प्रचावधि नहीं हुआ है। किन्तु मुशा देवीप्रसाद कवि मिश्रण की मत्स्यवादिता पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि इन्होंने महाराज राजा रामसिंहजी की आज्ञा से वग भास्कर ग्रंथ बनाना प्रारम्भ कर दिया था जो इनके जीवन पय तक समाप्त नहीं हुआ जिसका कारण बारहठ कृष्णसिंहजी, जिन्होंने वग भास्कर की टिप्पणी की है ऐसा कहते थे कि जब महाराज राजा साहिब न सूयमल्लजी से अपने वश का इतिहास बनाने को कहा था तो उन्होंने निवेदन किया था कि मैं आपकी आज्ञा में बनाऊंगा तो नहीं पर तु जो सब बात होगी वही लिखूंगा। आप बुरा न मानें। जब राव राजाजी ने यह बात मानली तो यह ग्रंथ रचने लगे और अगले राजाओं के गुण प्रशंसा जमे कुछ निश्चय होते गये लिखते गये। जब रावराजाजी की वारी आई और उनके गुणप्रशंसा भी लिखे गये तो उन्होंने इनसे कहा कि आपन मेरे बाप-दादा-परदादा वगैरह के जो श्रेय लिखे हैं उनका पङ्कट तो मैंने जैसे तैसे सब र किया परन्तु आपन दोषों के लिये नहीं कर सकता। उन्होंने कहा कि जब सब के दोष लिखे गये तो आपके भी लिखे जावेंगे। महाराज राजाजी ने कहा कि ऐसे लिखने से तो नहीं लिखना अच्छा है। यह सुनकर उसी दिन से इन्होंने वश भास्कर का बनाना छोड़ दिया।

इतने विवाद के उपरान्त यह बात तो स्पष्ट हो जाती है कि कवि मूयमल्ल मिश्रण कवि होने के साथ साथ इतिहासचेता लेखक भी थे। शौर्य पराक्रम एव वीरता के कवि

मूयमल्ल मिश्रण की वीर सतसई गीय पराक्रम एव वीरता का जीवन्त प्रतीक है। डा रघुवीरसिंह न भी वीर-रस प्रथा साहित्य क क्षत्र म मूयमल्ल मिश्रण का एक छत्र शासन स्वीकार किया है। वीरत्व का परिचय पराक्रम, साहस धैर्य, स्तब्ध उदात्त भावना, सहिष्णुता आदि स ही मिलता है। अत वीर के चरित्र-चित्रण में कवि ने उसकी बाह्य आ त्रिभ्य मनावृत्तियों तथा काय-कसाय का सुन्दर बणन कर अपनी सूदम निरीक्षण की अद्भुत शक्ति का परिचय दिया है। 'सतसई' के नेहों म अघनी जगत की क्रिया एव वृत्ति के माय उसकी आ त्रिभ्य वृत्ति का जो सुन्दर सम्मिश्रण है वह अत्यन्त सुलभ नहीं है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

इला न देणी आपगणी हानरिया हुनराय ।  
 पुत सिपाव पानएँ मरग बडाई माय ॥  
 भाज घरे मासू पहै हरख अचाणव काम ।  
 वह बलेबा हलसै पूत मरेबा जाय ॥  
 जिम जिम कायर घर हरै तिम तिम फले तूर ।  
 जिम जिम बगतर ऊबई, तिम तिम फूल सूर ॥  
 साम्ने भालै फूततो पूग उपाई दत ।  
 हँ बलिहारि जठ री हाथी हाथ बरत ॥

ऐसे ही वीररस क अदृष्ट साहित्य न वीरो और मतियों को अपन कतव्य पथ पर अग्रसर किया। वीरो ने हसते हसते प्राण दिय और वीरागनाओ न खुगी खुगी जौहर बन धारण किया। पतियों के साथ सती होना गौरव मडिन समझा जाने लगा।

वस्तुतः वीर सतसई बदलते हुए युग की परिचायिका है। भारतवर्ष में उस समय अंग्रेजों क विरुद्ध १८५७ ई की स्वतंत्रता की पहली लड़ाई लड़ी जा रही थी। कवि भी उससे अग्रभावित नहीं रह सका। उसन भी वीरो को एकत्रित कर अपनी धरती को अंग्रेजों स मुक्त करान का आह्वान किया। जसा कि कवि कृत नीचे उद्धृत दोहे से प्रकट है—

वीकम बरसा बीतियों, गए चौ चंद गुणीत ।  
 बिसहर तिथ गुरू जेठ बदि समय पलटी सीस ॥

इस दोहे म इस पलटी सीस' अर्थात् समय ने मुल फेरा है विशेषता सूचक है। इस पद द्वारा कवि ने सन् १८५७ ई की विप्लव सम्बन्धी प्रव्यवस्थित राजनीतिक परिस्थिति की और इंगित किया है। कवि की धारणा थी कि अन्ध देगवासियों के के साथ उन भी अपन शरीर को मातभूमि की स्वतंत्रता के हेतु सद्बुपयोग में लगाने का अवसर प्राप्त हुआ है। इसके अतिरिक्त कवि का एक और दोहा है जिसम उसन अपने

अप-प्रणयन का प्रयाजन भी स्पष्ट कर दिया है। उनकी दोहामयी सतसई वीरो के लिये खाद्य तथा कायरों के सुनने के लिये शल्य है—

सतसई दोहामयी, भीमण सूरजमल ।

जप मडरवाणी जठै, सुणै कायरा साल ॥

डा० सरनामसिंह ने कवि की स्वाधीनता प्राप्ति की इच्छा को रेखांकित करते हुए ठीक ही लिखा है कि मिश्रण सूयमल्ल के 'वश भास्वर' में टिके हुए राजस्थानी के सरस गद्यांश तथा उनके साहित्यिक पत्र जो उ होंने समय समय पर राजस्थान के राजा श्री को स्वाधीनता के सम्बन्ध में सजा और उत्साहित करने के अभिप्राय से लिखे थे, राजस्थानी गद्य की परम्परा को आगे लाने में ही अपना महत्व नहीं रखते, प्रत्युत भारतीय स्वतन्त्रता का इतिहास बनाने में भा वड़े महत्त के सिद्ध हाग ।'

जहाँ तक सूयमल्ल मिश्रण की नारी भावना का प्रश्न है वहाँ यह कहना प्रतिशयोक्ति नहीं होगी कि कवि के लिये नारी अबला रूप में नहीं वरन् परम्पराशास्त्री मा षण्डी के रूप में है। वह भी वीर समाज के अनुरूप ही है। क्या हुआ यदि परिवार के लोग नहीं प्रीति भोज में चले गये और प्रचानक मात्रमण हो गया ? कोई परेशानी नहीं, कोई विकलता नहीं, सिंहनी की सतान ने तलवार उठा कर अकेले ही डट कर शत्रु मेना से लोहा लिया 'सीहण जाई मीहणी, लीधी तेग उठाय ।' 'बिण यतारा पाहुणा' आ गये तो क्या हुआ, उनके आतिथ्य के लिये तत्काल ही योजना बन गई कि ननद तो ढाल तलवार लेकर डयोढी पर खड़ी रहे और भाभी बडूक लेकर मेही पर—

भाभी डोढी हू खडी, लीधा छेटक रुक ।

थ मनुहारी पाहुणा, मेडी भाल बडूक ॥

'वीर सतसई' की नारी तो पति को यहाँ तक चेतावनी दे देती है कि अगर वह युद्ध से भागकर आ गया तो उसे सिरहाने के लिये तकिया भले ही मिल जाये, प्रियतमा की भुजाएँ तो फिर कभी मिलने की नहीं

'मुडिया मिलसी गीदवो, वले न घण री बाह' ।

हिन्दी साहित्य में वीर रस के सर्वाधिक ख्याति प्राप्त कवि भूपण मान जाते हैं। किन्तु सूयमल्ल को उनमें भी श्रेष्ठ बतलाते हुए डा मोतीलाल मेनारिया लिखते हैं कि 'यह कहना ही पड़ेगा कि वीररस का जमा भावानुरजित और पुरप्रसर वणद सूयमल्ल ने किया है वैसे हिन्दी के किसी दूसरे कवि की रचना में देखने को अभी तक नहीं मिला। उदाहरण स्वरूप भूपण ही को लीजिये। ये वीर रस के सर्वोच्च कवि माने जाते हैं। भूपण राष्ट्रीय कवि हैं इसमें कोई सदेह नहीं। वे हिन्दू धर्म के उपासक हैं, इसमें कोई मतभेद नहीं। उनकी कविता में औरगजेब के अत्याचारों से प्रताडित हिंदी जाति के हाहाकार की प्रतिध्वनि है, इसमें भी कोई अत्युक्ति नहीं। परन्तु इतना होते हुए भी कहा सूयमल्ल और कहा भूपण। दोनों में आकाश पाताल का अंतर है। वीर-वीरगनाओं के हृदयस्थ भावों का विस्लेषण और काव्यमय निरूपण भूपण की



कविता में कहा, जिसके दर्शन सूर्यमल्ल की रचना में पग पग पर होते हैं। सब तो यह है कि सूर्यमल्ल की स्वभाव सिद्ध म्बर-लहरी के सामने भूषण क वागाडंबर-रूप कवित्त सर्वथे प्राण विहीन पजर की तरह धुंक् और निर्जीव प्रतीत होने हैं।'

वीर सतसई के योद्धा 'मरण' को 'पर्य मानकर' चरते हैं। यदि ऐसा कहा जाय कि कायर पुरुष भी यदि एक बार 'वीर सतसई' के चढ़ दाह मुनत तो उसमें पौरुष दहाडन लगेगा उसकी मुजाए फडकने लगगी, कोई प्रतिगयोक्ति नहीं होगी।

राजस्थान में वीररस पर लेखनी चलान वाले अनक कवि हुए हैं जिनमें कविराजा बाकीदास और ईमरनास के नाम विशेष रूप में उल्लेखनीय हैं परन्तु किसी भी कवि का इतनी सफलता नहीं मिली जितनी सूर्यमल्ल मिश्रण को। आज भी राजस्थान में जन जन के कण्ठ पर 'वीर सतसई' के दोह मिकते हैं।

## पराक्रम की धरती से फूटा हुआ कवि महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण

रामरत्न शर्मा

### जीवन परिचय सक्षिप्त भूलक

राजस्थान का भूमि पर जिस तरह वीरत्व का जन्म हुआ है उसी तरह उसने महान् कवित्व को भी जन्म दिया। इस भूमि ने साहित्य जगत् को सूर्यमल्ल मिश्रण जस धनी व्यक्तित्व का महाकवि लिए। चारण परम्परा के सबसे प्रखर और निर्भीक व्यक्तित्व वाले सूर्यमल्ल मिश्रण जी का जन्म सन् १८१६ ईसवी में राजकवि चण्डीदान के यहां हुआ था। मिश्रणजी बाल्यावस्था में ही मेधावी प्रकृति के थे। उनकी प्रतिभा का परिचय इसी बात में मिल जाता है कि जब वे मात्र दस वर्ष के थे तो उन्होंने 'रामरजाट' जैसे काव्य की रचना कर डाली। बहुमुखी प्रतिभा का धनी इस महाकवि ने छोटी सी पवन्या में ही प्राकृत सस्कृत तथा डिगल भाषा का अधिकृत ज्ञान अर्जित कर लिया था।

कहा जाता है कि वे अपने साथ वीणा रखते थे जो कि उनकी कोमलता और कल्याण की प्रतीक थी। उनका वैवाहिक जीवन समवतया कड़वाहट भरा ही रहा। क्योंकि उन्होंने छह विवाह किए और केवल एक सन्तान पुत्री के रूप में प्राप्त हुई थी। उसकी भी उस समय अकाल मृत्यु हो गई जब वे उसे गोदी में उछाल उछाल कर खिला रहे थे। इस हृदय विदारक घटना के बाद कवि इतना टूट गया कि उनके जीवन में नीरसता और निराशा का अधकार छा गया। शायद दुःख व्यक्ति को अमरत्व भी दे जाता है। भारतीय वाङ्मय को अपनी अमर कृतियों से समृद्ध करने वाला शीघ्र का मौदा-

गर और राजस्थान की भूमि पर जन्मा महाकवि ५३ वष की अवस्था में ही सन् १८६६ ईसवी में सदा सदा के लिए विदा हो गया ।

### निर्भोक और स्वाभिमानी व्यक्तित्व

सूर्यमल्ल मिश्रण का उद्भव ऐसे समय में हुआ था जब चारण परम्परा अपने नतिक बोध से डिग रही थी । चारण कवि अपने प्राथम्यता को चाटुकारिता और मिथ्या बखान में सलिल्ल थे । अभिव्यक्ति पर इस निरकुण दबदबे ने कवियों को बाली को प्रायोजित सस्कार का रूप दे दिया था । यानि, जब लम्बडदारी के बडे रहणा तो हा जी, हा जी कहणा' वाली बात हो रही थी । यथाय रसातल को घसता जा रहा था । ऐसे समय में धरती की ग घ से फूटकर उपजा सूर्यमल्ल मिश्रण का व्यक्तित्व अपना अलग पहचान बनाकर साहित्य के महासागर में निर्भोक और भजेय योद्धा की भाँति गाँता लगाया । उनकी निर्भोकता और विशाल व्यक्तित्व का परिचय हमें तब मिलता है जब वे अपने प्राथम्यता को कह भी डानते हैं कि

'नाहक चवर राखे मुड होय राजा ।

हमरे मत प्रबुद्ध होय ताहि पे चवर है ॥'

सूर्यमल्ल मिश्रणजी के निर्भोक और अलमस्त व्यक्तित्व का उस समय का और भी पता चलता है जब वे प्रात सूर्य उपासना में यह प्रायना करते हैं कि एक दिन ऐसा सूर्य भी उगे जब उसके स्वामी का सिर घोडो की टापी में लुडकता मिले । इस वान को सुनकर सभी ब्रूड हो गए थे । परंतु जब इस मेघावी व्यक्तित्व ने यह खुलासा किया कि वह तो अपने मालिक के लिए अमरत्व की कामना कर रहा है तो सभी उनकी बात से सहमत हो गए । यानि जो बात राजा का सगा सम्बन्धी और निकटतम मंत्री भी बने नहीं कह सकता वह सबने और भावनाओं का कलाकार कहने में समय होता है । जिस तरह बिहारी के एक दोहे से ही अपने कर्तव्य से भटक गया राजा समाग पर घा जाता है ।

### मध्ययुगीन समाज का यथाय

सूर्यमल्ल मिश्रण जो ऐसे समय के कवि रहे हैं जिस समय उनके द्वारा उठने मूल्यों और सस्कारों की प्रासगिकता थी । आज भले ही सती प्रथा मानवीय मूल्यों के प्रतिमान के सन्दर्भ में जघन्य अपराध प्रतीत होती हो परंतु यदि हम उस कालखण्ड में विवेक से भावकर देखें तो उसकी प्रासगिकता जीवत हो उठती है । उस समय सती होना स्वभावजय सस्कार था न कि किसी पर बलात् सती होने के लिए कहा जाता था । तभी तो धीर रमणी नायण से प्राप्त कहती है कि

'नायण ! आज न मीड पग,

काल मुण्डीक जग ।

घारा सार्ग जे पणी,

तण दीने मण रग ॥

वीरोचित सस्कार को लिंग भेद से ऊपर उठाकर किसी की भी सम्पत्ति के रूप में प्रतिपादित करते हुए कवि कहता है कि

‘भूरा घर सूरी महल  
कायर, कायर गेह’

अर्थात् ‘भूरवीर वं घर घूरवीर महिला और कायर के घर कायर महिला होती है।

राजस्थान के वीरो के कमक्षेत्र का कवि जीवन्त चित्र प्रस्तुत करते हुए कहता है कि

‘रणवनी रजपूत री,  
वीर न भूले बाल ।  
बारह बरमा बाप री,  
मह वैर लकाल ॥”

### नारी चित्रण उदात्त भाव

सूयमल्लजी के काव्य का सौष्ठव और उसकी कसौटी यह भी है कि उन्होंने सही मायनों में नारी के पवित्र, तेजस्वी और मर्यादापूर्ण रूप का उदात्त भाव स्थापित किया। जिस नारी को रीतिकाल की भापाई भराजकता ने मात्र उपभोग और वासना की वस्तु करार दिया था, ऐसे समय में नारी की गरिमा की पुनर्बहाली का मादा समवतया मिश्रणजी ही रखते थे। तभी ता उन्होंने उसे वीर मा वीर पत्नी, वीर देवराणी, वीर मनद और वीर सेवक की पत्नी आदि रूपों में धरिका। यानि उन्होंने ऐसी साहसिक नारी का रूप उभारा जो पति को, पुत्र को, अपने कर्त्तव्य के प्रति चेतानी रहती है। वह, कायर और अपने कर्त्तव्य से डिगन वाले पुरुष को फटकारने वाली है।

उस नारी को जिसे श्रुगारिकता की घाड़ में अस्तिन्वविहीन कर दिया गया था और उसकी अस्मिता समाप्त प्राय हो गई थी उसे पुन बहाल किया। वैचारिकता के इस महागत में डूबी हुई नारी के विलक्षण और विराट स्वरूप का घघिष्ठापन किया। वीर माता का रूप देखिये

“माई एहडा पूत जण, जेहडा राणा प्रताप ।  
भकबर सूतो भोक्के, जाण सिराण साप ॥”

इसी तरह वीर पत्नी के स्वरूप का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं

“पूजाणो पज-पोत्रिया, मींडाणो कर मूक ।  
बीजाणो घण चामरा, है चुडो बल तूक ॥”

और,

“गोठ गया सब गेहरा, बणी भचानक भाप ।  
सिधण-जायी सिधणी, लीची तेग उठाय ॥”

## क्रान्तिकारी वैचारिकता

कवि की रचनाधर्मिता का क्षेत्र केवल राजपूता की महिमा और अपने प्राप्र दाना रावराजा भोमसिंह के पराक्रम या वखान करने तक ही सीमित नहीं रहा प्रसिद्ध उन्होंने समय की नब्ज को पकड़ा और अपनी कलम को समय की मांग के अनुसार ढाला । दरबारी कवि होते हुए भी जा व्यक्ति अपनी वाणी का क्रान्तिकारी स्वर दे सका यह उनकी महानता का परिचायक है । सभी तो वा कहते हैं

‘इला न देणी आपणी, हानगिया दुलराय ।

पूत सिखाव पालणै, मरण बडाई माय ॥’

अर्थात्, मा कहती है भूले में भुलाते हुए पुत्र से कि अपनी भूमि शत्रुओं को देने की बजाए उसमें मर जाना अधिक अच्छा है ।

गुलामी की पीड़ा उनके मन में बराबर उठ रही थी । अंग्रेजी शासन के विरुद्ध उनके तेवर बहद क्रान्तिकारी थे । इसका सबूत हमें तब मिलता है जब वे आदानी के लिए एक रहे साथियों को पत्रों में लिखते हैं कि

‘इए वला राजपूत वे, राजस गुणरजाट ।

सुमिरन लज्जा वीर सब, वीग रो कुल बाट ॥

कवि के हृदय में निहित इस क्रान्तिकारी अंक को सभी ने आत्मसात् किया । उनकी वाणी में गजब का शोक और वीरत्व का वह स्वाभाविक पुट था जिसे सुनकर ग्राम आदमी तक की मुजाए फड़कने लग जाती थी । उन्हें सुनकर लोग इस मिटटी का शान बान और शान के लिए मर मिटने को मद्दव उद्यत रहते थे ।

## साम्प्रदायिक सोमनस्यता और राष्ट्रीय भावना का प्रतिपादन

इस महाकवि ने व्यक्तिपूजा से ऊपर उठकर राष्ट्रीयता की वीणा के तारों को झूठ किया । साम्प्रदायिक सौहार्द्रता का सन्देश दिया । साहित्य के मूल्यों की कसौटी पर अपने रचनाकर्म की अभिव्यक्ति करते हुए कवि ने हिन्दू-मुसलमान के भेद का मुत्ता कर एकजुट होना का सन्देश दिया

मिल मुसलमान राजपूत धो मरठा

इस दूरदर्शी कवि ने १८५७ की क्रान्ति को न चूकने वाला भवसर बताते हुए कहा

फाल हिरण चूकया फटक पाद्यो फाल न पावसी ।

भाजात हिंद करया भव भीसर इस्मो न आवसी ॥

जब राजा लोग अंग्रेजों की चाटुकारिता में लगे हुए थे ऐसे समय में इस तरह का निर्भीक और क्रान्तिकारी आह्वान कवि की उदात्त राष्ट्रीय भावना का द्योतक है ।

## लोक जीवन का चित्रण सामाजिक और सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य

गणियों की पराधीनता में भारतीय साक जीवन में आए विपटन और नतिक पतन का पुट उनके कृतित्व में अत्यन्तपूर्ण शक्ती में परिभाषित हुआ है । वीरत्व के साथ

माय लोक-संस्कारों के धरमानी की नैया को खेने हुए कवि न राजस्थान के लोक जीवन का सजीव चित्र प्रस्तुत किया है। मध्ययुगीन जीवन मूल्यों को उकेरते हुए इस महाकवि न पुरुष और नारी के पराक्रम ही मायाप्रा को बहने के माय साथ सामाजिक जीवन की विभिन्न विधाओं का चित्रण किया है।

राजस्थानी लोक संस्कृति का प्रक्षुण्णता प्रदान कर इस संस्कृति का सौष्ठव बचन किया। जहाँ एक ओर उनकी वाणी में लोक जीवन की भ्रगाध जीवन्तता मिलती है तो दूसरी ओर लोक शाली के प्रति भ्रगाध निष्ठा। जीवन की उपादेयता का दर्शन विचारणीय है

‘सूता घर घर मालसी, बया गुमावे बस।  
सभ धारा घोडा खुरा, दाब धजका दस ॥’

युगीन माग को देखते हुए उन्होंने कायर और कायरता की दिल खोलकर आलोचना की। वीरागनाओं के संस्कार में यह भरा कि

‘नह पढीस कायर नरा, हली बास सुहाय।  
बलिहारी जिणा दसई, माया मोल विनाय ॥’

उन्होंने राजस्थानी लोक संस्कृति के उज्ज्वल रूप को, उद्घाटित किया है। भारतीय जीवन में सोलह संस्कारों का बहुत महत्त्व है। उनके काव्य में जन्म, विवाह और मृत्यु जैसे प्रमुख संस्कारों का जगह जगह चित्रण है। पुत्र जन्म पर जिन परम्पराओं का निबहण होता है, वह द्रष्टव्य है

हू बलिहारी राणिमा, धाल बजाएँ दीह।  
नालो वाढण, री छुरी, भपट जणियो साव।

‘पूत सिखावे पालण, मरण बडाई माय ॥’

युद्ध के प्रसंगों का मार्मिक चित्रण है। समाज के विभिन्न लोगों जैसे नायण, मण्णिहारिण, लुहार, सुनार, रगरेज, बढई, दर्जी, कनाल, माली आदि के ग्रामोद्योग प्रधान समाज का बोनता हुआ खाका है।

### कवि का रचनाकर्म

उन्होंने विभिन्न पुस्तकें लिखी। प्रमुख हैं—

- |             |             |                |
|-------------|-------------|----------------|
| १ बस भास्कर | २ वीर सतसई  | ३ बलबद्विलास   |
| ४ राम रजाट  | ५ छन्नामयूख | ६ सतीरासो आदि। |

बस भास्कर बूदी का जीवन्त इतिहास है जिसमें राजपूतों की वीरता और उनकी रमणियों के त्याग और चरित्र की गाथा है। कुछ अनुसंधानकर्त्ताओं ने ता इसे उनकी बौद्धिकता का महाभारत भी कहा है। २५०० पृष्ठों वाले इस बहद्द इतिहास ग्रंथ की रचना मवत् १८६७ में बूदी नरेश रामसिंह के आदेश पर की गई थी।

‘वीर सतसई’ उनका प्रसिद्ध ग्रंथ है। २८८ दोहों वाली इस पुस्तक को

सतसई परम्परा से जोड़ा गया। इसकी रचना सन् १८५७ ईसवी में स्वतंत्रता संग्राम के नेपथ्य में हुई थी। अतः इसमें राजस्थानी जीवन भूमिका, राजपूनी मान-बान्धीरता, पराक्रम का सुन्दर चित्रण है।

‘बलवद्विलास’ में रतलाम नरेश बलव तसिंह का चरित्र का उक्त चित्रण

‘रामरजाट’ में रावराजा रामसिंह के शिखर, जोकि उन्होंने विजयपट्टनी वाले दिन खेला था, का सूक्ष्म विस्लेषण है।

‘छदोमयूष’ छन्दशास्त्र की छोटीसी रचना है। उनकी और रचनाएँ, जैसे ‘सतीरासो’ और ‘धातुपायली’ के बारे में कोई निष्कर्ष नहीं निकलता है। परन्तु इतना तो अवश्य है कि उनके द्वारा फुटकर रूप में रचित कवित्त, सबसे, सोरठ और गीत भी मिलते हैं।

### निष्कर्ष महाकवि की कसौटी

अतः, निष्कर्ष के रूप में हम देख सकते हैं कि इस महाकवि ने हमारी वैदिक परम्परा में वसिष्ठ मूल्यों को प्राण बढाया। प्रथमवेद में ‘भूमि माता है मैं भूमि का पुत्र हूँ’ (माता भूमि पुत्राह पृथिव्या) कहा गया है। ‘यजुर्वेद’ में कहा गया है कि वयं राष्ट्र जाग्राम पुरोहिता’ अर्थात् हम राष्ट्र के जागरूक प्रहरी (नागरिक) बनें। इसी राष्ट्रीय भावनाओं को इस महाकवि ने प्राण बढाया। समय की माँग को पूरा करते हुए जन-जन को वीरत्व का संदेश देकर उन्हें राष्ट्रानुरक्ति और भक्ति की अदम्य भावना से अनुप्ररित किया।

साथ ही उनकी लेखनी से लोक जीवन का ताना-बाना निःसृत हुआ। समाज की सही और यथार्थ तस्वीर प्रस्तुत की। नारी की गरिमा और महिमा का प्रतिपादन किया। जीवन में समाहित बिखराव को लताड़ा और मधुरता का संदेश दिया। गलत को गलत कहने से नहीं हिचकिचाए। अपने स्वाभिमान की सदैव रक्षा की। वाणी को प्रायोजित संस्कार में परिवर्तित होने से बचाने वाले इस महाकवि की स्मृति को प्रणाम।



## महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की स्वातन्त्र्य चेतना

डॉ० मनु शर्मा

हिन्दी में १८५७ और उसके आस पास लिखा हुआ साहित्य बहुत कम उपलब्ध है। "संवत् १८६० और १९१५ के बीच का काल गद्य रचना की दृष्टि से प्रायः शून्य ही मिलता है। संवत् १९१४ (१८५७) के बलबे के पीछे हिन्दी गद्य साहित्य की परम्परा अच्छी तरह चली।" (प्रा० शुक्ल हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृ० २८६।) रही बात कविता की, तो उन दिनों रीवा नरेश महाराज रघुराजसिंह, नवलदास कायस्थ, चन्द्रशेखर वाजपेयी और बाबू गोपाल चन्द्र रीतिकालीन ढर्रे की कवितायें लिख रहे थे। इनकी कविताओं में तत्कालीन राजनीतिक घटना क्रम के सम्बन्ध में कुछ भी नहीं मिलता है। बाबा दीन दयाल गिरि का रचनाकाल वैसे तो स० १९१२ तक माना गया है। लेकिन उनके दोहों में हिन्दुस्तान के पराधीन हो जाने की पीड़ा प्रबल व्यक्त हुई है।

पराधीनता दुख महा सुखी जगत स्वाधीन।

सुखी रमत सुक बस विसं कनक पीजरें दीन ॥

भास्कर्य की बात है कि जिन दिनों हिन्दी कविता की लोक जागरण पर रीतिवाद का घटाटोप छाया था, उन दिनों राजस्थानी की गद्य और पद्य रचनाओं में स्वातन्त्र्य चेतना, साम्प्रदायिक सद्भाव और साम्राज्यवाद विरोध का स्वर प्रबल रूप में प्रकट हो रहा था। कृपाराम बाकीदास और सूर्यमल्ल मिश्रण जैसे कवि इस दृष्टि से उल्लेखनीय हैं। कृपाराम ने अपने सोरठों में तत्कालीन समाज में फैली दरारकता



श्रीर राजनीति के प्रति जन सामाय मे पदा हुई उदासीनता का भाविक रूप से म्क  
 किया है। साम्राज्यवाद विरोध श्रीर साम्प्रदायिक सद्भाव बाकीदास के साथ का  
 उज्ज्वलतम पदा है। वह हिन्दी भाषी क्षेत्र के पहल कवि हैं जिन्होंने धर्मजी साम्राज्य  
 का धपने लेखन मे खलकर विरोध किया। श्रीर हिन्दू मुस्लिम जनता को निन्ता  
 धर्मजों का विराध करने की प्रेरणा दी—

आयो इग्रेज मुलक रै ऊपर,  
 भाहस लीधा खेंचि उरा।

बाकीदास भलीभांति समझ चुके थे कि धर्मजी राज क तुनी पर नियो नि  
 बढ़त जा रहे हैं। श्रीर यह दश की सारी चेतना को धीर-धीर सास रहा है। इन्हीं  
 उन्होंने जन सामाय को उद्बोधित करत हुए लिखा

रागा र बिहिव रजपूती।  
 मरद हिन्दू की मुसलमान ॥

बाकीदास को परम्परा को विकसित करन वालो मे पहला नाम महात्मा  
 सूर्यमल्ल मिश्रण का है। सूर्यमल्ल मिश्रण १८५७ के प्रथम स्वाधीनता संग्राम के पण्य  
 दर्शी थे। उन्होंने उय समय की राजनीतिक उचल पुचल और जनआंदोलनों के बारे मे  
 धपनी रचनाओं और पत्रो मे बाकी विस्तार से लिखा है। धपन प्रसिद्ध पत्र 'श्रीर'  
 सतगई के रचनाकाल के सम्बध मे उन्होंने लिखा है

वीरम बरमा योतिमा गुण श्री चण गुलीत।  
 विमहर तिवि गुरु जठ बलि, ममय पलट्टी सीग ॥  
 ( श्रीर सतगई म० नरालमण्यग म्यामी २ )

विश्वम मयम १६१४ ( १८५७ ई० ) मे समय न पसटा गया। १० वई  
 १८५७ का स्वतंत्रता की पहली लड़ाई का विगुल बजा। एक सौ वर्षो मे ईश्ट इतिहास  
 धपनी माते हिन्दुस्तान पर धपना धपिकार कर चुकी थी। यमानापर राजाओं की  
 सामन्तों मे ईश्ट खण्डिया बधपनी मे समझीत कर लिए ध। वे बधपनी क धपीत म्क  
 कर मला क मुग साम्य रर ध। सूर्यमल्ल मिश्रण इस राजनीतिक परिस्थित मे धनीधरि  
 परिचित ध। श्रीर राजाओं तथा सामन्तों मे विरगित हुई दाग वृत्ति निरकाम्यन की  
 बाधरता का इग लर क प्रविण्य क मित धपकधुन क धप म दला मग ध।

मयम १६०६ मे भिन्नाय क राजा बगवतसिंह का धपन पध मे उड़ी  
 निम धनि रकना हुआ और मयका एक उचार धपना ता मरका धपनी ध धी  
 ध र धीका। विरदु हिन्दुस्तान क राजाओं मे ता म्क वृत्ति रर गई है वि उरन धीर  
 धीर धुलपध क विरोध के म्हा धाव म्क म उरका धाजा मानन मे मो धान धरं म्क  
 ररन म्क धर क धी उरकी इध्या म्की बाते है। श्रीर उीका भी मुग को की  
 धरके धरन धान है। (धन म्क १६६) म्क पध धरंकी द्वारा मला धवा धप धर  
 क धान धी धुलपध क धर म्क धरिना धवा धा। धरिध धनय राजाओं द्वारा धर  
 की धपनी धरिधर धर धर क धरकवि के धन धरिना हुई धानधरना म्की धर

स स्पष्ट हो जाती है। मूयमल्ल मोच भी नहीं सकने थे कि अग्नेजी राज व प्रति राजा और सामत ऐसी वफादारी निश्चायेग। उन्हें सत्रस ज्यादा दुख इस बात का था कि य राजा लोग अपने सजातीय और ममाज के लोगो का तिरस्कार करते हैं। इस सम्बन्ध में वह लिखते हैं 'जो समाज और सजातीय ह और अपने मत को मानन वाल हैं फिर भी उन पर लाख गुनी ठमक निश्चाने ह। और यदि उन लोगो में से कोई धम का विचार करके नम्रता का व्यवहार करे तो दुर्भाग्यवग य (राजा) लोग अपने मन में समझन हैं कि हम तो बड़े हैं ही और ये हमारा मानन नम्रता दिखान योग्य हैं इसलिये नम्रता निश्चाने रहे हैं। जब से यह बुद्धि हि दुस्तानियो की हुई है तब से विदेशियो का प्रमत्त देश पर हुमा है।' (उप०)

यह पत्र देशी शासको की कमजारियो का कच्चा चिट्ठा है। सामत लोग अपनी झूठी शान आपसी अमानस्य और जन विरोधी दृष्टिकोण के कारण प्राजादी और गुलामी का अन्तर भूल चुके थे। उनके लिए अपनी सुख सुविचार्यो सर्वोपरि हो गई थी। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का दंग पर एकाधिकार और एक छत्र राज्य देखकर राजा और सामत लोग अपने कुल क्रमागत स्वभाव के विरुद्ध आचरण करन लगे थे। किसी में भी इतना साहस नहीं रहा था कि अग्नेजी राज की ज्याणतियो के खिलाफ आवाज उठा कर अपने समकालीन सामतो और राजाओ को धिक्कारने हुए मूयमल्ल ने लिखा

इक डकी गिए अकरी भूले कुल साभाव ।

सूरा मालम अस मे, अरुज गमायी प्राव ॥

(वीर सतसई, ४)

जा शूरवीर कहलाते थे व भी मालस्य और ऐग्याशी में व्यय ही जिन्दगी गवारा था। एम मालसियो और विलायी लोगो में भला क्या प्राशा की जा सकती थी? मूयमल्ल ने इसके बावजूद भी उन राजाओ आदि में दंग प्रम और राष्ट्रीय चेतना जगान की निरन्तर कोशिश की। वस्तुन वह सभी राजाओ और सामतो को एक जुट करके शक्तिशाली मगठन बनाना चाहते थे। इसके लिए उन्होंने राजपूत योद्धाओ का बार बार उनके अतीत गौरव का स्मरण कराया। राजपूत याद्धाओ की तुलना उस सिंह से की जा वन का एक भाग्य स्वामी होता है। और अग्नेजी का सियार व गोदड के मानिन् बनलाया। इस सन्दर्भ में उनकी यह श्रयोक्ति काफी लोकप्रिय है

लिए वन भूल न जावता गैद-गवध मिटराज ।

लिए वन जमुक ताखडा, ऊधम मडे प्राज ॥ (उप० २०)

महाकवि की मनोव्यथा और घृणा का मिलाजुला रूप यहा बड़ा ही प्रभावकारी हो उठा है। मनोव्यथा का कारण सिंह की उदासीनता है। जिस सिंह के भय से हाथी, गैडे और सुअर जैसे हिंस्र जानवर भी वन में भ्रान का साहस नहीं करते थे, उसी वन में सियार और गीदड उच्छल होकर बिचर रहे हैं। घृणा सियार और गीदड की तरह एकदम कायर अग्नेज कोम के प्रति है।

इस दूह को पढ़कर महाभ्राण निराशा को 'जागो फिर एक बार' कविता को य पक्तिया याद आनी ह—

दोनों की माद में/प्राया है आज स्यार—/जागो फिर एक बार ।

दानो कविता के यहा शब्द मन्दम स्वातन्त्र्य चेतना है । दोनों न प्रतीत गौरव का स्मरण करा कर उस चेतना को जगान की कोशिश की है ।

१८५७ के स्वाधीनता संग्राम में अधिकतर सामंत अंग्रेजों की सहायता कर रहे थे । मिति पीप सुकला प्रतिपदा मवत १९१८ को मूयमल्ल मिश्रण ने पीपस्या क ठाकुर पून सिंह जी को अपन पत्र में लिखा किंतु ये राजा लोग देगपति जा जमीन क स्वामी ह सबके सब निक्कमे कायर और हिमायत के गले निकले । इस क्रांति न अंग्रेज को चानोस म लेकर माठ सत्तर बप पीछे डाल दिया है, तो भी ये राजा लोग कायला दिखाने रहे हैं और गुलामी करते हैं । परन्तु मरी यह बात आप याद रखिये कि मिति अंग्रेज इस वार जम गया तो 'ताब्दी ता हटाना मुश्किल हो जायगा ।' (दे० की० सप्तम, पृ० ७०) जो गोग १८५७ के स्वाधीनता संग्राम का गदर' कहत है, उन्हें महाकवि द्वारा प्रमुक्त क्रांति शब्द पर ध्यान रना चाहिए । जन सहयोग के अभाव में क्रांतिया सम्भव नहीं हानी । इस क्रांति न अंग्रेजों को काफी कमजोर कर दिया था । दानो के १८०० ई० के ग्राम पास की स्थिति में पहुँच गये थे । यदि हिन्दुस्तानी राजाओं से दूरदेगी होती तो वे इस कमजोरी का लाभ उठा सकते थे । लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया । मूयमल्ल मिश्रण को यह बात लगातार बचोटती रही और उन्होंने अपनी पीप को उपयुक्त पत्र के जरिये व्यक्त किया । साथ ही उन्होंने भविष्यवाणी भी की कि इन वार जमे अंग्रेज का शताब्दी तक हटाना मुश्किल होगा । हम सब जानत हैं कि महाकवि की यह भविष्य वाणी सहा साबित हुई । १८५७ में फिर से जमा अंग्रेजी राज १९४७ तक रहा ।

पत्र में राजाओं को 'देगपति' और जमीन का स्वामी कह कर उन पर व्यथ किया गया है । जा देश की रक्षा नहीं कर सके वह कैसे देगपति ? जिसमें अपनी धरती के लिए प्रेम न हो उसे जमीन का स्वामी कहाना का कोई हक नहीं है । सम्भवत ऐसे दानो को ध्यान म रखकर ही महाकवि न लिखा है

खोयो मैं घर में घबट, कायर जयुन काम ।

सीहा नेहा देगटा जेप रहे सो ग्राम ॥ (उप० १९)

घर में रह कर जीवन का व्यथ गवा देना तो कायरो का काम है । गुरबीरों क अपन काई देग और घर नहीं लेते । वे नहा रहने हैं वही उनका देग और घर ही जाता है ।

उन दिनों ज्यादातर सामन और राजा अंग्रेजों के कृपापात्र बन गये थे । वे अपना गुजारे के लिए अंग्रेजों को अंग्रेजों के प्राये कृपित्याया करते थे । महाकवि ने 'देश-पतिया की यह आशा देखी न ग' । और उन्हें उनकी वस्तुस्थिति का ज्ञान कराने हुए अक्षरमात्र—

साह न बाजो ठावरु तीन गुजारा दा४ ।

हायल पाई हाथिया ना नइ बाजै सीह ॥ (उप० ३४)

महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण चाहते थे कि क्रांतिकारियों ने स्वतंत्रता की मशाल जलाई है, वह पूरी तरह रोगन हो। इसलिए उन्होंने सीतामऊ रतलाम पीपल्या रननपुर जोधपुर काटा मोघाण्या गाहपुरा और रामवाडा के राजाओं और मामतों को इन बारे में पत्र लिखे। नामली (रतलाम) के ठावुर बल्हावर सिंह का उन्होंने लिखा

उधर की तरफ से पृथ्वी तथा अक्षराओं के आदिख लोगों ने राज्य और प्राणों की बाजी लगाए जाने वाले घोर जो कुछ अपने साथी होत हुए दिल्लीलाई पडत हो, तो गुप्त रूप से लिखना सा अत्यन्त भी बाज नही डूया है। इसलिए और भी कई साथी होने के लिए तैयार हो जायेंगे और साथी तैयार करने का दायित्व तो हम लोगों का कुल क्रमागत है। अतः आप वहाँ में सूची भेजेंगे ता यहाँ से भी ब्यौरे वार लिखा जायगा। लेकिन इस समय तो गुप्त ही ठीक है। अंग्रेजों की सामर्थ्य को देखत हुए इस समय यह बात आप नादानों की ही समझेंगे लेकिन भगवान ने हमको शुरू से ही नापानी दी है इसलिए घनाई कहाँ से भावै। (सूर्यमल्ल स्मृति गतावली स्मारिका पृ० ६३)।

इस पत्र का पढ़कर लगता है जैसे सूर्यमल्ल क्रांतिकारियों का कोई भूमिगत संगठन बना रहे हो। अपने राज्य और प्राणों की बाजी लगा देने वाले लोगों को अधिक से अधिक सन्ध्या में एकत्रित करना उनका लक्ष्य था। वे अंग्रेजों साम्राज्य के ध्वस्त होने का सपना सजोये हुए थे। इसी सपने ने उनमें सधय के प्रति अटूट आस्था पैदा की। प्रतिकूल परिस्थितियाँ होने पर भी वे निराश नहीं हुए थे। उनका कवि मन यह स्वीकार करने को तैयार नहीं था कि स्वतंत्रता कामी लोगों का इस देश में बीज डूब गया हो। और वास्तव में ऐसा हुआ भी नहीं था। जगह जगह पर लागू क्रांतिकारियों का सहयोग कर रहे थे। 'दापति' नपथ्य में चले गये थे। जन-साधारण आगे आ गया था।

एक कवि के नाते सूर्यमल्ल अपने क्रांतिकारियों का साथी मानते थे। ध्यान रहे वह एक राज्याश्रित कवि थे। लेकिन साधारण काटिक दरबारी कवियों की तरह अपने आश्रयदाता का झूठा यशागत करना उनके स्वभाव के विरुद्ध था। उनकी दृष्टि में कवि काम का आदर्श मत्य का बखान है। श्रेष्ठ कवि वह है जो निर्भीक हाकर खरी खरी कहता है—

कविन किना तो बडे लोकन में ऐमी बात

ऐँचि क कहै सो है मडल महि कौन है।

भारतीय इतिहास में ऐसे उदाहरण खूब मिल जायेंगे जब शासक बग न तो जनता की मशा की अनदेखी की लेकिन साहित्यकारों ने उस बखूबी समझा और रचनाओं के जरिये अभिव्यक्त किया। सूर्यमल्ल मिश्रण देख रहे थे कि अंग्रेजों की जगह देगी सिपाहियों द्वारा घुस विद्या गया सधय घेरे घेरे जन सधय में बदलता जा रहा है। सिपाहियों के साथ साथ जन साधारण भी क्रांति में हिस्सा लेने लगा है। और

गासक वग जहा कही क्रातिकारियों का साथ नहीं दे रहा है, यही लाग उह बद्दजत करन लगे ह । इम दृष्टि से वीप गुणी एकात्म वि० म० १६१५ का नामली व ठाकुर को लिखा उनका पत्र उल्लेखनीय है । यह लिखत है 'श्रीर काट म दो दल बने हुए हैं । एक तरफ परदेसी (क्रातिकारी) लाग श्रीर तोपें हैं श्रीर दूसरी तरफ महाराज जी श्रीर श्रीर उनका भाइ बंधु है । जोधपुर की फौज आमाप पत्र चढ आई थी सा बिगडकर वापिस चली गई । तापें श्रीर अमबाय स्वलमवृत्ता गया श्रीर काट म क्रातिक बुदी १३ के दिन एजेंट बाटन माहब अपन दा पुत्रा महित मारा गया । यह ता पहले ही सुना हागा उन विद्रोही लागो म कामा (नरतपुर) निवामी कायस्थ लाला जयप्रयाग है । नीमच म बाटन काटा आया तब महाराजजी म पाच-मात घादमियों का वषक के रूप म मागा । उन लोगो म यह जयप्रयाग भी है । महाराजजी न ता यह कह दिया कि मर वग की बात नहीं फिर उगी रात जयदयाग न तमाम परदेसी (क्रातिकारी) लागो का एकमत करके प्राण काल हात ही तापें लगाकर अग्रज का मार लिया । बाट म मुसाहिव मुक्षी रतनलाल का महाराजजी की खास उयाही स पकटकर ले गय श्रीर बड़ी बद्दजती करके बंद किया । आर भी सब बिल्लेदारो का कैद किया काटे म छाटी बड़ी १०७ तापे ह परंतु अब सबकी सब विद्रोहियों के हाथ म ह । तोपो का मु ह महलो पर लगा रक्खा है । जो राजपूत बहलात है श्रीर सच्चे राजपूत नहीं है उनको बड़ी बद्दजती की गई । पाच मात सौ राजपूतो के गस्त्र छीन लिए गए आर उनका ताण डाला । (सूयमल्ल मिश्रण स्मृति शताब्दी स्मारिका, पृ० ६३-६४)

१८५७ की क्राति ने जन सामान्य के मन से राजाश्री श्रीर सामंतो क भय का निबाल दिया था । जा राजा क्रातिकारियों के साथ हाकर अग्रजी फौज का चुनौती देता वह सूयमल्ल मिश्रण की दृष्टि मे आदरणीय हा उठता । आउवा क राजा खगाल सिंह श्रीर वृत्तिहगड के राजा चतसिंह इसी वजह से उनका काव्य चरित्र बन ह । खगाल सिंह की क्राति म जा भूमिका रही उस लेकर उन्हां जा गीत लिखा उसका अंतिम बर इस प्रकार है—

भागे भीच गारा सिधापरा रा जिहान भालो,

दावा तगा भाट दे उताला दसू दस ।

तोसू नोद न भाव कपनी लगाये ताला,

काली हिय न माव अगजी कुसलोस ॥ (दे वीरमतसइ पृ ६२)

आउवा के विरुद्ध जब अग्रज सेना म आक्रमण किया ता पहली बार आउवा के क्रातिकारियों ने अग्रज सेना को हरा दिया श्रीर एजेंट माकमसन का सर घड से अलग कर किने पर टाग लिया । उसके बाद अग्रजो के निरन्तर होन बाल आक्रमणों का आउवा के स्वतंत्रता सेनानी सामना नहीं कर सके । जनवरी १८५८ म आउवा पर अग्रजो का अधिकार हो गया ।

एव आर आउवा क राजा खुगालसिंह है, जिहीन अग्रजी साम्राज्यवाद के विरुद्ध सघष किया । दूसरी श्रीर काटा के महाराज हैं जो अग्रजों द्वारा काटा के तहत

नहस कर दिये जाने पर भी उनके प्रति वफादारी दिखाते रहे। कोटा के महाराज की आज्ञा की पहली लड़ाई में जो भूमिका रही उसके बारे में सूयमल्ल मिश्रण ने कहा कि ठाकुर पदमसिंह को अपने पत्र में लिखा "आषाढ में लगभग २० हजार बाले सिपाहियों की फौज आ गई थी ता यहाँ से टल गई पहले बाटे की फौज के विरुद्ध होकर एजेन्ट का मार डाला था, इस बात पर चंद्र के महीने में अंग्रेजों की फौज ने यहाँ आकर लड़ाई की थी। चौथे दिन विद्रोही फौज ता यहाँ से निकल भागी और अंग्रेजों ने काट की मय तरह में लूट कर खराब कर दिया। बहुत से आदमियों को फाँसी दी और बहुतों को उड़कों से मार डाला। बहुत सी स्त्रियों की इज्जत खराब की और बहुत सी तोपें फाँड डाली तथा बहुत में रुपए लेकर महागाव को कोटा दे दिया।"

( दे० सूयमल्ल मिश्रण स्मृति शताब्दी स्मारिका, पृ ६४ ) ।

पड़ोसी राजा द्वारा किया गया यह कुवृत्त्य सूयमल्ल मिश्रण के लिए असहनीय था। कहा ता वह बूढ़ी नरग महाराज रामसिंह को क्रांतिकारियों की सहायता के लिए प्रेरित कर रहे थे। और कहा उ ही के पड़ोसी राज्य में राजा की सेना अंग्रेजों का साथ दे रही थी। ऐसे मूल राजाओं के लिए ही उहाँ लिखा है

नाहक चर राखें मूढ़ हाथ राजा  
हमार मत प्रबुद्ध होय ताही पै चर है ।

स्वतंत्रता संग्राम के वर्षों में महाकवि सूयमल्ल मिश्रण ने इतना देणी आपसी का मन पाठ जारी रखा। उनके इस मंत्र ने जाने कितने लोगों के मन में साहस, स्फूर्ति और अपनी स्वतंत्रता के लिए मर मिटने की प्रेरणा पैदा की। वह प्रथम स्वाधीनता संग्राम के बाद ६ वर्ष और जीवित रहे। एक अर्थ में उँहाने कम्पनी राज और ब्रिटिश राज में हिंदुस्तान की दुःशा अच्छी तरह देख ली थी। उनकी आँसों के सामने ही स्वतंत्रता की लड़ाई कुचल दी गई थी। राजस्थान में तो तात्याटोपे की मृत्यु के बाद ही सारा मधुप ठप्प हो गया था। क्रांतिकारियों में जबरदस्त निराशा पैदा हो गई थी। कुशल नेतृत्व के अभाव में आन्दोलन छिन्न-भिन्न हो गया था। बाश ! उस समय सूयमल्ल मिश्रण को कोई उपयुक्त काव्य नायक मिल जाता। लेकिन हिंदुस्तान के खाते में गुलामी के वर्ष और जुड़न थे। सो जुड़ गये। हा इतना अवश्य कहना पड़ेगा कि बाकीदास ने साम्राज्यवाद का जिस प्रबल स्वर में विरोध किया था उसे महाकवि सूयमल्ल मिश्रण ने मना नहीं होने दिया। यह उनकी स्वातंत्र्य चेतना का ठाम प्रमाण है।

## सास्कृतिक चेतना का सोपान 'वलवद्विलास'

### श्रीमती प्रियनाश चतुर्वेदी

अभी अभी कविता कानन में गीतगलीन कवियों की बटक उठी ही थी- रसिकों के मन पर पचाकर प्रतापमिह, गीन प्रवीन गाल मण्दिब गुरन्त जसवतमिह मोन घान, बोधा, ठाङ्ग चदन जैसे मत्तवियों की छाप घवगिष्ट थी। हिन्दी कायो-पवन में शृगारी रूपक के रूप में राधाकृष्ण की यति लीलाओं की दूम थी, कानी में सेवक कवि अदघ में द्विज देव और लक्ष्मीराम कवि वहा बजमण्डल में ललितमाधुरी एवं ललितविशोरी के संगीतमय पद्यों में शृगारमिश्रित वैष्णव धम की धारा प्रवहमान थी वहा निज भाषा उन्नति अहे, सब उन्नति का मूल का उद्घोषन कराने वाल खड़ी बोली के पितामह भारत दु हरिश्चन्द्र की कीर्ति कोमुनी का उज्वल प्रकाश विवर्द्धित हो रहा था। ऐसे समय निक्षेप प्रायः रीतिकाल की परंपरा का पुनः उद्घाप सुनाई दिया जिसके नायक थे सीतामऊ के महाराज कुमार गतनमिहजी जिहोन नटनागर के रूप में पर्याप्त ख्याति अर्जित की है। ऐसे समय में प्रवहमान काव्य परंपरा से बिल्कुल पृथक् स्वर राजस्थान के दमिणी छोर में उठा था जिसके उद्घोषक य चन्द्रचूडमणि खण्डीदानात्मज वीर रसावतार महाकवि सूर्यमल्ल जिनकी प्रमुख रचना है— 'वश भास्कर एवं वीर सतसई जिनकी गणना राजस्थान के गौरव ग्रथों में की जाती है। वश भास्कर काल की कसौटी पर जडा हुआ अमर शिलालेख है जो महाकवि की लोकोत्तर प्रतिभा एवं अक्षय कीर्ति का परिचायक है।

महाकवि सूर्यमल्ल मात्र एक ही व्यक्तित्व नहीं है। उस महान प्रतिभा का संयोजन अनेक छोटी मोटी धाराओं से हुआ है जिसमें केवल वा पाण्डित्य बिहारी की

बहुजता, भतिराम की सरसता, रहीम की नीति प्रवणता, च दबरदाई की युद्ध रसिकता, सत स्वरूपदास की वेदातप्रियता, रजवट का स्वाभिमान एवं पिता प्रदत्त भाषायिक बहुजता का ज्ञा। ममाविष्ट है।

महाकवि ने काव्य रसिकता का उभेय बाल्यकाल में ही हा चुका था जबकि उन्होंने सामान्य लुकवदिद्या करते-करते ही दस बय की अवस्था में राम रजाट की रचना कर डाली थी जो कि महाकवि की असाधारण लोकोत्तर प्रतिभा का परिचय है।

'वग भास्कर' महाभारत की परम्परा में ही व्यास पीठ पर आसीन होकर लिखाया गया वो महाचपू है जिसमें अतीतकालीन भारत से लेकर तत्सामयिक प्रामाणिक इतिहास को काव्य में सू धने का प्रयास किया है।

कवि की तीमरी महत्त्वपूर्ण रचना है— 'वलवद्विनाम'— रचना के शीर्षक में ही स्पष्ट है कि महाकवि सूयमल मिश्रण न भिणाय नरेश महाराजा बलवतसिंह के अनुरोध पर विद्वानों के विलास हेतु इस ग्रंथ की रचना की थी। ग्रंथ रचना के मन्बन्ध में अत साक्ष्य उपलब्ध है, जिससे अनुसार एक बार भिणाय नरेश महाराजा बलवतसिंहजी न सूयमलजी को ससम्मान आमन्त्रित कर सब सज्जनों के अध्यक्षन योग्य तत्र लिखने की अभ्यथना की थी। सूयमलजी जब अपने तरह दिवसीय प्रवास से लौट कर आय तत्र 'वग भास्कर' ग्रंथ की रचना काल के मध्य ही कुछ अतिरिक्त समय बचाकर इस ग्रंथ की रचना की थी। बलवद्विलास का एक अंश दृष्टव्य है—

मगि सीख नप राम मो, बुल्गो कवि बलवत  
किय अभ्यथन तत्र कह, सब पाटव जह सत।  
रहि भनाय तेरह दिवस, इम कवि बुदिय आई।  
क्रम बलवत विलास किये, हिय प्रथिता हरिखाई।  
वग भास्कर के बनत विच अवसर कहू बाडि।  
किय प्रव घ यह मिहिर कवि, कतिय महरथ साडि।<sup>१</sup>

इस ग्रंथ में कवि न विशेष रूप में राजनीति का सागोपाग विवचन किया है। शत्रु मित्र, दण्ड, कोल वाहन आदि प्रत्येक वस्तु का बड़ा सूक्ष्म विवेचन किया है।<sup>२</sup> इसमें राठोडों के सम्बन्ध इतिहास के साथ भिणाय नरेश बलवतसिंह के चरित्र का आख्यान हुआ है। इतिहास के साथ साथ ही इसमें कवि ने अपनी बहुजता का भी उम कर प्रदर्शन किया है। दशन और राजघम का इसमें सविस्तार वर्णन हुआ है।<sup>३</sup>

अत सादय से स्पष्ट है कि इस ग्रंथ की रचना 'वग भास्कर' की रचना के मध्य हुई थी अत यह ग्रंथ भाषा, शली एवं कथ्य की दृष्टि में वग भास्कर में

१ बलवद्विलास— अग्रकादित ४८ पृष्ठ्या ५७६

२ वीर सतमई—पृ ६७

३ डा आलमगाह खान, महासूयमन्त्र (अग्रगणित नाथ प्रब ३)



प्रभावित है। यदि इसके कथ्य क संग्रह का हटा लिया जाय तो यह ग्रंथ बस भास्कर की प्रवहमान धारा का ही एक संग्रह दृष्टिगत होता। लेकिन यह ग्रंथ पूरा कथन का विष्ट-पदण मात्र नहीं है। कवि की दृष्टि से इस ग्रंथ का अर्थना त्रिपय महत्त्व है जमा कि उहोन अपने स्वलिखित पत्र म स्पष्ट किया है। ग्रंथ रचना सम्पूर्ण हा जाने पर भिणाय नरेश ने महाकवि को ग्रंथ व्याख्या हेतु पुन निमन्त्रित किया था। महाकवि तब स्वय भिणाय नहीं जा सके थे लेकिन उहोन इस काय हेतु अपने सुयोग्य उत्तराधिकारी श्री मुरारीदानजी को भेजा था उम समय उनका साथ रामस्वरूपजी न भी भिणाय की यात्रा की थी। पत्र का पूर्वार्ध आत्मनिर्लेपण की दृष्टि म महत्त्वपूर्ण है एक उत्तरार्ध मे बलवद्विलास विषयक मायनायें हैं। पत्र का अनुदित संग्रह इस प्रकार है—

‘विद्येने कार्तिर म गुल्म की व्याप्ति म विनाप पीडित रहा। इसलिय एक माम का अवकाश मिल गया था। मागशीप (अग्रहृत) मे स्वस्थ्य हा गया था, पर स्वास्थ्य लाभ के मागशीप म भी अवकाश मिल गया था। उम प्रकार अवकाश के प्रतिरिक्त समय मे दो महीने तक निरन्तर परिश्रम कर बलवद्विलास ग्रंथ पूरा किया। आपकी तरफ म भी ‘चापर’ लिखी हुई आती थी, व भी इसी म शामिल हे। मैं उत्तरते पीप मे पुन मीख (अवकाश) के लिए अनुरोध किया था पर स्वीकृत नहीं हुआ। आपके लिखने स भी यदि विवाह के लिए यदि अवकाश मिलता तो चार-पाच दिन और कठिनता स ही मिल पात क्योंकि इसका वस भास्कर का यथाशीघ्र सम्पूर्ण किय जान की तीव्रता है और बलवद्विलास के मागोपाग ग्रंथ सहित श्रवण करने म कम म कम दो महान का अवकाश चाहिय क्योंकि इस ग्रंथ म आवश्यक विद्या समाहित है, जिसम कम उपामना आत्म जान वाता राजनीति आदि की मुख्य विवचना की है जिनके विषय धम का माधन, सिद्धि तथा भक्ति का साधन एक नीति का साधन इत्यादि ममस्त विषय आपकी आज्ञानुसार रखे गये है। साथ ही कमकाण्ड खण्ड म श्रुतियो एक स्मृतियो का भाग्य, वणाश्रम धम उपामना जीविका, स्त्री धम आदि सभी विषय यहीमे आ गये है। उपासना खण्ड मे श्रुतियो के रूप मे पञ्चरात्रात्मिक तांत्रिक ग्रंथो का आशय तानकाण्ड खण्ड मे उपनिषदो का तथा उत्तरमीमासा सास्य दशन पातजल का आशय साथ ही आय वैशेषिक पूव मीमासा का भाग्य ग्रंथशास्त्र के ग्रंथो का आशय नीति पर चाणक्य मदनप्रमुख दण्डीनीति के ग्रंथो का आशय साथ ही राजा कामात्य मनी सती के लक्षण साथ ही पाच रत्न, पाच उपरत्न, सुवर्ण रोष्य की गुण अवगुण सहित परीभा तथा शस्त्र-वस्त्र भद्र के भेद सहित लक्षण देण, दुग मना, हाथी घोडा सनापति बिल्लदारो के लक्षण एक आपके विवाह म लेकर अजमर की चढ़ाई तक भी ममस्त चचा इस ग्रंथ मे है। इस ग्रंथ की रचना क लिय दा महीने का समय तो बहुत कम था लेकिन यह तो सरस्वती की ही कृपा थी कि इतन स समय मे एक इतन मे ग्रंथ म सभी विषय मागोपाग रूप स आ गये है। पूव लिखी व्यवस्था म कही बिलम्ब न हो इसलिय भाई रामस्वरूपजी के साथ चिरजीव मुरारीदान को भेज रहा हू जो आपके ग्रंथ सहित मुना देगे। अर्थ य अपनी क्षमतानुसार करेंगे। ग्रंथ-बोध के लिये इस ग्रंथ म पत्रोच्छेद भी कर लिया है। पत्र का अर्थ तो बिना पत्रोच्छेद भी अच्छा व अधिक हो

सकता है परन्तु यह कठिन विषय है। आवश्यकता के बिना ही यह कहना है, पर इनका विशेष ध्यान तो बगैर मास्कर गम्भूरा होने पर प्रवृत्त स्वीकृत होने के बाद धारणा। यद्यपि प्रापक लिए उचित नहीं पर मुद्रा का यत्न दुर्लभ स्वीकार करना भी कृपा करना—

मिति माघ शुक्ल चतुर्दश १९१६ मिति विग्रह

प्रस्तुत पत्र से स्पष्ट है कि महाकवि न धरन इस लघु प्रबंध काव्य में राजनीति एवं ध्यान की विचार व्याख्या करना का गुण प्रयाम किया है।

रचना के प्रारम्भिक पृष्ठों में राठोड बगैर का परिचय है फिर सांस्कृतिक विषय का विवेचना की है।

भिरणाय नरेण बलवन्निह योवन की परिधि में प्रवण कर रहे हैं। राजपुत्र के लिए गरमघान आवश्यक दायित्व है। बलवत्सिंह के गिनार प्रम का धरन करते समय कवि कहना है—

धनागरी—

नित्य ही निवृत्ति बलवत् वसुधापनियों  
मोदर ममत्त खुरली में धन ख्याति करि  
कोटल मतीरु ह दसागुल कापिथ्य बिल्व  
क्रम है मिने की स्थूल ध्यान के पातकरि  
मूडरक मृत्तिका मिलाय गुरु गाल गादे  
खान करि जात बद्धकन सो बात करि  
तानि देन एके स्वास्तिन को फेरि देत  
गणि दत्त गुजन गिलोलन की घात करि ॥

कटुक श्रम उद्यारिके महिष गिलालनि मारि ।

धनाधार रक्षत अधर, इच्छन सत उतारि ॥

भिरणाय नरेण धरन समय के विख्यात निगानबाज रहे ह। उनका शब्द भेदी बाण मारने का अभ्यास था। उसी अभ्यास का महाकवि न काव्यमय ढंग से मनोहर कविता में निम्न भाव व्यक्त किया है। उस कविता की अंतिम दो पक्तिया इस प्रकार हैं—

सब्द भेद आदिक समस्त विधि साधन के  
पूर पटुताई प्रभा पारण की पती में  
कातर कपाल कीवे फोवन को फेरि देत  
गेरि देत गुजन बलब कमनीती में।  
खेलत ललूरिका में खुरसी सरासन की  
पानी पटुता के बलवत्त छितपाल के  
ऊँचे श्रम उडत पतायिन को वारि देत।  
धोरन उतारि देत बम्का चिरकाल के।  
दीठि जो परे तो दूर भेदन में हाल हाल।  
बाल बाल अतर बच के बटवाला क

कव पिय ब्रमर्तै तये में करि छेक छेक  
 एक एक वर्षै मनि मोतिन की माला के ॥  
 राजा बलवतनिहू तीय यात्रा स लौट कर प्राये हैं । स्वजन-परिजन निमंत्रित हैं ।  
 ब्रामन्त्रित भ्रतिययो के भ्रामोद-प्रमोद क लिये पातुरिन' बुलाई गई है । कवि उन्हीं  
 नसकियो के भ्रग प्रत्यग एक हाव-भाक वा वागन करत हुए कहता है —  
 पायल भ्रनीट बिधिपन पुवार स्मर गिष्य पाठ जनु चह मार  
 घायित्यतत्ता थेई थई । लचकात गात रनिहार तेई  
 उरभाई खरन पटवत उषान मडहि ममश्रुन लपजातिमाष  
 उछटात हार प्रति रठ उराज । मन मन घटाव जन जन मनोज  
 रन नेकि करन कवन बिराव । मन तैकि भ्रमर छविहावभाव  
 नचि त्वजन गजन तरल नन । भ्रजन सहरजन मन भ्रोन  
 नचि जात घाल घिरताल नम । पलटात गात रचिजात प्रेम ।  
 पदति छद ४०६-४१०

कवि का प्रिय विषय है युद्ध वरण । प्रयाग प्रसंगो की अपेक्षा हय गज सना  
 युद्ध आदि के वरण म कवि का मन अधिक रमा है । हाथियो की सना प्रयाग कर रही  
 है, कवि की लेखनी स गन्ध चित्र नि मृत हा रहे है । हाथयो के पन् सचालन की विग  
 पता-इन शब्दो म निहित है-

मचने महावत बीत पावत त्यो घुमावत मत्य क  
 मखतूल भूल बलाप मण्डित हलल पण्डित हृत्प के  
 घुमडात भद्व की घटा निभयो घटा गज उल्ल स ।  
 उमडात जात तुरग पात्र तुरग लगन म करन । ४७६ ॥  
 बालहीक ताजिक के तुखार बनायुजातिक सेत के ।  
 हयराज हकिय सन यो हुलसात मादिन हेत के ।  
 लगि पति तोपन भ्रग्य भ्रोपन घादि लोपन उनलसी  
 गड गब गोपन रादि रोपन काल कोपन मीह सी ॥ ८८६

महाकवि सूर्यमल्ल को अपनी जातीय परंपराओं से विशेष स्नेह था । उन पर  
 पराश्रो का निर्वाह उन्होंने प्राजीवन किया और उसी परंपरा के निर्वाह हेतु समय पर  
 रजवट को ललकारा भी । कवि राजस्थानी रमणियों के सती रूप पर विषय मुग्ध  
 है । जिसका प्रमाण है 'वीर सतसई' म नारी की पुनीत रूप की अभ्ययना जो भ्रयत्र  
 दुलभ है । सभवत सतीत्व के भ्रमशिष्ट महिमा के गायन के लिये ही महाकवि न वीर  
 सतसई की रचना की है । पर इसके पूव व 'वनवद्विलास और सती चरित्र की रचना  
 कर चुक थे । जिनम राजस्थानी सती के महनीय स्वरूप की अभ्ययना की गई है ।  
 बनवद्विलास म भी सती हान का प्रसंग है । राजा बलव तनिहू के सहोदर भ्राता का  
 निधन हो जाता है तब उसको पत्नी कमला सती होने को प्रस्तुत होती है । यह घटना  
 उम समय की है जबकि सती होना कानूनन अपराध था । भ्रमोज एजेट एव वायसराय ने  
 नी एम वाय म बाधा डालने की कागिंग की पर कमला के इस सत को कोई नहीं

दिगा सका। इतिवृत्तात्मकता की अपेक्षा कवि का मन इस रूप पर अधिक रमा है।  
काव्य रचना का एक अंग प्रस्तुत है —

करत कपूर कुच कामिनें कवच किमि कवि मन  
पूर मिति भ्रम हात भ्रमला  
उच्छ्वस क पाप घाथा भ्रम, वाम यन्मात्र वा  
विरचो विधाता सो घन धति मी भ्रमला  
आह की क्षतुर्ग निमि मन्त्रिभ गिगारि साजि  
स्वामी सग म भ्रुनों चिना प चढी कमला ॥ ५५२

कवि राजस्थानी नागरी के इस आरम्भ बलिदानो स्वरूप पर विरोध मुगध है।  
इमन्विय घनाक्षरी छन्द म सती कमला की विरोध अभ्युपना की है। चिना प्रवण का  
कितना मन्त्रीव वगन है —

घनाक्षरी—

कवि रविमल्ल नाह चाह मों उद्यान प्राणि ।  
स्वच्छ कुल माध्विन मिले न भ्रमो ली-हो साइ  
सोक लोक तारिन म किति कमनीय कीनी  
चूरी तजे तिनकी गवरी गजि दी-ही गह ।  
धामुरी सुगी रु नागी बिजनरी लों कुल नार  
रिभार्ड गई देवन की दरगाह  
मीता दयो आशिप धरु धनि उतारया जान  
उर सा लगाई अनुसूया बह्या बाह वाह ॥ ५४४ ॥  
मदन सुहाग को मतीन को पढायो पषपायो ना  
जिनीन घसतीन उर छाया मातु  
सामुरे रु पीहर कों पानिय चढायो दे तीज सम  
मढायो मो बढावा नाम घोव घोव  
कवि रविमल्ल रानी कमला प्रपुन्व करि जोरि  
पट गठि मो न छारी दे मवन राव  
धामर दुरावत हू दिस विमान बैठी हाथ गहि  
नाथ माथ से गई त्रिदिक लोक ॥

१८०-१९६ छन्द तक कवि न कमला व सती चरित्र का अवातर प्रसंग म उल्लेख किया  
है। वीर सतसई के विद्वान त्रय न अपनी भूमिका मे लिखा है— 'भिणाय के राजा  
बलवन्तसिंह के प्रवाद से जात होता है कि सूर्यमल्लजी न सती रासो' भी बनाया था।  
अलवर के ठाकुर साहब श्री बलवन्तसिंह जी बारहट से पता लगान पर पात हुआ कि  
उमकी प्रति अलवर मे है। पर 'सती रासो' 'बलवद्विलास' मे आये हुए सती सबधी पद्यो  
के अतिरिक्त और भी कोई रचना है यह हम मालूम नहीं।' इस प्रकार 'बलवद्विलास'

१ वीर सतसई की भूमिका पृ० ६५

देखे बिना ही इन गिने छंदों को 'सती रासा' नामक पृथक् ग्रंथ में गढ़ने की कल्पना की गई है। जबकि 'सती रासा' निदचय ही ८८ छंदों की एक स्वतंत्र रचना है। बलबद्वि-  
लाम में प्रसंग रूप में सती चर्चा को 'मती रासो' की सजा देना धर्म बढ़ाना ही मात्र  
होगा।

ग्रंथ का प्रारंभ में राठौड़ का कुल का विकास का वर्णन कर भिलाय राज्य की  
संस्थापना पर प्रकाश डाला गया है। उल्लेखित ग्रंथ काव्य में गान काण्ड, उपामना  
काण्ड में वेद, उपनिषद् गीता, सारथ, मोमासा आदि दार्शनिक ग्रंथों का सार संक्षेप दिया  
गया है। गेप भाग में राजनीति के अतगत राजा, ग्रामात्य मत्य, हाथी, घोड़ा मना,  
गढ़ हीरा मोती आदि के भेद उपभेद की विस्तृत रूप से चर्चा की है।

प्रस्तुत ग्रंथ की रचना कवि न 'वग भास्कर' रचना के मध्य में समय निकाल  
कर इस ग्रंथ की रचना वि.सं. १९१४ में की थी।

जह सक विग्रम राज को मरमनि नव कुसमान।

तीजी उज्जवन राधा तिथि इहि प्रबंध उत्थाने ॥

भाषा की दृष्टि में कवि वग भास्कर के समान ही प्रायः ब्रजदेशीया प्राकृत  
मिश्रित भाषा में इस ग्रंथ की रचना की है। ८० पृष्ठों की इस रचना में दोहा, मनहर  
धनाक्षरी पद्वरी आदि मिला कर ५८० छंदों का प्रयोग हुआ है।

ग्रंथ की पुष्पिका इस प्रकार है—

दति श्री राष्ट्रकूट वगावतम भणायपुर भेदन नू

भुजग बलबद्वरि ममभ्यधन साजुमूल पड भाषावग

विलासिनी विनास बंधुर वैगिजतस्त्व

दमसि ३ वाक्या बोध

विदाध बुदीग हृदधि राव राज राव राजेद्र

रामसिंह २०२

सम्य समर्पित सप्रति ससभ्य चक्रि

चरणार्णोज

चा-ध रीभ्य चित्तभ्य चतय चतुर

चूडामणि

चाकचमत्कृत चेतन पौराणिक चारण

चक्र चडाधु

चण्डीदानात्मज सुकवि मूयमल्ल विहित

प्रबंध समाप्तोय मू-नाया

बलबद्विलास ।

बलबद्विलास कवि की बृहत्ता का परिचायक है जिसमें संक्षेप में ही अध्यात्म,  
राजनीति का सार संक्षेप आ गया है।



## महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की प्रासंगिकता

डा रामचरण महेन्द्र

क्या यह सम्भव है कि हमारे युग में भी कोई आधुनिक कवि प्राचीन महाकाव्यों के समान विशाल महाकाव्य सृजन कर सके ?' बूढ़ी के विद्यानुरागी साहित्यप्रेमी महाराज श्रीराममिह ने अपनी विद्वत्सभा को साहित्यिक चुनौती देते हुए कहा ।

उस दिन महाराज की सभा में एक में एक बड़े विद्वान् कवि विचारक एकत्रित थे । वे साहित्यप्रेमी कविहृदय वाले नासक थे । शासन प्रबन्ध की शुष्क कभी न हल होने वाली गुह्यियों से बचे समय में उनके यहाँ साहित्यिक चर्चाएँ और कवि गाँठिया चला करती थीं । आज महाराज के माध मयोग से 'महाभारत' की काव्य सम्बन्धी महत्ता पर बहस चलते चलते महाराज के मन-मस्तिष्क में एक विचार पान की रसिम के रूप में कौंध उठा ।

वे बोले 'क्या कोई आधुनिक कवि 'महाभारत' मरीखा उत्कृष्ट आधुनिक जीवन सम्बन्धी विशाल महाकाव्य नहीं रच सकता ? क्या प्राचीन युग में ही काव्य के लिये उपयुक्त अवसर मातृभूमि थी क्या आज की परिस्थितियाँ काव्य सृजन के उपयुक्त नहीं हैं ? क्या आज वह गौरवमयी काव्य परम्परा विलुप्त हो गई है ?'

विद्या ध्यमनी महाराज के यहाँ राज्य के सब चुने हुए मनीषी, विद्वान् और कवि राज्याश्रय पाते थे । उन्हें राज्य की ओर से साहित्य-सृजन की प्रेरणा तथा हर प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त होती थीं । महाराज राममिह को अपने विद्वत् समाज पर बड़ा गव था ।

महाराज ने पीडा भर आहत स्वर में फिर कहा—

प्राचीन युग में हमारे यहाँ धनक उड़ूट महाकवि हुए हैं कस परित्याग का विषय है कि आप जसी प्रयात् विद्वत् मडली में मर राज्य के कवियों में प्राचीन काव्य-परम्परा को अक्षुण्ण रखने वाला कलम का धनी कोई नहीं है ? हाय, हमारे युग में कोई भी कविता की मशाल जलाने का तैयार नहीं है। बोलिय, क्या आप सबके रहते वह प्रशस्त पूज्यनीय परम्परा विलुप्त हो जायगी ?

उनके शब्द अतमन की गहराई से उठ रहे थे। ऊपर लिखा प्रश्न रह रह कर बार बार उनके अंत स्थल में उठ रहा था। जब कोई न बोला तो उनका मुखमण्डल मुरझाने लगा। वे अपने पीडा पूरा रूप से शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर पा रहे थे। अनेक भाव उनके चेहर पर चलचित्र के पटल पर आ रहे थे। उत्तर देने की मुरझाई हुई आशा से वे पुनः अपने विद्वानों की ओर निहारने लगे।

नहीं महाराज ! वह प्रशस्त काव्य परम्परा तो कभी सूखने वाली नहीं है आपक रहते वह क्या कभी सूख सकती है ? उचित प्रेरणा और नया प्रोत्साहन मिले तो आज भी वह काव्य धारा उबरा है ।

यह कौन बोल रहा है ? आश्चर्य में चारों ओर देखते हुए महाराज ने पूछा ।

फिर आवाज आई—'यह है आपका वृषापात्र चारण सूयमल्ल ।

'ओ, तुम सूयमल्ल मिश्रण ! चारणोचित प्रशस्त स्वाभिमान के प्रतीक तूम्हारे इन शब्दों से मुझे मातृना मिलती है धाविर कोई बोला तो ? किसी ने चुनौती स्वीकार तो की ?'

सूयमल्ल बोल 'सच कहना है महाराज हिंदी कवियों की प्राचीन शानदार परम्परा आज भी सूखी नहीं है आज देश की परिस्थितियाँ विदेशियों द्वारा भारत की गुलामी आघात, लम्बी पराधीनता और उगता उठता शत्रुत्व मग्राम यह सब कुछ ये परिस्थितिमा काव्य-सृजन के लिए अनुकूल है ।'

वे चुप हो गए ।

'तुम चुप कैसे रह गये ?

महाराज में कारी बात ही नहीं करता ?

तो क्या तुम महान् विपुल ग्रन्थ महाभारत जैसा वृहत् महाकाव्य इस युग में किसी आधुनिक विषय और इन नई स्वातंत्र्य आन्दोलन वाले विषय पर लिख सकते हो ? उनका ही विगत काव्य सर्वोत्कृष्ट काव्य गुणों से अलङ्कृत ममस्पर्शी ।

'अप्य महाराज साहब ! महाकाव्य जैसा तो क्या उससे भी बड़ा विविध-विषय-विभूषित विस्तार जा सकता है यदि ।

'क्या मतलब ? महाराज की जिज्ञासा मुक्त हो उठी ।

‘यदि धापनी निरन्तर भिन्नने धानी प्रेरणा घोर मां मरस्वती की कृपा बनो  
रह ता कोई बारण नहीं कि बैगा ही जरकृष्ट महाकाव्य न संसार ही मने ।’

ता क्या तुम धपनी बात गभीरता न कह रह हा ? क्या तुम मेरी पुनीती  
स्वीकार करत हो ? क्या एमी ही विनास धायुनिक जीवन परिस्थितियां पर यीर भाव  
न परिपूर्ण महाकाव्य निख मवन हो कि पढ़कर विद्वत् ममार धमकृत रह जाए ?’

‘नि सदह तिस्य स्रजता हूं, लेकिन एक गत पर ?’

महाराज ने धागा घोर उदाह भये स्वर म कहा, ‘कवि मूयमल्ल क्या बात है  
वह ? हम उये हर तरह महापता महयोग देकर पूरी करेंगे काव्य गगन म नये मूय  
का उग्न होने न । धन चाहिए ?’

‘धन नहीं वेतन मग्नी धुविधात । महाराज न म्ना धमण्ड नहीं करता  
पर लिखन मे काम चना म मुझे धानस्य धाता है इन उगनियों न तलवार  
उडाई है लेखनी ता धगत होने पर कभी उठा नेता ह मैं दम हजार पृष्ठो म एक  
कहू धायुनिक परिस्थितियों का निश्चि करत हू । तयार कर दू गा पर गणेशजी की  
तरह मुझे कोई तेज लिखने धाना चाहिए मैं तो धारण हूं “ गाता मेरा स्वाम है  
मैं जो भी मस्त होकर गाता हू यही कविता रही जानी है । पता नहीं क्या मां मरस्वती  
मेर स्वर म बोलन मगनी है । मैं तो गा गा कर काव्य की पक्तियां धानता जाऊगा  
घोर महाकाव्य तयार हो जायगा मेरे हृस्य म भावों का प्रवाह इनना तीव्र है कि  
मैं उम तेज गति स उम विविध धरन म धममय हू ।’

धादवस्त होकर महाराज न उत्तर दिया, ठीक है । तुम्हें राज्य सरकार की  
धार म गीधर निखन वाले कई निधिम दिये जायेंगे । तुम धाज मे ही उस महाकाव्य के  
मृजन की उवर मनोभूमि बना लो । मेरी धान एक राजपूत की धान सम्मान रह  
जाना चाहिए । लाग कहें कि बूंदी ने भी किमी धमर महाकाव्यकार को जम दिया है ।  
हम, हमारी प्रजा घोर पूरे प्रांत को तुम पर गय हो । भरपूर इनाम सुरिक्षत है तुम्हारी  
साहित्यिक मवाधो के लिए ।’

यह चर्चा तो दरबारी थी किंतु महाकवि ने उस धुनीनी मे रूप म स्वीकार  
किया ।

घोर फिर ?

ध्यासपीठ पर धामीन हो मूयमल्ल ने सनमुष एक नहीं, कई हजार पृष्ठो मे  
महाकाव्य के पूरे मीदय स्वैत्कृष्ट गुणो, तस्कांनीन परिस्थितियों के धनुकूल धपता  
काव्यप्रय ‘बग भास्कर’ नामक वृहत् ऐतिहासिक महाकाव्य निख डाला । ज्यो ज्यो  
कवि वीरोचित उल्लास स गाते जाते त्यो त्यो उस महाकाव्य का विस्तार बढता गया,  
काव्यधारा गङ्गा की तरह ध्रजध्र भाव मे बढती रही जिसने उमकी पक्तिया गुनगुनाई  
वही वीरोचित भाव से भूम उठा । धादचय म पढ गया ।

वश भास्कर’ महाकाव्य की परम्परा महाभारत’ की ही रही है, किंतु यही  
धागुलिपिकार गणपति नहीं थे । उनके स्वान पर धाठ राजकीय लिपिकार एक साथ



कवि के गीत लिखने बैठने थे और महाकवि प्रवाण गति से उस महाकाव्य के प्रा-  
 तत्कालीन स्वातंत्र्य सपना की परिस्थितियों का चित्रण करते हुए लिखवाते जाते थे।  
 घण्टो यह काव्य-निर्माण चलता रहता। जो गन्धर्व उन्हीं एक द्वार गा कर बोल पिय  
 वे फिर दुबारा न दोहराते थे। घण्टो यह महा साहित्यिक कायक्रम चलता रहता था।  
 जब एक प्राशुलिकार न लिख पाता तो दूसरा लिखना धारण कर देता फिर  
 तीसरा चौथा। यहाँ तक कि उनकी उगतियाँ जवाब देन लगती। सूर्यमल्ल  
 फिर पाण्डुलिपि का सशोधन करते काट छाट करते गन्धर्व में उचित परिवर्तन  
 परिवर्द्धन करते सायकाल तक गाने वाला धारण, लिखन वाले प्राशुलिकार और  
 फिर सशोधन करने वाले हाथ—मभी टूट हारे स लगन।

सबको यकते देखकर सूर्यमल्ल धनायाम ही कह बैठन माँ सरस्वती। ब्रम  
 भव कृपा करो।'

और इस प्रकार फिर महाकाव्य—लेखन का सिलसिला दूसरे दिन के लिए  
 स्थगित कर लिया जाता। वश भास्कर' को लिखवान का यह कायक्रम बहुत दिनों तक  
 चलता रहा। इतने वष धीत गय, फिर भी सूर्य की तरह साहित्याकाश मे यह प्रथम और  
 उसके लेखक चमक रहे हैं। यह महाकाव्य डिगल साहित्य की एक अतिस्मरणीय मणि  
 है। यह ऐतिहासिक प्रसंग भुलाय नहीं भूलता। बूढ़ी क राजमाय पर एक शताब्दी में यह  
 कहा जाता है कि महाकवि सूर्यमल्ल न सरस्वती का सिद्ध किया था। वाग्देवी न स्वयं  
 उनकी जिह्वा का मस्कार किया था।

जो भी हो पट—भाषा ज्ञाता महाकवि सूर्यमल्ल डिगल साहित्य क विष्णान  
 पंडित तत्त्वबोध के मूर्तिमान स्वरूप, इतिहास के ममन चौदह विद्या के निधान चौमठ  
 कला निपुण, मीमांसक और बाव्यशास्त्र योगशास्त्र धायशास्त्र व्याकरण गनुनशास्त्र  
 के विद्वान थे— इसम सन्देह नहीं।

वह हिंदी की रीतिकालीन कविता का अंतिम चरण था। उनका जन्म सन्  
 १९१५ ई० मे हुआ था उषर कवि पद्मानरजी १९३३ मे परलोकवासी हुए थे।  
 इस प्रकार वे पद्माकर और ग्वाल कवि के समकालीन थे। उन् के मिर्जा गालिब बगला  
 के रवीन्द्र और माईकेल मधुसूदन दत्त उनके समकालीन काव्य-विभूतिया थी। सूर्यमल्ल  
 हिंदी के महत्त्वपूर्ण राष्ट्रीय कवि थे। सन् १८५७ के समय रजवाडो के नामको को  
 उन्हीन देग की एकता और अखण्डता बनाये रखने और विदशी शक्तियों का साहस म  
 मिल जुल कर मुकाबला करने को पत्र लिख थे। उनम उनकी देश भक्ति स्पष्ट होती है।  
 वे स्वातंत्र्य युद्ध के सेनानी थे। स्वदेश भक्त थे। राष्ट्रीय भावना स्पष्ट करने की दृष्टि  
 से उनीसवीं सदी के प्रथम राष्ट्रीय कवि माने जा सकते हैं। उन्हीन देश मे आजादी के  
 प्रति चेतना उत्पन्न की थी। राजस्थान वीरभूमि रहा है। यहाँ के वीरो की प्रमर  
 गायाए युग युग स कवियों को राष्ट्रीय चेतना युक्त काव्य-सृजन के लिए प्रेरित करती  
 रही है। उनकी वीरता साहस गीय, युद्ध कौशल और धय की वीर गायाए प्राय मान  
 वाले कवियों के प्रिय विषय रहे हैं।

राजस्थान में वीरो की कुछ स्वस्व परम्पराएँ हैं। जगहरण के लिए व कभी युद्ध में पीठ नहीं दिखाते। व यह मानते रहे हैं कि अपनी मातभूमि को कभी दूसरे के कब्जे में नहीं जान देना चाहिए। यदि किन्हीं कारणों से वह विदेशियों के कब्जे में पहुँच भी जाय तो हर मूल्य पर उस वापिस लेना चाहिए। ऐसी ही परिस्थितियाँ अभी भी हैं। अंग्रेजों से हमने देग का मुक्त कराया है। स्व-निर्माण व प्रश्न सामन है। चीन, पाकिस्तान वगैरह शीलका प्राप्ति हमारी भूमि पर गिद्धदृष्टि लगाय हड़पने की तत्पर हैं। चीन तो बहुत सी भूमि छीन भी चुका है। पाकिस्तान ने बहुत सा कश्मीर का भाग दबा लिया है। सूयमल्ल का सन्देश यह है कि हमें हर बलिदान देकर शत्रु से अपनी भूमि वापिस लेनी चाहिए। शत्रु को परास्त करने के लिए सब रजवाड़ों, पाटियों, गाँसकों, देशवासियों, नेताओं को अपने समुचित स्वायत्त्याग कर देग का सामूहिक हित देखना चाहिए। दुश्मन को पराजित करने के लिए हम सबको एकजुट होकर युद्ध के म्यान में उतरना चाहिए। इस एकता और प्रखण्डता की महिमा सूयमल्ल के काव्य और गदर के समय लिखे गये पद्यों में स्पष्ट होती है। व सामंतादम दण्ड भेद हर उपाय से देशी राजाओं को एक करना चाहते थे। राजपूतों में बर का बदला लेने की परम्परा चली आई है। इस मन्त्र में वे लिखते हैं—

रण खती रजपूत री, वीर न भूले वाप  
बारह वरसा वाप री लहे वीर ककाल ।

उनकी 'वीर सतसई' राष्ट्रीय नवचतना का प्रारंभ माना जा सकता है। इस काव्य पर तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना दश-प्रेम, स्वदेश भक्ति आदि तत्त्व मुखरित हुए हैं। डा आलमशाह खान के शत्रुओं में इस वीर काव्य को निश्चय ही सूयमल्ल की कीर्ति का कलश और मरु-मरुस्थली के मंदिर का उत्तुंग शिखर कहा जा सकता है। हम मुक्तक रचना में ठेठ राजस्थानी जन-जीवन की शोणितस्वात् रेखाएँ यों उभर आई हैं कि देखने पर रण-धवल राजस्थान का पूरा मानचित्र प्राणों में भर जाता है। इसमें कहीं स्वामी के नमक उजालन की उत्कट आकांक्षा (वीर० ८) है तो कहीं घमयुद्ध ठानने की तत्परता (वीर० १४७-१४९) कहीं ज्वाला का दलकर झुलसित होने की सीख है (वीर० १५) तो कहीं शस्त्र को देखकर भ्रष्ट पडन की नसीहत (वीर० ९४) कहीं मरण पत्र का उल्लास है (वीर० ५०) तो कहीं दूध का लजाने पर लोभ (वीर० ५५) तो कहीं कायर पुरुष के लिए वीरागना व नीचे झुक नयन (वीर० ११६) कहीं रणक्षेत्र में कराहत हुए परिजन का जल न पिला सकने की वबसी (वीर० २०७) कहीं अचल आकार युद्ध के घोंघे की और चल पडने वाला दाँका वीरत्व है।

संक्षेप में सूयमल्ल ने दश की राष्ट्रीय कविता-धारा, राष्ट्रीय चेतना को मुखरित किया। उनका काव्य राष्ट्रीय काव्य कहा जा सकता है और उसका मूल स्वर शौर्य है। अपने युग में देशभक्ति जन एकता और राष्ट्रीयता की जो परम्परा प्रवर्तित की थी, वह बाद में निरंतर गतिशील रही। उनकी 'वीर सतसई' के दोहे तब लिखे गये थे जब राष्ट्र उदबुद्ध होकर विदेशियों से संघर्ष करने के लिए सन्नद्ध था।

## राजस्थानी मानक रूप के प्रस्तोता-सूर्यमल्ल मिश्रण

डॉ० कहेयालाल शर्मा

सूर्यमल्ल मिश्रण का मूल्यांकन अधिकांश म कवि रूप में ही ही पाया है। उनके 'वीर मतसई' एवं 'वग भास्कर' ग्रंथों पर तो विशेष विवचन हुआ है और 'राम रजाट बनबदिलास छन्दो मयूख 'सतीरासो और फुटकर कवित्त-सबदो पर मामा'य चर्चा हुई है। उनकी रचनाओं के भाषा-पक्ष पर विचार करते समय उनके भाषा-विषयक विस्तृत ज्ञान का पराहा गया है। 'सूर्यमल्ल जी भाषाओं के बने प्रच्छे जानकार थे और उनको मालूम था कि वे वश भास्कर को किस भाषा में लिख रहे हैं।' इसलिए 'प्रसंगों के आरम्भ में ही प्रायः व्रजदेशीया-प्राकृत मिश्रित भाषा, शुद्ध प्राकृत, संस्कृत, शुद्ध व्रजभाषा अपभ्रंश मिश्रित मरुभाषा आदि शीघ्र देकर आगे चल लिखते हैं।' वग भास्कर में प्रायो व्रजदेशीया प्राकृत मिश्रित भाषा का ही प्राधान्य है। 'वीर मतसई' की भाषा इससे भिन्न है। वह है 'उत्तरकालीन डिगन' जो बोलचाल के अधिक निकट है।

उपयुक्त प्रतिपादन में स्पष्ट हो जाता है कि सूर्यमल्ल बहुभाषाविद् समर्थ कवि थे और वे अपनी रचनाओं में अपने भाषा-ज्ञान की स्पष्ट छाप छोड़ते रहे हैं। वे भाषा-विशेष का प्रयोग मयूख जागरूकता के साथ करते रहे। इनके मूल में उनका विभिन्न भाषाओं का सुव्यवस्थित अध्ययन रहा। इसी का परिणाम यह था कि उन्होंने

१ सूर्यमल्ल मिश्रण-वीर मतसई (म पतराम गोड प्रभृति) की भूमिका, पृष्ठ ६५

संस्कृत के सुस्थापित व्याकरण-ग्रन्थों के हाते हुए भी 'धातु ह्रावलि' की रचना कर डाली और उसे अपनी व्यवस्था प्रदान की। अपने अश्व काल में ही उन्होंने सधि-ज्ञान प्राप्त कर लिया था और १२ वय की अवस्था में तो वे पद-ज्ञान में प्रवीण हो गए थे—

शिशु चरितरत प्राग्भ्रंशिवडढापनोऽपि ।  
प्रतिपन्नाधिकृतोऽहं शाब्दबोध प्रवीरा ।

वक्ष भास्कर प्रथम गणि, प्रथम मसूख पृ० १५  
(वीर सतसई की भूमिका में उद्धृत)

सूयमल्ल मिश्रण अपने काल के सर्वाधिक जागरूक व्यक्ति थे। कवि वर्ग के अनिर्दिष्ट वे अपने काल के जीवन-मूल्यों राजनीतिक घटना-चक्र, समाज संस्कृति आदि पर भी सजग दृष्टि रखते थे। उनके जीवन-काल में दश में स्वतंत्रता की प्रथम शक्ति-शाली लहर उठी थी। तब वे राजाश्रित कवि थे और अपनी कलम राज-परिवार एवं जागीरदारों के प्रशस्ति-लेखन पर चला रहे थे। जब उन्हें स्पष्ट संकेत मिले कि देश में स्वतंत्रता का विगुल बज चुका है, देशवासी अंग्रेजी शासन को उखाड़ फेंकने के लिए उठ खड़े हुए हैं और अनेक स्वतंत्रता-सेनानी मर मिटने के लिए प्राण बलि दे चुके हैं तब उनका प्रमुख स्वतंत्रता-सेनानी जाग उठा। उन्होंने अपना कृतव्य पक्ष निर्दिष्ट कर लिया। उन्होंने तलवार तो नहीं उठाई पर उनसे कहीं अधिक शक्तिशाली अस्त्र उठाया और वह था उनकी कलम। उसने द्वारा उन्होंने अनेक स्वतंत्रता-सेनानियों को जगाया और उन्हें दिशा दी। यह काम किया उन्होंने वीर सतसई के सशक्त दोह लिखकर और अनेक पत्रों द्वारा। जिन्हें उन्होंने पत्र लिख वे राजस्थान एवं मध्यप्रदेश के एम वीर थे जो कुछ कर गुजरना चाहते थे और दिशा-बोध की तलाश में थे। सूयमल्ल ने इस गुह्यतर दायित्व को समझकर कुशल नेतृत्व की महती भूमिका निभाई।

तब उन्हें ऐसी भाषा की आवश्यकता थी जो सहज, सरल स्पष्ट समझ एवं सुस्थापित हो और उनका संदेश सम्बन्धित व्यक्तियों तक संपूर्ण रूप से पहुंचा सक। राजस्थान एवं मध्यप्रदेश में एक समय गद्य भाषा तब प्रचलन में थी जिसका प्रयोग तत्कालीन राजपरिवारों, राज दरबारों के पत्र व्यवहार, पट्टे परवानों में हो रहा था। वह शिष्ट समाज में भी सम्मानित थी और व्याप्त, वात, वचनिका आदि गद्य विधाओं में अपना रूप सवारती हुई अवतरित हुई थी। उसमें समय संप्रेषणोपत्ता की समस्त विधा-ताएँ विद्यमान थीं। जिसे राजस्थान के एवं मध्यप्रदेश के सभी विद्वान सहज रूप में समझ सकते थे और जो माध्यम भाषा के रूप में सम्मानित थी। डा० प्रियसन ने अपने भाषा-सर्वेक्षण में इसी के प्रसार को राजस्थान के बाहर 'मालवी' एवं 'निमाठी' रूप में पाया था। सूयमल्ल मिश्रण ने अपनी काव्य भाषा को इसके लिए उपयुक्त नहीं समझा, क्योंकि गद्य भाषा में वे काव्य भाषा के समान नया प्रयोग नहीं करना चाहते थे। वे सुस्थापित एवं परंपरा से प्राप्त मानक भाषा रूप को अपनाकर चलने में उभय पक्षीय सहज बोधकायता से परिचित थे। धन उन्होंने अपने पत्रों में राजस्थानी के मानक रूप का प्रयोग किया।

सूयमत्त मिथ्या यहूभाषाविद् एवं व्याकरण के गहिरा थे। अपने सम्पन्न काल में उन्होंने मन्त्र, प्राकृत, अपभ्रंश व व्याकरणों का अध्ययन किया था। इन सब पर राजस्थानी भाषा का पत्र व्यवहार में प्रयोग कर रहे थे जब उस भी व्याकरण-सम्पन्न, परिष्कृत एवं मानक रूप प्रदान करती थी दुर्लभ प्रयोग बन कर धार्ष्ट्य हासिल। राजस्थानी इनकी मातृभाषा था और परम्परा में प्रायः काव्य भाषा भी थी। उगम काल रूपता की और पारंगत कविता द्वारा उनके गद्यों का विषय मान्यता प्राप्त प्रयोग करने का परम्परा था। गद्य भाषा साध-रस्यहार में सुन्दर गद्य है और सगुण के द्वारा उदाहरण परिष्कृत रूप प्रयुक्त होता है। सूयमत्त ने अपना पत्रों में पूर्णतः स्थितियों को समझकर उमका प्रयोग किया। प्रतिभा-सम्पन्न रचनाकारों ने द्वारा उदाहरण कलावाम हा हो जाता है और ये भाषी पीढ़ी का ज्ञान बाध कर जाता है।

सूयमत्त मिथ्या का मातृभाषा राजस्थानी भाषा की मूल प्रदत्त अन्वयनीय विषय था है कि यह भारतीय मन्त्रिण का प्रथम धर्म का स्थापित करने के लक्ष्य का सम्पूर्ण रत्नरत्न धरती है। पद्यों में भारतीय मन्त्रिण एवं मन्त्रिण भाषा परम्परा पदावकाशों को वन गई है इन उनकी भाषा में मन्त्रिण गद्यों का तत्सम रूप में स्वीकार करके पत्रों का साधक है। यद्यपि भाषा में प्रथम तत्सम गद्यों का प्रयोग होता है पर उसमें उन्हें गौरवपूर्ण स्थान प्राप्त नहीं हो पाया। अतः वे अपने सम्पूर्ण ही रह जाते हैं। किन्तु भी भाषा में तत्सम एवं सद्भाव गद्यों का ही प्राधान्य होता है। तत्सम गद्यों का विस्तृत करके निम्न में य प्रथम तत्सम गद्यों का ज्ञान है यथा निम्न द्वारा व्यवहृत किया जाने पर ही भाषा-विषय की सम्पत्ति बाधित है। गद्यों की भाषा-विषय की प्रकृति व अनुष्ठान ढालन के नाम पर उन्हें विस्तृत करना और विविध प्रथम तत्सम गद्यों को उसमें स्वीकार करना तो निम्न स्थितियाँ हैं। प्रथम में वृद्धिमत्ता है और द्वितीय में सहजता है। सूयमत्त राजस्थानी में तत्सम गद्यों का साधकानुसार अपनापन व पक्षधर के उन्हें विस्तृत करना उचित नहीं था—

और शरीर की निरवधारिता में निपट गायस्थानी रक्षाधर्म। या शरीर की प्रथम प्राण्यो आद्या लार्ग ऊ प्रथम भाषां ता तथा सो भी तुच्छ निष्ठा जाव छ मो तो ठीक छ नीं को तो म्हाने भी निश्चित भरोसो छ पर तु ऊ प्रथम बिना और समय में सदा ही या शरीर प्रयत्नपूर्वक रक्षा करना को छ।

(डा. पूनसिंह जी (पापलया) को पोष्य पुस्तक प्रतिपत्ता न १९१५ को लिखा पत्रांतर) १

आज राजस्थानी में कविता ने अनेकमुखता अपना रखी है— सद्यः सद्यः/सद्यः/सद्यः/सद्यः/सद्यः, कृति/कृति, साहित्यिक/साहित्यिक आदि सबको शब्द अपने अन्तर्भूत अर्थों के विषय में विहित है। सूयमत्त के काल-भ्रम में भाषा दान करती है। वह कहते हैं कि गद्य का तत्सम रूप ही प्राधान्य बनना चाहिए। तत्सम

शब्दों का बहुधा प्रयोग करके हम अपनी भाषा का समृद्ध, धनीतम म जोड़ने हैं और उसे सा की भाषा भाषाओं के निकट से जाते हैं। देव की अनेक भाषाओं में—हिन्दी, बंगला आदि में—सबसे अधिकवली की अपनी भाषा उन्हें समृद्ध बनाया है। तत्सम शब्दों की राजस्थानी प्रकृति में आत्मन की प्रवृत्ति अपनी-आप उभर करती है और सरल-पाठक के लिए दुर्लभता।

सूयमल्ल भाषा की उत्पत्ति का पक्षधर है। ये अनेक भाषाओं के जाता होते हुए भी अपनी गद्य-भाषा राजस्थानी को मिश्रण भाषा नहीं बनाने। शब्द-भण्डार ना मरुत, उड़ू-पारसी शब्द आदि के शब्दों में भर लेने पर व्याकरणिक रूप तो राजस्थानी के ही होते। शब्द-भण्डार किसी भाषा की प्रकृति का इनका या सफल देना है कि उस भाषा में अनेक भाषाओं के शब्दों को अपनी-आप उभर पचान का क्षमता है, पर उनकी मूल प्रकृति तो उनकी व्याकरणिक मरचना द्वारा ही निर्धारित होता है। मूल-प्रकृति का निर्वाह करना सूयमल्ल का प्रिय लगता है, इसमें उनका भीतर निहित मान व्याकरण परितुष्ट होता है। अतः राजस्थानी में प्रचलित रूप-विविध म में सुस्थापित रूपों का चयन पर उन्हें ही व अपनी-आप है। जहाँ अनेकरूपता उनके गद्य में दिखाई देती है वह अस्तुतः अनेकरूपता नहीं है अपितु 'परिपूरक' विवरण अवस्था है जो समार की सभी विनित्त भाषाओं में मिलती है। केवल एम्पिरना जा कृत्रिम भाषा है, प्रपवादो स रहित भाषा है।

नीचे सूयमल्ल मिश्रण द्वारा म० १६०७ म १६१५, १६२४ के मध्य में लिखे गये पत्रों की भाषा के आधार पर उनकी भाषा की विशेषताओं पर विचार किया जा रहा है, जिनका उपयोग वीर गतनई की भूमिका में विद्वान् सपादकों ने किया है—

१. स्वरों की सख्या तो परम्परागत है, 'ऐ' एवं 'औ' के उच्चारण में अन्तर आया है। शब्दात्त में मिश्रण वाला 'ऐ' विलम्बित 'औ' रूप में उच्चरित होता है। शब्द में अक्षर इसका प्रयोग प्रायः नहीं मिलता। 'छै', 'वरे' में विलम्बित अ मिलता है। 'औ' एवं 'औ' के उच्चारण का अन्तर मिश्रण या दीर्घ पड़ता है। अतः चाली/चाली की विलम्बित बननिया मिलती है। 'औ' ही स्पष्ट उच्चरित होता है।
२. इ स्वर का प्रयोग शब्द में सर्वत्र मिलता है— और वह गुड़ रूप में उच्चरित होता है— इरेज/इगरेज होद।
३. ऋ स्वर का तो एकांत अभाव है पर अ स्वर तत्सम शब्दों में मिलता है। इसका उच्चारण रि है— वृण वृत्तान्त।
- ३ A साधुनासिक स्वरों का प्रयोग प्रचुर मात्रा में मिलता है— तीनों वहाँ।
४. 'ट' अनुनासिक व्यंजन का अस्तित्व केवल समुक्त व्यंजन में मिलता है पर 'अ' का प्रयोग किसी भी रूप में नहीं मिलता। लिखावट में '—' लिपि-बिंदु उसका स्थानापन्न बना है और उच्चारण में वह 'नू' बन गया है— पत्त-पत्त।
५. 'ड' एवं 'डू' उच्चरित व्यंजनों ने अपनी स्पष्ट अस्तित्व बना लिया है, और ये शब्दों के मध्य या अंत में प्रयुक्त होते हैं— लड चडि

६ 'ण' व्यंजन का प्रयोग बाहुल्य है और वह स० 'न' का स्थानापन्न बना है। सयुक्त व्यंजन में उसका उच्चारण 'न' है, पर असयुक्त व्यंजन रूप में वह शुद्ध रूप में उच्चरित होता है— खण्ड, छावणी ।

७ 'श' व 'ष' गिन ध्वनियों का प्रयोग तत्सम गणों में मिलता है। तदभव गणों में 'म्' तीनों स० शिन ध्वनियों का स्थानापन्न बना है— जासी, चातीम शोमि।

८ 'म्' 'न्' लू महाप्राण व्यंजनों का विकास स्पष्ट रूप में दीर्घ पड़ता है। य गण के प्रथम अक्षर में प्रयुक्त हात है— म्हाकी, हावा ल्हाडकयो ।

९ पार्श्विक उत्क्षिप्त 'ल' व्यंजन ने अणना स्पष्ट स्थान बना लिया है और यह असयुक्त 'ल' का स्थानापन्न बना है— टलि मल । इसका प्रयोग गण के आरम्भ में नहीं मिलता ।

१० महाप्राणता शब्द में मधुप्र मिलता है— फोडि राखवा, मूडा उठ ।

११ प्रयत्न-लाघव के कारण ध्वनि-संक्षेप की प्रवृत्ति स्पष्ट रूप में उभरी है—  
लिन्यो गया जाण्यो म्या (मिन्वा)

१२ ससाक्षर व्यंजनात् एव स्वरान्त होत है। जहाँ व स्वरान्तता है वहाँ उनकी पुल्लिंग-एक वचनता धोकारान्तता से और स्त्रीलिंग-एक वचनता ईकारान्तता से प्रकट होती है। आकारान्तता एव ईकारान्तता की यह प्रवृत्ति सवनामों विशेषणों, सम्बन्ध कारकीय परमणों, वृद्धतीय रूपों में भी दीर्घ पड़ती है। बहुवचन बनाने के लिए पुल्लिंग धोकारान्त रूप — घा प्रत्यय अणनात् है और स्त्री लिंगीय ईकारान्त रूप — 'घा' प्रत्यय ।

१३ शब्द मूल रूप से पुल्लिंगवाची होत है और स्त्रीलिंग शब्दों का निर्माण स्त्रीलिंगीय प्रत्ययों द्वारा है, जिनमें से प्रमुख है— 'ई' एव 'घए' ।

१४ कारक-रचना में विकारी गणों के साथ परसग जोड़ जाते हैं। कर्त्ता कारक का परसग प्रति 'ने' है कम सप्रदान के कू है ड, करण-प्रति करण अयादान के मू से सम्बन्ध के का वा, की अधिकरण के म माहि घाति है। सम्बन्ध कारकीय परमणों में— 'र' युक्त परसगों का अभाव उल्लेखनीय है— म्हाको राजा को ।

१५ सम्बन्ध वाचक सवनामों में जीन 'जीको' तथा 'ज्याने' 'ज्याको' रूप आक्षेपक हैं। नित्य सम्बन्धी सवनामों से के तीने तीको रूप आक्षेपक है। त्पाहै वाहै (उनको) रूप भी आक्षेपक है ।

१६ सप्रत्यय विशेष्य में अचित रहत ह । यह अचित लिंग-वचन-स्तर पर होती है।

१७ अस्तिवाचक क्रिया के सामान्य वतमान एव सामान्य भूत के रूप है— घ, घो घा । अय क्रियापद/हो घातु से सम्पन्न होते हैं ।

१८ सामान्य वतमान हिन्दी से भिन्न स० 'नट' लकार से विकसित है। इसका प्रत्यय 'घ' है। धनक अवस्थाओं में इसका दुहरा प्रयोग मिलता है— जावै छ कर छ जिनसे 'जावै' एव 'करै' की धर्म बोधकता ही प्रकट होती है ।

- १६ सामान्य भविष्यत् का प्रत्यय— 'सू' है और सबत्र— 'ई' प्रत्यय के साथ प्रयुक्त इसका यह रूप भविनारी है— तू जामी, म्हा जासी । 'रा' प्रत्यययुक्त रूप प्र है— राखागा, जाणोगा ।
- २० सामान्य भूतकाल के लिए स० भूतकालिक वृद्धन्तों से विकसित क्रिया रूप है— चाल्यो दिया । पर 'दो-ही' जैसे रूप भी मिलते हैं ।
- २१ वतमान कालिक कृद्धत का प्रत्यय— 'त्' है । क्रियापक सज्ञा का — 'प्' और कालिक वृद्धन्त का — 'यू' । पूर्वकालिक वृद्धन्त — 'इ' प्रत्यय से सम्पन्न होता कडि, खलि, और — 'कर', — 'कं' स भी ।
- २२ समुक्त क्रियापदों का प्रयोग बहुलता में मिलना है । समुक्त क्रियापद भा सम होते हैं इनमें भाषा-मामध्य घड़ती है— लिखि दिया, बिक् गिया कडि, भा प्रथम प्रकार के पूर्वकालिक वृद्धत इनमें पूर्वपद बनाते ह ।
- २३ अकार, अठी, उठी उठा पछै, जद, क्यूकि तीपर, इसके कुछ प्रमुख अव्यय
- २४ निषेधवाचक वाक्यों में निषेधवाचक अव्यय का प्रयोग वाक्यान्त में हात यलसी नहीं, मिले नहीं, मुणवाई करे नहीं । अय प्रकार की वाक्य-रचना में मिलती जुलती है ।

उपर्युक्त विवेचन में स्पष्ट है कि सूयमल्ल मिश्रण की भाषा में विश्लेष का विकास हिन्दी में समान मिलता है । हिन्दी एक राजस्थानी के वतमान रूप का एक ही काल में हुआ । हिन्दी का यह तीभाग्य रहा कि उसे समर्पित लेखकों गति से आगे बढ़ाया और राजस्थानी में सूयमल्ल मिश्रण के बाद गद्य लेखन-रिक्तता-में आ गई । और वे राजस्थानी गद्य परम्परा के अंतिम दीप शिखोदय : रह गये । बाद में जब नये निरे से गद्य रचना आरम्भ हुई तो उसके लेखक परम्परा में जुड़े और सुविधानुसार अपनी अपनी बोलियों में गद्य-रचना आरम्भ कर दी । यदि मल्ल मिश्रण के गद्य की आधार बनाकर रचना हम की छपाने तो अनवरूप वर्तमान सबट प्रस्तुत नहीं हो पाता और भाषा में विखराव नहीं आ पाता ।



## महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण के काव्य में नारीतत्व

डॉ० मनोरमा सबसेना

‘मानव विधाना की मर्माङ्कुरि है । नारीतत्व व पुष्पतत्व क समीकरण स सृष्टि की सरचना हुई । अतः काव्य में प्रकृति पुरुष व नारी मभी, अभि न उपादान बने । पुरुष कमस्वरूप शक्तिस्वरूप है ता नारी उमकी प्रेरणा स्वरूप रही है । पुरुष व नारी दोनों ही एक दूसरे के बिना अपूर्ण हैं । सम्पूर्ण विचार व साहित्य का प्रवर्तन करने पर यह स्पष्ट होता है कि मभी साहित्यकारों ने नारी को अपना अपना ‘नजिए’ से मानी शक्ति से देखा है ।

यदि वाल्मीकी जी ने उस नारी का आदि शक्ति सीता के रूप में देखा है तो कालिदास के काव्य में वह नारी शकुन्तला अथवा सतीरूपा पावती बना है रविदास उस नारी की छवि को देख कह उठें हैं— O Women ! thou art half dream and half reality शरद ने उस नारी को पागे व चंद्रमुखी क त्याग — सहनशील स्वरूप में देखा, वीर गाथा काल में नारी युद्धों का कारण रही तुलसी ने धीरज धरम मिश्रण अथ नारी ऊर्ध्व नारी को धर्म के समरक्षक ठहराया है कबीर के लिए नारी माह की खान व साधना में बाधा रही सूर ने नारी का वास्तव्य स्वरूपा हृदय देखा । बिहारी की शक्ति बंदल नारी व अनिघार दीर्घ धरम को ही दल पाई ।

सूर्यमल्ल मिश्रण ही एक ऐसे कवि हैं जिन्होंने नारी को सच्चे अर्थों में विभिन करने का मपन प्रयास किया है । उनकी नारी ने तलवार में अधिकार कर लेने वाली सचन सम्पत्ति थी न माया की प्रतीक न बाधना की पुनली । यह नारी है अपने राष्ट्र

के लिए समर्पित रहने वाला पत्नी जो क्षात्र घम निभान के लिए सहृदय वीरपति को रण में भेजती है। एक जागरूक माँ है यह नारी जो अपनी सन्तान में बचपन से ही मातृभूमि पर मर मिटने के संस्कार भर देती है। यह नारा एक ऐसी बहिन भी है जो अपने भाई के राखी बांधते समय भी उसमें अपनी मातृभूमि की रक्षा का वचन माँगती है।

राजस्थान की धरती बलिदानियों के बलिदान व वीरागनाओं के जोहर से भरी पड़ी है। यहाँ की मिटटी भी नमन करने योग्य है यहाँ की नारी भी।

सूयमल्ल मिश्रण न नारी के उस उदात्त स्वरूप को अपने काव्य का विषय बनाया है जो प्रेरणा का आगार है। सूयमल्ल मिश्रण ने वस्तुतः भारतीय नारी का नये ढंगों में मौलिक संस्कार किया है। जहाँ नारी का हृदय प्रणय का सागर है वहीं उसमें राष्ट्र बल्याण की गरिमा भी है। तलवारों की झंकार के मध्य जब सारा देश प्रतिन की लपटों में जल रहा था उस समय यह नारी अपने पति व पुत्र की युद्ध में सफलता की मंगल कामना करती है। कवि ने 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' की भावभावना को कितने सुंदर ढंग से अभिव्यक्त किया है—

इला न देणी आपणी हालगिया हुलराय,  
पूत सिखावें पालणें मरण बढ़ाई माय।

वारमाता बालक को पालन में झलती हुई वीरता के लिए संस्कारित कर रही है। मातृभूमि के महत्व को समझा रही है—

हे पुत्र ! अपनी धरती कभी भी शत्रु का न देना। मातृभूमि के लिए मर मिटने का महत्त्व को समझा रही है।

जिम देश की नारी जागरूक तथा अपने बच्चों के संस्कारों के प्रति प्रारंभ से ही जागृत होगी उस समाज का निर्माण व संरचना कितनी उत्कृष्ट होगी यह कवि की इन पक्तियों में दिखाई देती है—

घाज घरे सामू वहे हरब अचानक काम,  
बहू बलेवा हूलस पूत मरबा जाय

पति यदि वीर गति का प्राप्त हो तो यह परम सौभाग्य की बात है क्योंकि वह मरण पक्ष समस्त परिवार में असीम उल्लास भर देता है। बहू के उल्लास का कारण साम का शीघ्र ही ममक में आ जाना है। वीर वंश की गीत नीति ही यही है। दुर्भाग्यवश यदि पति रणक्षेत्र से पीठ दिखा कर लौट आता है तो वीर नारी उस कायर पति के रणक्षेत्र से भाग आने पर अत्यन्त लज्जा का अनुभव करती है। माता ममकती है कि भागे हुए कायर पुत्र न उसके दूब को लज्जित कर दिया है ता पत्नी सोचती है उसका 'बूढ़ा लज्जित हो गया है।

वीर राना मनिहारिन से जब यह कहती है कि अब इन महलों में तुम्हारा क्या काम अब तुम यहाँ मत आना क्योंकि रण से भागा हुआ पति तो मृत्युवन्त ही है—

मणिहारी जारी सखी, अब न हवेली भाव

पीव मुवा घर आविया, बिधवा किसी बरणाव

कवि दिनकर ने इसी वीरता को देख कर अपने ये भावोंद्वारा प्रकट किए थे—

राजस्थान की मिट्टी वीरता की समाधि है। इस मिट्टी पर खूब हो कर भावनाओं को रोक सकना कठिन है। यहाँ प्राते ही भावनाशील मनुष्य की कल्पना में अनेक तलवारें एक साथ भंकार उठती हैं। पूवजो का रक्त मानो नींद से जगकर धमनियों में खौलने लगता है तथा भारतीय नारी के बलिदान की गौरव गिखा, चितौड़ की चिता मनश्चक्षु के सामने साकार हो जाती है। पर यह माचकर ठिठकन लगत ई कही प्रगले कदम पर किसी सूरमा की समाधि न हो और हृदय अघोर हाकर धरती स यह अनुरोध करने लगता है कि— बहदे उनस जगा कि कब से उनका रथ खाली है।

इस वीरागना का तो कायर का पडोस तक भला नहीं लगता। कवि न एक नारी की घेदना को उसकी सखी में कहत हुए चित्रित किया है—

नहँ पडास कायर नरा हलो बास मुहाय।

बलिहारी जिए देसने, माया मोल बिकाय।

यह वीरागना की भावना है कि जिस दश में वीर अपने शीश को मातृभूमि को समर्पित कर देने में नहीं हिचकते ऐसे दश पर योद्धावर हो जाने को जी चाहता है लेकिन कायर के पडोस में तो रहना भी अच्छा नहीं।

नागण जाया चीटला, सिहो जाया भाव

राणी जाया जहँ रुवें सो कुल बाट स्वभाव

वीरता के मजग प्रहरी कवि ने भारतीय नारी के उस उज्ज्वल राष्ट्रप्रतीक शक्तिमत्, प्रेरक समय तथा सतीत्वमय स्वरूप को स्थापना की है जिससे भारतीय नारी एक देवी-प्रतिमा के सदृश काव्य में स्थापित हो गई है। वीर सतसई की नारी क्षात्रधर्म की विजय ध्वजा है।

सूयमल्ल ने माँ के द्वारा अपने पुत्रों बहनो के द्वारा अपने भाइयों को और पत्नियों के द्वारा अपने पतियों को प्रेरित करके का माध्यम सफलतापूर्वक अपनाया है।

बाला चालम बीमरै मोथण जहर समाण

रीत मरता डोल की उठ कियो धमसाण

हे प्रिय पुत्र ! तू अपनी परम्परागत चाल का मत भूल क्योंकि मेरा दूध जहर के समान है अथात् जो इसका पीता है वह भीघ्रातिशीघ्र मरता है तुमने व्यथ ही मरने में विलम्ब किया अब मुझ प्रारंभ हो गया है अतः शीघ्र ही मरने के लिए तयार हो जाओ।

पूजाए गज मातियो मोडाणो कर मुझ।

बीजाएँ धण चामरा है चूड़ी बल तूझ।

पतिदेव तुम गजमोतियो से पूजे गये मेरे हाथ द्वारा सहलाए गये घोर घ्राप पर घनेक चेंबर चिह्न डुलाए गये मेरा मुहागचिह्न चूड़ा ही तुम्हारा बल है । इसी मे मेरा मुहाग सायक है ।

सूयमल्लजी के समय तक घ्राकर मतीप्रथा पर रोक लगा दी गई थी पर कवि सतीप्रथा की महिमा को प्राजीवन नहीं भूल । वे केवल नारियो से ही बलिदान की प्राकाशा नहीं करते थे अपितु नरो म भी उह यही उम्मीद थी । आश्रयदाता राजा के लिये व कामना करते थे— हमारे राजा का मस्तक घोर के टापों की ठोकुरें खाता फिर अर्घात युद्ध क्षेत्र मे राजा मर कर अमर हो ।

मतीप्रथा के पीछे शायद तत्कालीन परिस्थितियाँ व परिवेश का दायित्व था । हमारे यहा नारी की पूजा की जाती है तथा उसकी देह को देवमन्दिर के सदृश पूजा जाता रहा है । उसको दैहिक व मानसिक दोनों पवित्रताओं का महत्व रहा है । यही कारण है कि नारियो ने बबर आक्रान्ताओं की लोलुप कामी दृष्टि से बचाकर अपनी देह का अग्नि समर्पित कर पवित्र रखने का प्रयास किया होगा ।

भारतीय नारी ने अपने मुख से समाज को जो प्रेरणा दी वे इस प्रकार थी—

- (१) युद्ध मे छाती पर घाव खाने चाहिये, पीठ पर नहीं ।
- (२) इला न देणी प्रापणी— घरती दूसरे के कब्जे म नहीं जानी चाहिये ।
- (३) जौहूर या सतीप्रथा की ।
- (४) महत्व सुषण का है— लम्बी प्राधु का नहीं ।  
पुष्प की बीरता म ही मुहाग की साधकता है ।

यदि भारतवर्ष मे यह काव्य पदकर इसके महत्त्व को समझा होता तो हमारे देश का इतिहास ही कुछ और होता ।

सभ्यता व सस्कृति के समतल प्रागन मे प्रेरणा व राष्ट्रप्रेम से दिप-दिप जलती भारतीय नारी आज कहा मे कहा आ गई है । प्राधुनिकता के बीहड जगल ने उसे भटका दिया है ।

आज की नारी के हृदय मे सगय है मस्तक मे उलझन खीझ और खोखलापन, आज की नारी विस्मृता है सुखिता है । नारी जिसकी आशो मे सूनैपन की प्राग है हृदय मे अभाव का हाहाकार है नारी जिमके घुघराल बालो मे कालसर्पों का फुत्कार है जिसका अन्त स्रोत सूख गया है, जिसे उसकी महत्ता तथा मृदुता थी । आज की नारी को कवि का काव्य पदकर सीखना चाहिए कि स्त्री को योग्या, नारी वामा, अरबला, सुदरी, प्रमदा, ललना मानिनी महिला दुहिता जाया और माता इन रूपों का विभिन्न भूमिकाओं मे गरिमा मे निवहन कर राष्ट्र के कण्ठारो को सस्कारित करना है ।

कवि सूयमल्ल न जिस नारी का चित्रण अपने काव्य मे किया है वह स्त्रीत्व

का मधुरतम आदश है। वह उत्सवमयी है, महाशक्ति है त्याग है, बलिदान है, उसके इसी स्वरूप में पुरुष युग-युग से उत्तम आनन्द है।

वर्तमान परिवेश में कवि का काव्य इसीलिए समकालीन उपयोगिता, उपादेयता तथा महत्व का है कि आज की नारी उस नारी में प्रेरणा ले तथा हमारे चिन्तन हमारे नास्तविक मूल्यों व हमारे सस्कारों को सुधारने में योगदान दे।

राष्ट्र का आघार है नारी,  
नींव का शीघार है नारी।

कवि ने नारी के इसी समर्थ, साधक व सतात्व मय स्वरूप का गन्तव्यित किया है।



## महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण और उनका वंश भास्कर

एस आर खान

राजस्थान क प्रसिद्ध कवि एव इतिहासकार सूर्यमल्ल मिश्रण बूंदी राज्य के महाराज राजा रामसिंह के राजकवि एव दरबारी थे। आपका जन्म बूंदी राज्य के हिंडोली बस्ते के समीपवर्ती गांव हरणा में कार्तिक कृष्ण १, विक्रम संवत् १८७२ को हुआ था। आपकी मृत्यु बूंदी नगर में आषाढ शुक्ला ११, मंगलवार, विक्रमी संवत् १९२५ को हुई थी। आपके पिता का नाम चंडी दान, माता का नाम भावना बाई और भ्रातृ का नाम जयलाल था। सूर्यमल्ल चारणों की १२० गालाओं के अंतर्गत सर्वाधिक प्रसिद्ध 'मिश्रण' गाला से संबंधित थे। 'मिश्रण' नाम होने का कारण यह है कि इस गाला के मूल पुरुष चंड कोटि ने पड़भाषा मिश्रण उक्तियों द्वारा शास्त्राध्यय में विजय प्राप्त की थी। इस बात का वर्णन वंश भास्कर' में उन्होंने स्वयं इस प्रकार दिया है—

चंड कोटि बचितें चली मूरिन साहि सम्मान ॥ ६ ॥

भाखा छट मिश्रण भाणिति बदि जिह जिंतबाद ।

उनको मिश्रण नाम इस दुवसुलाक्षनिकल्हाद ॥ वंश भा ३८/१०

इसमें पिता चंडीदान उस समय के प्रताड पंडित और एक अछड़े कवि थे। बूंदी के राजा महाराज राजा रामसिंह आपका बहुत सम्मान करते थे। चंडीदान द्वारा रचित तीन ग्रंथ प्रसिद्ध हैं। बाल विग्रह, सार मांगर और वंश भारण। इस प्रकार सूर्यमल्ल को बाल्यकाल में ही साहित्यिक वातावरण प्राप्त हुआ। इसके प्रतिरिक्त वह स्वयं भी एक कुशाग्र बुद्धि एव अद्भुत स्मरण शक्ति के धनी थे।

उन्होंने उनके रचित ग्रंथ 'वश भास्कर' में लिखा है कि दस वष की अवस्था में ही उनकी गिनती अच्छे कवि के रूप में होने लगी थी। इसी आयु में उन्होंने 'रामरजाट' की रचना भी कर डाली थी। बारह वष की आयु में वह व्याकरण एवं गद्य ज्ञान में पारंगत हो गये थे। सूर्यमल्ल का स्वयं चारण जाति का हाने के कारण द्विगल और विगल भाषा का ज्ञान तो उन्हें अपने जन्मजात मस्कारों में ही मिल गया था। परन्तु इसके उपरान्त वह संस्कृत भाषा के भी एक महान विद्वान् थे। आपको चारण लोग अपनी जाति का सर्वश्रेष्ठ कवि मानते हैं। उनके जीवन काल में ही उनकी प्रसिद्धि राजपूताना में ही नहीं, अपितु मालवा तक में हो चुकी थी। बूंदी के राज दरबार में भी आपका विशेष सम्मान था। उनकी गणना बूंदी के पंच रत्नों में की जाती थी। इसका वगण 'वश भास्कर' में इस प्रकार किया गया है —

'प्राशा मन्दो जीवणो ज्ञान भाटा लडी चहीदानज सूर्यमल्ल  
खा ज्ञायते तत्समीपे जमीता भूभद्रल पञ्चरत्नानि बुधाम ।

अर्थात् बूंदी के राव राजा रामसिंह के राज दरबार में पांच रत्न हैं। प्राचाय प्राशानन्द ज्ञान के महार प्रधान मंत्री जीवलाल, प्रायुर्वेद निष्णात दही घात्माराम, चडी दान के पुत्र सूर्यमल्ल और जमीत खा पठान ।

सूर्यमल्ल की प्रसिद्ध रचनाएँ निम्नलिखित हैं —

(१) वश भास्कर (२) धीर सतसई (३) धातु स्वावली (४) बलवद विलास (५) छन्दो मयूख (६) मतीरामो (७) राम रजाट और (८) प्रकीर्णक गीत सर्वेभ्यो आदि ।

परन्तु उपरान्त रचनाओं में सूर्यमल्ल की सबसे प्रसिद्ध रचना वश भास्कर ही मानी जाती है और यह राजस्थान का एक अत्यन्त प्रसिद्ध ग्रंथ है। इस ग्रंथ को यदि हम उसकी समस्त रचनाओं का कीर्ति स्तंभ कहें तो कोई प्रतिशयोक्ति नहीं होगी। वश भास्कर' पद्य में लिखा एक बहुद् काव्योद्दिष्ट ग्रंथ है और हिन्दी साहित्य में इससे बड़ा कोई ग्रंथ नहीं है। इसमें लगभग सवा लाख पद हैं। अघुरा होते हुए भी यह लगभग षाई हजार पृष्ठों में छपा है और सक्षिप्त टीका सहित इसके पृष्ठों की संख्या ४३६८ तक जा पहुँची है। 'वश भास्कर' एक मिश्रित भाषा का काव्य एक मिश्रित शैली 'चपू शैली' का ग्रंथ है। इसमें मुख्यतया संस्कृत प्राकृत, मागधी पशाची गौर सेनी अपभ्रंश, वृज और मरुदेशीय भाषा का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार की काव्य रचना का प्रचलन हिन्दी साहित्य में प्राचीन काल से चला आ रहा है। विश्लेषण की दृष्टि से वश भास्कर का पिचहत्तर प्रतिशत भाग वृज भाषा अथवा विगल में दस प्रतिशत मरुदेशीय भाषा अथवा द्विगल में और दोष पंद्रह प्रतिशत भाग अथ छ भाषाओं में लिखा गया है। इसके पश्चात् अपभ्रंश का नबर आता है। पशाची भाषा का उपयोग केवल दो या चार स्थानों पर किया गया है। मागधी और गौर सेनी का उपयोग सबसे कम किया गया है।

वश भास्कर हिन्दी साहित्य की सबसे विशाल कृति होते हुए भी विद्वानों

द्वारा उपेक्षित ही बना रहा। इसका दो मुख्य कारण हैं— प्रथम इनका आकार प्रयात बृहदाकार होना और दूसरा इसकी भाषा अर्थात् इसकी क्लिष्ट भाषा का होना। डा० मोतीलाल मनारिया ने अपनी पुस्तक 'राजस्थान का पिंगल साहित्य,' पृष्ठ २२० पर 'बग भास्कर' की भाषा के विषय में जो मत प्रकट किया है वह इस प्रकार है—

'इसकी भाषा बहुत कठिन है। सूरजमल ने कही-२ अपने गठे हुए शब्द रख दिये हैं और कही २ ऐसे क्लिष्ट और अप्रचलित शब्दों का प्रयोग किया है कि एक आधरण पढ़े लिखे व्यक्ति के लिये इन प्रयोगों को समझना तो दूर रहा, उनको हाथ में लेने का साहस ही कम हाता है।'

सूयमल्ल मिश्रण एक महाकवि एवं सत्यवक्ता के रूप में काफी प्रसिद्ध रहें हैं। जब उन्होंने बूंदी नरेश राव राजा रामसिंह के आग्रह पर राजकीय सहायता में बूंदी के हाडा वंशीय राजाओं का इतिहास 'बग भास्कर' इसी गत पर लिखना प्रारम्भ किया कि वह जो भी लिखेंगे मर्य ही लिखेंगे। इस ग्रंथ की रचना से पूर्व बूंदी नरेश ने उस समय के विद्वानों और चारण भाटों की एक विंगाल मभा का आयोजन ऐतिहासिक मामलों के सफलन के हेतु बूंदी नगर में किया था।

सूयमल्ल ने अनुसार 'वश भास्कर' का रचना काय बगाल सुदि ततीया, सामवार, विक्रमी सवत् १८१७ को प्रारंभ हुआ। इसके लेखन को लिपिबद्ध करने के लिए बूंदी राज्य की ओर से लेखक नियुक्त किये गये। परंतु अचानक 'वश भास्कर' का रचना काय विक्रम सवत् १९१३ में बंद हो गया। इस बात का विवरण सूयमल्ल जी के लिखे हुए एक पत्र से होना है, जो उन्होंने पीपल्या (जयपुर राज्य) के ठाकुर फूल-निह को पोष चुकन प्रतिपदा विक्रम सवत् १९१४ को लिखा था। इसका मुख्य कारण यह बतलाया जाता है कि जय वश भास्कर में महाशय राजा रामसिंह जी के शासन काल में उनके दोषों को लिखने का समय आया तो महाराज ने अपने दोषों का वणन लिखने से मना किया। इस बात पर सूयमल्ल सहमत नहीं हुए और उन्होंने वश भास्कर का लेखन काय बंद कर दिया। इसके पश्चात् फिर विक्रम सवत् १९१४ में महाराज राजा रामसिंह ने फिर दुबारा 'बग भास्कर' लिखन का आदेश दिया। परंतु अब कवि की रुचि इस लेखन काय में नहीं रही। यद्यपि यह लेखन काय के बंद हो जाने के पश्चात् भी कवि आठ षड तक निरोगता पूर्वक जीवित रहा। विक्रमी सवत् १९१३ तक 'वश भास्कर' में राव राजा रामसिंह के राज्य का लगभग सवत् १८९० तक का इतिहास लिखा जा चुका था। यह राम चरित्र का उज्ज्वल पक्ष ही है और आगे सूयमल्ल के दत्त पुत्र मुरारी दान द्वारा रचित निरास्तुति परक 'राम चरित्र' प्रारंभ हुआ जाता है और इस वणन के साथ ही 'वश भास्कर' की समाप्ति हो जाती है।

'बग भास्कर' चौहान वंश की हाडा शाखा के लगभग दो सौ राजाओं का एक बृहद इतिहास है। इसमें केवल बूंदी का ही इतिहास नहीं बरन ममस्त राजस्थान और भारतवर्ष का इतिहास प्रसंगवश लिख दिया गया है। इस ग्रंथ में सृष्टि की रचना से



लेकर भारत में अंग्रेजी राज्य की स्थापना तक का ऐतिहासिक विवरण दिया गया है। 'वश भास्कर' को सूयमल्ल की सत्यवादिता के कारण ही एक प्रमाणित इतिहास ग्रंथ माना जाता है।

'वश भास्कर' के ऐतिहासिक महत्त्व के विषय में विभिन्न विद्वानों के विभिन्न विभिन्न मत हैं जो इस प्रकार हैं —

डा० कानूनगो का कथन है कि 'वश भास्कर का सबसे अधिक महत्त्व ऐतिहासिक सामग्री का विशाल सङ्कलन है। ऐतिहासिक दृष्टि में यह ग्रंथ 'पृथ्वीराज रासो' से भी अधिक महत्त्वपूर्ण है व साहित्यिक दृष्टि से ज्ञानिसिन्धी गताब्दी के महाभारत की गणना में रखा जा सकता है।'

गहलोत का कथन है कि 'वश भास्कर टाड की तरह राजस्थानी इतिहास के आधार पर और अंग्रेजी सरकार की रिपोर्टों के सहार पर लिखा गया है। उसमें भी प्राधुनिक श्रेय से काम नहीं लिया गया।'

डा० गोरी शंकर हीराचंद श्रोत्राण ने कहा है कि 'वश भास्कर ने उस समय तक इतिहास लिखने में विशेष खाज की हो, ऐसा नहीं पाया जाता। कवि का लक्ष्य कविता की ओर ही रहा है, प्राचीन इतिहास की शुद्धि की ओर नहीं।'

कृष्णसिंह बारहठ का भी यही मत है कि वह सूयमल्ल का इतिहासकार तो कहते हैं परन्तु साथ में यह भी स्वीकार करते हैं कि विश्लेषणवादी प्रतिभा का 'वश भास्कर' में अभाव है। उस जहाँ में जो सामग्री मिली उसको बिना ऐतिहासिक परीक्षण के जैसा का तैसा लिख दिया।

उपरोक्त विद्वानों के मतों में विरोधाभास का केवल एक मुख्य कारण है। प्राचीन समय में पुराणों की पद्धति पर इतिहास लिखने की परंपरा थी, जिसमें राज वंशों का ही विशेषतया वर्णन किया जाता था। परन्तु वर्तमान समय में इतिहास लिखने की कला में जो वैज्ञानिक पद्धति का प्रचलन हुआ है जिसके अनुसार ऐतिहासिक तथ्यों का विश्लेषण करके सत्य घटनाओं की खोज की जाती है। प्राचीन समय में इस पद्धति का अभाव था। फिर भी वश भास्कर की ऐतिहासिकता के सन्दर्भ में यह एक सवर्माण्य धारणा है कि इसमें विशाल ऐतिहासिक तथ्यों का सङ्कलन किया गया है। इसके अतिरिक्त उस समय के धार्मिक विश्वास सामाजिक रीतिरिवाज उत्सव और त्योहारों का भी इसमें विस्तृत विवरण है। इन सब तथ्यों से वश भास्कर की उपयोगिता एक इतिहास ग्रन्थ के रूप में अधिक ही गई है।

वश भास्कर सूयमल्ल मिश्रण की मृत्यु के तीस वर्ष पश्चात् छपा है। इस ग्रंथ का बुद्ध चरित्र' विक्रम संवत् १९४५ में तथा उम्मेदमिह चरित्र विक्रम संवत् १९४८ में लीघो में छपा। परन्तु वश भास्कर जोधपुर में संवत् १९५६ (१८९९ ई०) में जोधपुर निवासी महामहोपाध्याय कविराजा मुरारी दान के प्रयत्नों से चार भागों में टीका सहित संपूर्ण रूप से प्रकाशित हुआ। इस ग्रंथ की टीका राम कृष्ण घासोपा ने

लिखी थी और इसका मुद्रण काय प्रताप प्रेस, जोधपुर द्वारा किया गया। वतमान में केवल इसी रूप में आज 'वश भास्कर' जीवित है।

सदम ग्रथ —

- १ वश भास्कर— ले० महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण
- २ वश भास्कर एक अध्ययन— ले० डा० आलमशाह खान
- ३ नागरी प्रचारिणी पत्रिका सवत् २०२६ वि० वष ७४ अंक २
- ४ राजस्थान के इतिहास— ले० राजेन्द्र गकर भट्ट
- ५ मध्यकालीन एवं राजस्थानी इतिहास के प्रमुख इतिहासकार लेखक— आर एन चौधरी और मिश्रीलाल माडोत
- ६ ऐतिहासिक ग्रंथमाला— संपादक— विजयसिंह गहलोत
- ७ राजस्थान का पिगल साहित्य— ले० डा० मोतीलाल मेनारिया
- ८ लेख— बूंदी भी कभी छोटी काशी कहलाती थी— ले० डा०—नाथूलाल पाठक
- ९ लेख— महाकवि सूर्यमल्ल एवं १८५७ का स्वातंत्र्य संग्राम—हाडौती की रक्त रजित भूमिका— ले० श्रीकारनाथ चतुर्वेदी
- १० लेख— नगर से डगर तक— दैनिक राजस्थान पत्रिका— ले० वररुचि ।



## महाकवि सूर्यमल्ल और उनका काव्य

### माधवसिंह दीपक

वीर भूमि राजस्थान ने जहाँ स्वाधीनता के लिये मर मिटने वाले अग्रणी वीरों को जन्म दिया वहाँ श्रीजस्वी वारणी में उन वीरों की गाथा कहने वाले चारणों और कवियों को भी जन्म दिया है। वीर गाथा की परम्परा खुमाण रामो वीमलदेव रासो पृथ्वीराज रासो रतन रासो, हम्मौर रासो आदि पर ही समाप्त नहीं हो गई अपितु प्रत्येक युग में राजस्थान के कवि वीरों का वर्णन करते रहे हैं। तथापि राजस्थानी साहित्य में वीर रस के कवियों में चन्द बरदाई के बाद जो दूसरा नाम सूर्य की भाँति चमकता है वह महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण का है जो उन्नीसवीं शताब्दी में बूंदी नरेश रामसिंह जो (१८२१—१८६२) के दरबार में राजकवि थे। वैसे तो सभी राज दरबारों में कवि होते थे किन्तु चौहानों ने सभ्यतः अपनी वीरता और उदारता से कवियों का मन अधिक मोह लिया। यही कारण है कि दो महाकवियों ने अर्थात् चन्द बरदाई और सूर्यमल्ल ने क्रमशः अपने-अपने पृथ्वीराज रासो और वग भास्कर में चौहान वंश की गौरव गाथा गाई है। वंश भास्कर में उत्तरवर्ती चौहानों विशेषतः कोटा-बूंदी के हाडा चौहानों का वर्णन है। चन्द बरदाई और सूर्यमल्ल के समय के बीच सात सौ वर्ष का अंतर है। किन्तु जैसे विश्वामित्र की नव रत्न की परम्परा का हजार वर्ष बाद उसके वंशज राजा भोज ने यथावत् विभाषा, उसी प्रकार पृथ्वीराज और चन्द बरदाई का नवीन संस्करण हम महाराजा रामसिंह और महाकवि सूर्यमल्ल में मिलता है।

सूर्यमल्ल कवि ही नहीं एक प्रमुख इतिहासकार और बहुत बड़े विद्वान भी थे। उनके महाग्रंथ वग भास्कर में सवा लाख छंद कहे जाते हैं। यह ग्रंथ पाठ खण्डों में

विभाजित है। काव्य और इतिहास के प्रतिरिक्त महाभारत की भांति इस ग्रंथ को भी सवमग्रह अर्थात् एनसाइक्लोपीडिया की तरह बनाने का प्रयास किया गया है। इसमें वर्णव शव और जैन दर्शन, पटशास्त्र, वाराही संहिता, वृक्षायुर्वेद, संगीत कामसूत्र ज्योतिष खगोल भूगोल राजनीति आदि अनेक विषयों का वर्णन है। प्रकाण्ड पण्डित होने के कारण महाकवि का मसूतन प्राकृत भागधी पैशाची, पिंगल और डिंगल इन छ भाषाओं का विंगय ज्ञान या और उहान अवन काव्य म इन भाषाओं का खूब प्रयोग किया है। इस दृष्टि स उनका नाम सूयमल्ल मिश्रण यथाय है। फिर भी वशभास्कर म पिंगल और डिंगल के शब्दों का बाहुल्य है और टीका की सहायता से इस महाग्रथ का समझन म विशेष कठिनाई नहीं होती।

सूयमल्ल क देहात वे तीस वष बाद अर्थात् सन् १८६६ ई० स बारहठ वृष्णा सिंह जी सोदा ने जोधपुर क बनल प्रतापसिंह जी और कविराजा मुरारीदान जी की सहायता स वशभास्कर को उसकी उदधिमयिनी टीका सहित प्रकाशित करना आरम्भ किया और आठ खण्डों म वह सम्पूर्ण प्रकाशित कर दिया गया। इससे पहल वह बिना टीका के बूदी के राजकीय प्रेस स छपा था और बूदी के दीवान पंडित गंगा सहाय जी ने हिंदी गद्य मे उसका माराश लिखकर वश प्रकाश के नाम स बूदी के रगनाथ प्रेस से ही मुद्रित कराया था। जो भी हो इस समय वश भास्कर की बहुत कम प्रतिमाँ उपलब्ध हैं और उसका नवीन सस्करण छपन की निता त आवश्यकता है।

महाकवि सूयमल्ल का एक ग्रंथ और है जो राजस्थान म लोकप्रिय है और वह है वीर सतसई। इस के दोह वीरता से ओत-प्रोत है। एक दो उदाहरण लीजिए —

नायग आज न माड पग काल्ह सुणी जँ जग ।  
 धारा लागे मो धणी ता श्रीजै धण रग ॥  
 पथी एक सदेसडो बाबल न कहि भाह ।  
 जाय पाल न बज्जिया, टामक ठह ठहिधाह ॥  
 तन तलवारा तिलछियो, तिल तिल ऊपर सीव ।  
 भाला धावा उठगी चिण इक ठहर नकीव ॥

वीर सतसई ग्रंथ कलकत्ते स प्रकाशित हुआ था। और इस वीर काव्य का सुनकर गुरुदेव रवीन्द्रनाथ न ठीक कहा था कि सूयमल्ल की कविता म सौ हाथियों का बन है।

इसी प्रकार एक और प्रकाशित ग्रंथ है बल-विग्रह जिनकी रचना सूयमल्ल के पिता चण्डीदान ने आरम्भ की थी कि तु जिस वे अरूरा ही सूयमल्ल को मीप कर स्वग सिधार गए। पिता क बाद पुत्र ने वह ग्रन्थ पूरा किया इसीलिये इस ग्रंथ का उत्तरार्ध पूर्वाध से भी अधिक सुन्दर है। इस ग्रंथ मे बूदी के महाराजा बलवन्तसिंह का जीवन चरित्र है जो अग्रेंजा से युद्ध करते हुए वीर गति को प्राप्त हुए थे। उनके अंतिम युद्ध के वर्णन के कुछ अंश देखिए —

पहर सात गोला जुध पडियो, रावण रड रडियो जमराण ।  
 धावण काम खाग ऊ कडियो, चीता जिमि चडियो चहुवाण ॥

पाचर कवल उटे घट फूटे, तोपा झूट दूटे गजब ।  
 कीषा समर उमेद वलोधर पैड पैड भ्रममेघ प्रब ॥  
 चावल नीर थोन रग चाड़े पडियो दले पाटे पचरग ।  
 खल रूडा जूठो झडखागा वल खूटा दूटो उतवग ॥

यद्यपि महाकवि सूर्यमल्ल केवल 'वीर सतसई' लिखकर साहित्य में अपना भ्रमर स्थान बना सकते थे तथापि उनका वंशभास्कर भारताय साहित्य में एक अनूठा ग्रंथ है और हिन्दी साहित्य में वीररस का शायद यह सब से बड़ा ग्रंथ है। अब तक हिन्दी में भूपण का वीररस का सबसे बड़ा कवि माना जाता है किन्तु सूर्यमल्ल तो अनक भूपणों के भूपण है। उनका काव्य में जहाँ कहीं वीर रस के अतिरिक्त वरुण है उस पर भी वीर रस की स्पष्ट छाप है। उदाहरण के लिये नतकी के नृत्य का वरुण देखिए —

घुमत पाय घुम्मरौ छमकि घोर घटिका, उपग भ्रग क बज मदग भ्रग अटिका ।  
 वनाव हाव भाव में रनकि हृत्य बगरी, किधो पिकादि चपभ्रप रोर सोर की करी ॥  
 पलट्टि भ्रग के भुके नचक्क लक प पग उरोज भार निट्टि जो बली निवध उदरै ।  
 उरोज भ्रग चारु हार इद्र छद है, अग्रर इक्क धान कयो न तान सग ही घट ॥

सूर्यमल्ल युद्ध के वरुण में अत्यंत कुशल है। वंश भास्कर में आदि से अत तक मकडो युद्धों का वरुण है फिर भी उनमें सब जगह नवीनता है और पिसृपण मात्र नहीं है। उदाहरण के लिये बूदी नरेण रावराजा बुद्धसिंह जी का युद्ध वरुण देखिए —

चली भली कृपान सानसुद्ध राव बुद्ध की अरीन जुद्ध की उमग राजरग रुद्ध की ।  
 प्रहार खग धार मारि लुत्थि लुत्थि पै परे चिरे बितुड गडभूड खडखड है भर ।  
 दिसा दिसान में कृपान विज्जुमान निक्खसी भिरे गरूर पूरसूद पिक्खि हूर हुल्लसा ।  
 चलम मग खग के कटार पार निक्खसी, सुबीर सीस सचमी गिरीस हुलस हम ।  
 डराल डाक डिडिमी डमकि डाकनीन की, नस उमगि साकिनीन नारि नाकिनीन की ॥

वास्तव में महाकवि के काव्य की सारी विशेषताओं का वरुण और उनकी यथा लोचना के लिये एक बहुत्र ग्रंथ की आवश्यकता होगी। उनके काव्य पर शोध की बड़ी जरूरत है ताकि उनके उत्कृष्ट ग्रंथ पाठकों के सामने आ सकें।

इसी प्रकार महाकवि सूर्यमल्ल के जीवन पर भी अभी बहुत प्रकाश डालने की आवश्यकता है। वे बड़े प्रतिभाशाली कवि थे। आठ पंडितों को अपने आगे बठाकर वे आठ प्रकार के भिन्न भिन्न छंद बनाकर उन्हें लिखवा सकते थे। इतिहास को जो कवि चित्रित कर देना सूर्यमल्ल का बहुत बड़ा गुण है। जब उन्होंने एक बार बूदी के एक राजा की पराजय का वरुण अपने आश्रयदाता महाराज रामसिंहजी को सुनाया तो राजपूत के रक्त में उबाल आना स्वाभाविक था और उन्होंने सूर्यमल्ल से कहा कि तुम हमारा नामक्याकर ऐसा लिखत हो वह सच्चा काव्य नहीं बल्कि चापलूसी मात्र है यह कहकर वे घर आ गए। राधा गत होन पर महाराज रामसिंहजी को बहुत पश्चाताप हुआ और उन्होंने सूर्यमल्ल के घर आकर उनसे करबद्ध रूप में क्षमा मागी। तब जाकर वंशभास्कर जस महाग्रंथ की रचना हुई और महाराज रामसिंहजी ने भी

उत्ते बिना हेरफेर के ज्यो वा स्थो छपवाया। यही कारण है कि इस ग्रंथ में जैसी निर्भीकता और स्पष्टवादिता मिलती है वैसे समार के बहुत कम ग्रंथों में मिलेगी।

अतः हम एक रोचक प्रसंग के साथ ग्रंथना निर्बन्ध समाप्त करेंगे। सूर्यमल्लजी बड़े मरम और नावुक व्यक्ति थे। मद्यपान के बाद तो वे कविता करते ही थे साथ ही उह अपनी पत्नी गविन्द कवर से बड़ा प्रनुराग था। गविन्द कवर काव्य ममज्ञ और स्वयं प्रच्छी कवयित्री थीं। व यथाकृता ग्रंथन पनि की काव्य रचना में सहायता भी करती थीं जा पति-पत्नी के मनोविनोद का प्रच्छा साधन था। सूर्यमल्ल जी के कान छदों को सुनने में ऐसे प्रम्यस्त थे कि यदि उह नील स जगाना हो तो कोई भी व्यक्ति यदि छन्दोग के साथ पाठ्य-पाठ करता तो वे तुरन्त जगकर उस टाक देते थे। अनेक छन्दों की रचना उहोंने स्वप्न में की थी। एक बार यह चर्चा चलन पर कि ब्रज भाषा का कवित्त और सबया छन्द राजस्थानी में प्रच्छे नहीं बन सकते, जोधपुर के एक सयानी ने एक सबया लिखा—

बीगबा पून म्ह जावा नही अठे और ही भाति का लोग बम छे।

काला लगाय सराय कर मन ही मन गायण्या देख हसे छे।

सास का साध मदा उर में नणदीनित नाचण नण कम छे।

साज का वरी बुरा मवरा बात्मा देखता ही ये जीव उसे छे।

यह छन्द जब सूर्यमल्ल जी ने सुना तो उहे पसन्द आया और उहीने इस ग्रंथनी पत्नी को सुनाया जिस पर पत्नी ने हमकर कहा कि यह तो सीधा सादा सधुक्कड़ी छन्द है इसमें कोई चमत्कार नहीं है तो सूर्यमल्ल ने उनसे पूछा कि क्या इससे प्रच्छा छन्द तुम लिख सकती हो तो उहोंने कहा क्या नहीं। थोड़ी ही देर में उहोंने यह छन्द बनाकर सुनाया—

पावडा बिछास्या छास्या चदवा गुलाब चौवा, फूल बरसास्या मोती वारस्या सुहावणा।

न्तर लगास्या पान खास्या मुस्कास्या गास्या, गोविन्दजी साजस्या सिंगार मनभावणा ॥

आयो मेट धरस्यो मुजा मे जाने भरस्या ओ करस्या जी रागरग रेल सू बधायणा।

मकडल्या माणीगर मानजो ग्रन्थन सुख आज्यो बसत कन म्हारे धर पावणा ॥



## महाकवि की कविताओं का चित्राकन

### प्रेमजी प्रेम

ललित कलाओं में साहित्य का स्थान सदब ही रहा है। लोकसंस्कृति में लोक साहित्य और नागरिक कलाओं में नागरी साहित्य की प्रचुरता देखी जा सकती है। समय समय पर कलाकारों ने इस बात के पयत्न किए हैं कि वे उत्कृष्ट समकालीन कृतियों को संगीत चित्रकला मचन आदि के माध्यम से जन जन के सम्मुख प्रस्तुत करें। ऐसे प्रयासों को जहाँ एक ओर आदर के साथ स्वीकार किया जाता है वहीं दूसरी ओर उनमें निहित कलाप्रतिभा का आकलन भी किया जाता है। समय समय पर ऐसे प्रकरण सामने आते हैं जिनमें किसी कलाकार द्वारा प्रस्तुत किसी साहित्यिक कृति पर विस्तार से चर्चा की गयी हो।

कला और साहित्य का ऐसा ही सुंदर सगम राजस्थान की कलानगरी बूंदी में पिछले कुछ दशकों में देखन को मिला है। बूंदी में स्वतंत्रता संग्राम (१८५७ ई) के साक्षी महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की कविताओं को चित्रों के माध्यम से प्रस्तुत करके उसी नगर के निवासी चित्रकार कातिचंद्र भारद्वाज ने न केवल अपनी प्रतिभा का परिचय दिया है बरन बूंदी शैली के चित्राकन में एक नया अध्याय जोड़ने का सफल प्रयत्न किया है। कातिचंद्र भारद्वाज चित्रकला में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा प्राप्त विविध प्रकार के डिप्लोमा उत्तीर्ण कर चुकने वाले ऐसे आधुनिक कलाकार हैं जो परम्परागत चित्रकला की तमाम बारीकियों को समझने की क्षमता रखते हैं। बूंदी के ही राजवट परिवार में जन्म कातिचंद्र भारद्वाज ने अपने जीवन के चालीस खूबसूरत बरतों में से

अधिकांश को चित्रकला के प्रति पूरा समर्पण के साथ जिया है। वे राजस्थानी शैलियों का विशिष्ट लिए बूंदी कलम का चित्राकन करने में कुशल हैं।

धनी बशावलिपी, उन्नत ललाट वाली नायिकाएँ जल और मेघ, मयूर, चौकोर भवन बदला बसों का बाहुल्य हाथियों का सुंदर चित्रण वृत्ती की चित्रशैली की विशेषता माना जाना है। कातिचंद्र भारद्वाज के चित्रों में यही सब प्रमुख है। स्व भोलाशंकर जी श्रौदीच्य, परमानंद चोपल रामगोपाल विजयवर्गीय, गोवर्द्धनलाल जोशी बाबा आदि से कला की शिक्षा दीक्षा ग्रहण करने वाले कातिचंद्र भारद्वाज द्वारा जलरंगो, तैल रंगों और एनामल रंगों का प्रयोग सफलता पूर्वक किया जाता रहा है। स्वप्रेरित शैली से दृश्य चित्राकन उनका अपना योगदान है।

पिछले कुछ वर्षों से कातिचंद्र भारद्वाज न ऐतिहासिक विषयों का चयन करके रणथंभोर चित्तौड़गढ़, बूंदी उदयपुर कोटा आदि राजस्थान के विशिष्ट नगरों के बारे में इतिहासपरक चित्रों की रचना करके पर्याप्त प्रशंसा अर्जित की है। उसी क्रम में उनके द्वारा बूंदी के महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की कविताओं को आधार बनाकर किया गया चित्राकन अत्यंत महत्वपूर्ण प्रमाणित हुआ है। अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर की पत्रिकाओं में उनके इस विषय के चित्रों को प्रकाशन मिला है। प्रदर्शनियों और सग्रहों के माध्यम से उनके चित्रों को प्रकाश में आने का अवसर मिला है।

बूंदी के महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण, प्रथम स्वाधीनता संग्राम के मुखर साक्षी रहे हैं। उन्होंने तत्कालीन शासकों को बार बार इस बात से अवगत करवाने में अपना कदम नहीं पीछे नहीं हटाया कि वे अंग्रेजों के सम्मुख समर्पण करने के स्थान पर उनसे जूझें और एक होकर उन्हें देश से बाहर खदेड़ दें। पत्रों और कविताओं के माध्यम से उन्होंने स्वाधीनता और देश प्रेम का जो झुंझनाद किया वह अब सबके सामने है। चार हजार से अधिक पृष्ठों का, बस भास्कर नामक महाकाव्य उनके सृजन का कीर्तिस्तम्भ है। सती रासी बलवद्विलाम राम रजाट वीर सतमई आदि उनकी अमर रचनाएँ हैं। उन पर गोष कर चुकने वाले शोधकों ने यह निष्कर्ष निकाला है कि वे पटभाषाविद थे और राजस्थानी डिंगल में गद्य तथा पद्य का समान मात्रा में सृजन करते थे। अपने काव्य का वे स्वयं नहीं लिखते थे वरन् वे कविता बोलते थे। उनके साथ बड़े लेखक उस लिखते जाते थे। यही कारण है कि उनकी कृतियों की चार पांच पांडुलिपियाँ उपलब्ध होती हैं। वे स्वतंत्रता का गलनाद करने के लिए न केवल प्रासन्न हुए, वरन् ऐसी मिसाल कायम कर गए कि उन्हें उस काल का भूषण कहा जा सके। वे मरण की प्रेरणा देने वाले अकेले कवि रहे। बूंदी के शासकों की बशावली के रूप में लिखे गए ऐतिहासिक ग्रंथ का लेखन उन्होंने केवल इसलिए रोक दिया था क्योंकि बूंदी के तत्कालीन शासक अपना गौरव नहीं निभा सके थे और उन्होंने ब्रिटिश कम्पनी के सम्मुख आत्मसमर्पण करके मंत्री कर ली थी। मन् १८६४ में महाकवि सूर्यमल्ल की मृत्यु के कारणों की तह में जाने वाले लोग बताते हैं कि वे इसी पीडा के कारण स्वर्गधाम सिधार गए कि देश में ब्रिटिश हुकूमत का साम्राज्य हो गया। उनके एक दाहे का प्राणय



कुछ इस प्रकार है, कि जिस वन म हाथी और सिंह भी घाने स भयभीत होत थ, उस मे सियार विघरण करने लगे हैं ।' सियारो म उनका तात्पर्य ग्रासकों से या और वन से देश का । उनका लोहा था —

जिए वन भूल न जावता, गर्बद गिवय गिडराज ।

उए वन जबुक ताखडा ऊधम मड प्राज ॥

वीर सतसई नामक कृति में महाकवि सूयमल्ल के ऐसे दोहो को सकलित किया गया है जिन दोहो से मरण की प्रेरणा मिलती है मातृभूमि की रक्षा का स्वल्प, जिन दोहो के पठन मात्र से ही मन म घर बना लता है । सूयमल्ल जी ने स्वयं ही सतसई क बारे मे लिखा है कि यह लोहामयी सतसयी जहा एक और वीरो को खा जाने वाली है वही दूसरी ओर यह कापरो के लिए शूल जमी भी है ।' उनके अनुसार

सत्तसई दाहामयी, मीसए मूरजमाल ।

जप भडखाणी जठे उठ कापरा साल ॥

ऐस महाकवि की कविताओं पर कातिचंद्र भारद्वाज ने पचाम स अधिक चित्र बनाय हैं । बूंदी की चित्रशैली और बूंदी का ही परिवेश । बूंदी का कवि और उसी नगर का चित्रकार । सब कुछ एसा घुला मिला है कि चित्रो को देखते ही वाह वाह कहने को जी करता है । रगो का प्रयोग पूर्णरूपेण पारपरिक है । चौकोर भवनो म लेकर उनत ललाट वाली तवगी नायिकाओ तक सब कुछ बूंदी कनम की उत्कृष्टता को दर्शाने वाला है । स्थान स्थान पर हुए प्रश्नों मे कातिचंद्र भारद्वाज का इस वान के लिए बार-बार बधाई नी गयी है कि इतन जटिल विषय का चयन करके उहोने उस उतनी ही सरलता स प्रस्तुत कर लिया है । दोहो पर मुविधा की दृष्टि से उहोने चित्र के नीचे मूल पद्य का अकन भी कर लिया है ।

देश भर न हुए अनेक सफल प्रयासो की कडी म बूंदी क इस प्रयास को जोड़कर देखा जाए तो इसकी श्रेष्ठता के कुछ और आघार दखन को मिल सकते हैं । इन आघारों मे लोकशली लोककाय और उमकी सहजाभिव्यक्ति मुख्य है । भारद्वाज न जल रगों और तैल रगा का प्रयोग करके छोटे बड़े कई फलको पर महाकवि के दोहो का चित्राकन किया है । कुछ फलक चार गुणा पाच फीट क हैं तो कुछ दो गुणा दा फीट के भी हैं । लाल और पीले रग के साथ साथ बूंदी की हरियाली का प्रयाग किया गया है । जैसा कि माना जाता है दोहा छोटा होते हुए भी उसका कथ्य बहुत बडा होता है । कम शब्दों मे बहुत कुछ कह देना ही दोहे की विशेषता है । चित्रा मे भी यही खूबी है । कम से कम म ही बहुत कुछ कह लिया गया है । लेकिन जहा आवश्यक हुआ है अधिक शब्दो का प्रयोग करके दोहो की मूल भावना को चित्र फलक पर उतार दिया गया है । भारद्वाज की सफलता का एक राज यह भी है कि वे राजबध परिवार से सबध रखने के कारण बचपन स ही बूंदी के महलों म जाते रहे हैं । महाकवि सूयमल्ल राजकवि स बढकर माने जाते थ । राजा के साथ बैठकर वे मुड मे लढते थे । उनक चित्रो मे तल वार और बलम साथ साथ मिलती हैं । महलो के भीतरी भागो का चित्रण कविता

और चित्रों में समान रूप में आया है। परिणामतः भारद्वाज के चित्र संपूर्ण चित्र बन गए हैं।

महाकवि ने कहा था कि 'पानन में भुलाते हुए माँ अपने शिशु को सिखाती है कि अपनी भूमि किसी को नहीं दर्ना चाहिए। ऐसा करके वह जन्म लेते ही पुत्र का मरण की ओर बढ़ा रही है। दोहा है

इला न देगी आपत्ती हाँलरिए हुलराय ।  
पूत सिखावै पानण मरण बढ़ाई माय ॥

कात्तिकर् भारद्वाज ने चित्रों में नायकों और नायिकाओं के मन में मातृभूमि पर मिटने की प्रेरणा के दशन करवाने का प्रयत्न किया है। दोहा के अनुसार नायिका कहती है, 'हूँ नायक आज मेरे पावों में मेहँदी मत लगा क्योंकि कल युद्ध के बारे में सुना है। युद्ध में जब पति के शरीर पर असह्य घाव हों जाएँ तो मेहँदी को और ज्यादा रंग दे देना।' महाकवि कहते हैं

नायण आज न मीढ पग काल सुणीजे जग ।  
घारा लामे जे धणी, ता दीजे धण रण ॥

दोहों को चित्राकृत करते समय जहाँ नायिका के पावों में मेहँदी रचानी हुई नामन लिखाई गयी है वही युद्ध का संदेश लेकर नायक के पास आया हुआ पुरोहित चित्रित किया गया है। ममर भूमि में जान के लिए तयार खड़े भद्र का अकन इस दोहे के चित्राकन में पूर्णता भरता है।

चकि देग भर में कलाकारों ने अपनी कला के माध्यम से विशिष्ट कवियों का स्तुत किया है, इसलिए भारद्वाज के इस प्रयास को प्रयोग नहीं कहा जा सकता। यह उमी श्रृंखला में किया गया एक काय है। लेकिन कविता के सृजन से लेकर उसके चित्राकन तक की तमाम बातें भारत की विख्यात कलानगरी के सदस्यों से सीधी सीधी जुड़ी हैं इसलिए इस काय का महत्व दूसरे तमाम प्रयाग से कहीं अधिक है। विशेष बात यह है कि एक फलक में पीडियों का इतिहास अभिव्यक्त हुआ है। प्रथम स्वाधीनता संग्राम के सेनानी का काव्य और स्वतंत्र भारत में सोचने वाला चित्राकन। दोनों एक ही नगर से आए हैं।

## वीरो का वह प्रदेश राजस्थान जहा मरणोत्सव मनाया जाता है

डॉ० कृष्ण चिहारी सहल

मृत्यु जसी भयकर वस्तु पर भी मरणोत्सव मनाया जाना राजस्थान की अद्वितीय विशेषता रही है। रण स्थल में वीर-गति को प्राप्त करना तथा जौहर की ज्वालामुखी में भस्म हो जाना, महा के बड़े गौरव और सम्मान की किन्तु साधारण सी बात समझी जाती थी। मैं समझता हूँ कि राजस्थान के अलावा अन्य किसी प्रदेश की संस्कृति में, वहाँ के जीवन में मृत्यु का इस प्रकार जय-जयकार नहीं किया गया है। यहाँ तो मृत्यु का स्वागत किया गया है तभी तो कहा गया है—

मगल मरण मनावती रणचण्डी रणदास ।

विश्व में गायत्र ही ऐसा कोई देश होगा, जहाँ मृत्यु के समय में भी हृष हो। घर के घर उजड़ जाते हैं कबिले खरम हो जाते हैं, कितने ही वीर रण क्षेत्र में सदा के लिए सा जाते हैं कितनी ही स्त्रियाँ ज्वाला की लाल-लाल लपटों की गोद में बैठकर स्वाभिमान की रक्षा करती हैं पर क्या मजाल है कि दुःख की रेखा भी किसी के चेहरे पर आ जाए। पुत्र और पुत्रवधु ताना ही मृत्यु की तैयारी कर रहे हैं, ऐसी स्थिति को वीर मतसई में चित्रित सास जब देखती है तो प्रसन्न होकर कहती है—

रखिया डुगर लाज रा, सामू उर न समाय ।

इतना ही नहीं, घर में अकस्मात् मनात हुए हृष को देखकर सास कहती है

आज यह हथ कैसा ? तब जात होता है कि पुत्र-वधु और उसका पुत्र प्राण चौंछावर करने जा रहा है तो वह बड़ी प्रसन्न होती है । देखिए—

आज घर सामू कहै, हरख अचरणक काय ।

बहू बनेबा हुलसै पूत मरेबा जाय ॥

राजस्थान की नारी न तो कभी मृत्यु को महत्व देना ही नहीं सीखा । राजस्थान की नारी सदैव पुरुष को प्रेरणा देती रही है । इस प्रदेश की नारी वीरता और प्रेम दोनों का निर्वाह करती है । यहाँ ता वीरता और प्रेम दोनों हाथ मिलाकर चलते हैं । वीर सतसईकार की नारी ने जब सेना का शोरगुल सुना तो वह शृंगार में डूबे हुए अपने वीर पति को सजग करती है और कहती है अब तो इन दबे हुए पीन स्तनों का छोड़ना ही होगा । यथा—

सूए ता हाकौ सहज ही, कीधो जज कधी न ।

नीदा लू अब छोटगा, भीडाणा कुच पीन ॥

ऐसी नारिया क्या कायरता का भीरुता को पसन्द कर सकती हैं । घमासान युद्ध शुरू होने पर भी प्रामाद में पट हुए अपने पुत्र को चेतावनी देती हुई वीर माना युद्ध के लिए उसे प्रोत्साहित करनी है और कहती है पुत्र ! अपनी कुल क्रमागत रीति का मत भूल । क्या तू नहीं जानता कि मेरे स्तनों में तो जहर समाया हुआ है अर्थात् मरा स्तनपान करने वाले के लिए अवसर पड़ने पर प्राणोत्सग करना अनिवार्य है और फिर रणभूमि में वीर गति पान की तो अपन यहाँ रीति ही है । तब देर कसी ? उठ, घमासान युद्ध शुरू हो गया है । कहा भी गया है—

बाला चाल भी बीस रेमा थए जहर ममाण ।

रीत भरता डील की, उठ थियो घममाण ॥

ऐसी माताए ही अपने बच्चे को युद्ध में भेज सकती हैं । इतना ही नहीं जब वीरगता का पति युद्ध में पीठ टिखलाकर भाग आया तो वह व्यग्यपूर्ण उक्ति के साथ कहती है— आधो लहम में छिप जाओ । शत्रु का कुछ भराता नहीं यहाँ (घर में) भी पहुँच जाय । कल्पना कीजिये ऐसी नारी की जो पति का ललकारती है और उस मृत्यु के मुह में जाने को बाध्य करती है । भागे हुए पति को वह कहती है कि तुमने घर में आकर यह क्या किया ? युद्ध में मर जाते तो मैं अग्नि से अलिंगन करती सती होती । वह आज की नारी की तरह कायर नहीं है या आँसु में आसू और आँसु में दूध जसी उक्ति को चरिताय नहीं करती वह तो घरती में अपन सतीत्व के कारण समा जाना चाहता है । वह तो चाहती है कि पति युद्ध-स्थल में ही शत्रु को मारता-मारता भले ही प्राण दे दे लौटकर न आये अर्थात् पीठ टिखलाकर न आये । वह नहीं चाहती कि उसका पति कायर बनकर भाग आवे । वह तो स्पष्ट कह देती है कि हे पति ! युद्ध स्थल में जाकर तुम अपने और मेरे कुल की प्रतिष्ठा रखना । युद्ध-स्थल से लौट आओगे तो फिर तिरहाने के लिए तकिया भले ही मिल जाये, प्रियतमा की मुजायें तो मिलन की नहीं ।'

मत्त लखीञ्च दोग्धि कुल नधी फिरती छाह ।

मुडिया मिलसी गीश्यों, वल न घए री बाह ॥

दूसरी पति म धानिय वाला या धात्मगौरव चरित हुमा है । जो कायर पति का स्पश भी नहीं करना चाहती । वह तो ध्यानवान की रक्षा करना जानती है और इसके लिए प्राणों की आहुति देना उसके स्वभाव म है । मह गौरवशाली देग है, जहा मृत्यु वा ह्य से आलिंगन किया जाता है, मृत्यु तो त्योहार है पय है ।

राजस्थानी साहित्य म राष्ट्रीय भावना' नामक सेत्र मे डा ब'हैयालाल महत न लिखा है कि आर्जनिग न अपनी एक कविता म कहा है कि जीवन भर मधय करता रहा हू किंतु मरी अत्यंतम इच्छा है कि मृत्यु जब कभी भी तू आवे, चुपके चुपके आकर मेरा प्राणात न कर डाला प्रत्यक्ष होकर मुझम युद्ध करना । मैं तो जम्ना ही रहा हू । यह एक युद्ध और मही । मृत्यु म लोहा लेने की रग वीर भावना की बड़ी प्रगसा की जाती है और वस्तुतः यह मराहनीय है भी । किंतु आर्जनिग की यदि यह ज्ञात होता कि भारतवर्ष मे राजस्थान जसा एक अद्वितीय प्रदेश भी है जहा मृत्यु को त्योहार के रूप मे मनाया जाता है । धारातीय म स्नान करना जहा परम पुण्य और पवित्र कर्त्तव्य समझा जाता है तो निश्चित ही उनकी बाणी प्रफुल्लित हाकर प्रथसा के बहुमुखी उदगारो म फूट पडती । राजस्थान न अपने रक्त म जिस साहित्य का निमाण किया है उससे टक्कर लेने वाला साहित्य कही भी नहीं मिलता । राजस्थान का यह मरण त्योहार ता एकदम नवीन है और यह कौरी कवि कल्पना ही नहीं यह एक ऐमा समुज्ज्वल एतिहासिक तथ्य है कि जिस पर सहस्रो सुन्दर भावनाए भी 'योद्धावर की जा सकती हैं ।

वीर सतमई की नारी तो कहती है मरे पति युद्ध से भाग कर आ गये हैं जो मेरे लिए मरण तुल्य हैं ऐसी स्थिति मे मुझ जसी विधवाओ के लिए कसा शृगार ? पति युद्धस्थल म मदा के लिए सो जाए और मैं अग्नि की ज्वालाओ के गाढालिंगन हूँ उसके पास जाऊ तभी मेरा शृगार हाता है, इसके पूव कसा शृगार ?' कल्पना कीजिए ऐसी नारी की जो शृगार भी मरण के अवसर पर ही करती है—

मणिएहारी जा री सखी, अद न हवेली आव ।

पीव मुझा चर आविया, विधवा जिसा बणाव ।

विधवा किसा बणाव' मे दुःख एव परिताप की एक सद आह है । पीव मुवा घर आविया जसी भावना तो शेक्सपियर ने भी लिखी है और बताया है कि कायर व्यक्ति अपनी मृत्यु से पूव जीवन मे कई बार मरत हैं परंतु वीर पुरुष एक ही मृत्यु का आलिंगन करता है—

Cowards die many a time

before their deaths

The valient never taste of death

but once

—Shakespeare

श्री विद्यो गोहरि वृत्त वीर सतसई म भी इसी प्रकार का भाव मिलता है—

'कायर जीवित ही मरत दिन मे बार हजार ।

प्राण पक्षेरू घोर वे उडत एक ही बार ।'

ठीक ऐसा ही भाव आर्यावर्त मे आया है

कायरो की मृत्यु सास सास पर होती है ।

बापता है मरण पराक्रमी की छाया से ।'

'इला न देणी घापणी की सोरी देने वाली वे नारिया पालने मे ही पुत्र को इस मरणोत्सव का महत्व सिखला दिया करती थी लेकिन आज वे नारिया कहाँ ? आज के कवि को तो इसलिए करुणाजनक स्वर में कहना पडता है —

'यानि मात्र रह गई मानवी

निज आत्मा का भ्रण ।'

लेकिन कवि बाकीदाम जी जो कह गये उमे आज वीर कहन वाला है —

सूर न पूछे टीपणीं सुकुन न देखे सूर ।

भरणा नू मगल गिणीं ममर घडे मुल नूर ॥

डा० कन्हैयालाल सहल के शब्दो मे किसी प्रबल वगमयी बलवती एव स्फूर्ति-मयी भावधारा से अनुप्राणित हुए बिना मृत्यु का निर्भीकतापूर्वक विराट आलिगन कभी सम्भव नहीं हो सकता । यदि ऐसा न होता तो किसी को क्या पडी है जो मृत्यु की विभीषिकाओ से खेले । राजस्थान के अमर कवियो ने इस प्रकार के दिव्य चित्र उपस्थित किये हैं । कयो नहीं देश के चित्रकार भी आज ऐसे चित्र प्रस्तुत करें, जिनसे देशवासियो को अनोखी प्रेरणा मिल सके । डा मुनीतिकुमार चाटुज्या ने यह यथार्थ ही लिखा है कि राजस्थान माता की मूर्ति यदि बनाई जाये तो उसके एक हाथ मे तलवार और दूसरे मे वीणा देना ठीक होगा । राजस्थान अपने वीरों की दूरता से जितना गौरवाचित है अपने साहित्य से भी उससे कम गौरवाचित नहीं । आज ऐसी अनेक वीर सतसईयों की आवश्यकता है जो जनमन में जीव उमग और प्रेरणा भर दे ।



## वश भास्कर -- एक ऐतिहासिक कृति

डॉ० के एस गुप्ता

चारण-साहित्य की परम्परा में जहाँ चन्द्र बरदाई कृत पृथ्वीराज रामो एक विन्दु है तो दूसरा बिन्दु सूर्यमल्ल मिश्रण कृत 'वश भास्कर' है। डॉ० रघुवीरमिह्र न ठीक ही लिखा है कि 'मध्यकालीन राजस्थान के भाषा वैचित्र्यपूर्ण साहित्यिक तथा अध्ययनीय ऐतिहासिक काव्य ग्रन्थों की विशिष्ट परम्परा की महत्वपूर्ण प्रतिम कड़ी होने के कारण वश भास्कर का राजस्थान के और ऐतिहासिक आचार-सामग्री में उल्लेखनीय स्थान है। वश भास्कर प्रणेतृ सूर्यमल्ल मिश्रण का जन्म १९ फरवरी सन् १८१५ ई० में हुआ था। इनके पिता चण्डीदान स्वयं भी एक प्रकाण्ड पंडित और प्रभावशाली कवि थे। चण्डीदान ने अपने जीवन काल में जो लिखा उसमें तीन कृतियाँ विशेष महत्व की हैं— ( १ ) बल विग्रह ( २ ) बग़ाभरण ( ३ ) मार सागर। इन ग्रन्थों में जिस प्रकार देश भक्तों के गीत की गाथाओं का विवरण दिया उससे स्पष्ट है कि वे उच्च काव्य प्रकृति के धनी थे। वस्तुतः मिश्रण परिवार में आत्मसम्मान और देश प्रेम की निरंतर परम्परा रही है। उसी वातावरण में सूर्यमल्ल बड़े हुए। बाल्यकाल से ही सूर्यमल्ल बुझाप्र-बुद्धि और अपूर्व स्मरण शक्ति के धनी थे। उनकी विद्वता को तो इसी से ही समझा जा सकता है कि उन्होंने दस वर्ष की अवस्था में ही 'राम रजाट' खण्ड काव्य की रचना करनी थी। १२ वर्ष की अवस्था तक 'याचरण' गत पद ज्ञान में वे पारंगत हो गये थे। जिन जिन विद्वानों से उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया उसका उल्लेख वश भास्कर में किया है। दादु पंथी साधु स्वरूप दास और प्राज्ञानन्द नामक गुरु सूर्यमल्ल के विशेष श्रद्धा भाजन थे। स्वरूपानन्द से योग वेदांत 'याच' विशेष साहित्यादि


के ज्ञान की प्राप्ति की। शाशानन्द ने उन्हें व्याकरण, कोश ज्योतिष, छन्द शास्त्र, काव्य, ग्रन्थवैद्यक और चाणक्य शास्त्र की शिक्षा दी। मुहम्मद से सूर्यमल्ल ने फारसी और पवन से बीणा—दादन मीला। सूर्यमल्ल में विद्या, विवेक, और वीरत्व का सुन्दर मगम था। उसने जीवनकाल में ही उनकी कीर्ति का प्रसार भारत के सूदूरवर्ती क्षेत्रों तक हो गया था। तत्कालीन बुद्धिजीवी समाज में वे एक महाकवि एवं सत्यवक्ता मानव के रूप में प्रतिष्ठित थे। राजदरबार में उनका गौरवपूर्ण स्थान था। उनकी गणना बून्दीके पाँच रत्नों में थी। राजा महाराजा उनसे प्रेरणा प्राप्त करते थे और जनसाधारण उनके द्वारा रचित गीत गा गा कर वीरों के कार्यों का स्मरण करता हुआ गौरवान्वित हाता था। बड़ बड़ भूपति प्रतिष्ठित कवि और विद्वान उनके सम्पर्क के लिए तालाशित रहते थे। उन्होंने अनेक रचनाओं की रचना की परन्तु ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण निम्नांकित हैं—

( १ ) वग भास्कर ( २ ) वीर सतसई ( ३ ) बलवद विलास। इनमें उनकी सर्वाधिक माय्य एवं यशस्वी कृति वग भास्कर है। इस उनकी कीर्ति का मुख्य आधार स्तम्भ बहें तो कोई प्रतिशयोक्ति नहीं है।

कहा जाता है कि बून्दी नरेश रामसिंह ने महाभारत के समान अपने वंश के लिए एक ग्रन्थ प्रणयन की इच्छा व्यक्त की। अपने स्वामी की इच्छा पूर्ति हेतु सूर्यमल्ल ने वग भास्कर लिखने का निणय लिया। परन्तु उसने रामसिंह से यह वचन लिया कि जो मही बात होगी उस लिखने को ही वह बाध्य होगा। महाराज के इस शत को स्वीकार कर लेने पर ग्रन्थ का निर्माण वैशाख शुक्ला तृतीया सवत् १८६७ क दिन प्रारम्भ हुआ। काव्य रचना तीव्र गति से प्रारम्भ हो गई। सूर्यमल्ल के साथ चार लेखकों को भावद्व किया। लेखन के वेग का अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि चारों लेखक अत्यन्त परिश्रम करके ही उसको लेख बद्ध कर पाते थे परन्तु आश्चर्य है कि महाराज की तीव्र इच्छा तथा लेखन पूरा वेग से प्रारम्भ होने पर भी ग्रन्थ अपूर्ण रह गया। ग्रन्थ लेखन का काय सूर्यमल्ल ने सवत् १६१३ में रोक दिया। रामसिंह ने इसे पूरा करने के लिए कवि से बार बार आग्रह भी किया और इस आग्रह ने १८६० ई म कतिपय अंश जाड़े भी। सूर्यमल्ल अगले आठ वर्ष और जीवित रहे लेकिन इस पूरा करने की और बिल्कुल ध्यान नहीं दिया। बाद में उसके दत्तक पुत्र मुरारीदान ने पूरा किया। सूर्यमल्ल द्वारा ग्रन्थ को पूरा न करने के अनेक कारण बताये जाते हैं। एक मत यह है कि महाराज रामसिंह के दोषों का वर्णन करने के फलस्वरूप दोनों में मन मुटाव हो गया और यह ग्रन्थ अधूरा ही रह गया। अंग्रेजों के प्रति दृष्टिकोण को लेकर मत भेद का अर्थ कारण भी बताया जाता है। रामसिंह अंग्रेजों के शासन का भक्त था जबकि सूर्यमल्ल अंग्रेजों के शासन के कटु आलोचक। वे एक देश भक्त एवं स्वतंत्रता प्रेमी थे। जब कि उनका शासक अंग्रेजों शासन में गति व सुरक्षा देख रहा था। अतः दोनों में गहन मतभेद हो जाने से ग्रन्थ का काय आगे नहीं बढ़ पाया। १८५७ की गतिविधियों का विश्लेषण करें तो मतभेद का कारण यह मत उपयुक्त नहीं प्रतीत होता। ये शासक जिम्मे स्वतंत्रता सेनानी तात्यां टोपे को बून्दी से सात लाख रुपये



बूट लेने दिया हो और जिसने सूयमल्ल को वीर सतसई छपने प्रायय मे लिखने दिया हो उसे अग्रज भक्त कहना उपयुक्त नहीं लगता । सम्भवत १८५६ के पश्चात अग्रजों के विरुद्ध वातावरण बनाने में सूयमल्ल को यह कायचक्र न लगाया । अतः ऐसी अवस्था में यह ग्रन्थ अपूर्ण छोड़ दिया हो । अतः घटनाओं का विश्लेषण करें तो प्रथम कारण अधिक माय प्रतीत होता है । अपूर्ण होते हुए भी यह बहुत ही विस्तृत ग्रन्थ है । सम्भवत इससे बड़ा ग्रन्थ हिन्दी में कोई नहीं है । अछूरा होते हुए भी यह लगभग तीन हजार मुद्रित पृष्ठों में समाया हुआ है । कानूनगो के अनुसार तो यह ग्रन्थ ऐतिहासिक दृष्टि से पृथ्वीराज रासो से भी अधिक महत्वपूर्ण है और साहित्यिक दृष्टि से १ वीं शताब्दी के महाभारत की रचना में रखा जा सकता है ।

वश भास्कर में वर्णित इतिहास का क्षेत्र विस्तृत है । नि सन्देह चौहान वंश, मुख्यत बूदी के हाडा वंश का ही इतिहास लिखना वश भास्कर का इतिहास रहा है फिर भी ऐतिहासिक क्लेवर में राजस्थान का ही नहीं वरन् ममस्त भारतवर्ष का इतिहास समाया हुआ है । अग्निवशीय क्षत्रियों की प्रतिहार चालुक्य परमार और चौहान चारों शाखाओं की अग्निकुंड से उत्पत्ति का अवलोकन महित उनकी विभिन्न राज्यों की स्थापना आदि का विस्तृत विवरण चौहान वंश की गाथाओं, उपशाखाओं के परिचय के बाद कवि बूदी के राजवंश का चित्रण करता है । सन् १८५७ के स्वतंत्रता संग्राम का संक्षिप्त किंतु सारगर्भित उपयोगी आलोक्य दला वरण भी है । यो एक बृहद् इतिहास की रचना कवि ने की है जिसमें सृष्टि रचना से लेकर भारत में अग्रजों राज की स्थापना तक का ऐतिहासिक ब्योरा आ गया है । बूदी राज्य का संस्थापक से लेकर करीब अकेले हाडा वंश का लगभग दो सौ वर्षों का चित्रण वश भास्कर में मिलता है । राजस्थान के शासकों के पारस्परिक सम्बंध तथा चौहान वंश के परिवेश में केन्द्रिय शक्तियों के इतिहास का भी इस ग्रन्थ में समावेश किया है । इनका ही नहीं विदेशी जातियों का भारत में आना उनके सघर्ष, दिल्ली सुल्तानों की ममस्त भारत-गति विधिय  विस्तृत लेखा इस ग्रन्थ से ज्ञात होता है । दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन की दक्षिण विजय मुगल कालीन भारत के विभिन्न क्षेत्रों की घटनाओं का विशद वरण भी वश भास्कर में मिलता है । राजनतिक घटनाओं के अलावा सामाजिक तथा सांस्कृतिक दृष्टि से भी रीति रिवाज, मनोरंजन साधनों नृत्य एवं नाट्य उत्सव व त्योहारों का भी इसमें विस्तृत विवरण है । डॉ० खान के अनुसार नागर जीवन और क्षयमान सामंतकाल के जन जीवन का साकार चित्र जित प्रकाश वश भास्कर में मिलता है अनन्यत्र दुर्लभ है । सत्य वरण में सत्य सज्जा अभियान रीति युद्ध में व्यूह रचना गन्धर्व आदि के बारे में भी इस ग्रन्थ में अच्छा प्रकाश पड़ता है ।

वश भास्कर में इस व्यापक ऐतिहासिक सामग्री के सकलनाथ सूयमल्ल ने छपने समय में उपलब्ध कई ऐतिहासिक साधनों का उपयोग किया है । उसका क्षेत्र वेद, पुराण रामायण, महाभारत आदि ग्रन्थों से लेकर संस्कृत भाषा के नाटक व ग्रन्थ कृतियों, बडवा भाटों की पोषियों, रास कथाओं वातों एवं विभिन्न राजघरानों की दफतर बहिनो तथा फारसी तबारीखों तक व्यापक है । कानूनगो के शब्दों में 'वश भास्कर का

सबसे अधिक महत्व ऐतिहासिक सामग्री का सङ्कलन है। परन्तु गहलोन का कहना है कि बंग भास्कर कनल टॉड के 'राजस्थान का इतिहास' के आधार पर श्री अग्रज सङ्कार की रिपोर्टों के सहारे लिखा गया है। उसमें भी प्राधुनिक खोज से काम लिया गया है। शोभा ने भी सूयमल्ल की ऐतिहासिक लेखन कला को 'आतिमूलक' माना है। उनका मानना है कि कवि या लक्ष्य केवल कविता की ओर ही रहा है न कि प्राचीन इतिहास की पुष्टि की ओर। यद्यपि बंग भास्कर का लक्ष्य कविता बनना रहा किन्तु इतिहासकार के उत्तरदायित्व को उसने धवहेमना नहीं की है। जहाँ तक इतिहास पुष्टि का प्रश्न है उसमें जो इतिहास सामग्री दी है उसमें अधिक की आशा हम कर भी नहीं सकते हैं क्योंकि उस युग में इतिहास का साधन आज की तरह प्रचुर मात्रा में नहीं था और न उस दिशा में विशेष शोध खोज हो पाई थी। उसने उपलब्ध सामग्री के अध्ययन के आधार पर ही मत निर्धारित करने का प्रयास किया। मिश्रण न स्पष्ट लिखा है कि प्राप्त सामग्री में एक ही तथ्य के बौद्धिक रूपान्तर मिलते हैं और उन्हें साधन उपलब्ध न होने के कारण उन्हीं को समावेश कर लिया। इन पाठकों को नीर-स्वीर विवेक में जो उसमें मार है उसे ही ग्रहण करना चाहिए। यो यह कहा जा सकता है कि यह कमी सूयमल्ल की कमी न होकर उसके युग की इतिहास लेखन प्रक्रिया की कमी है। वास्तव में इतिहासकार के रूप में मिश्रण के सम्बन्ध में दो प्रकार की धारणाएँ प्रचलित हैं— एक धारणा के अनुसार उसके जैसा इतिहासवेत्ता नहीं हुआ है। दूसरी धारणा के अनुसार वे कवि और अध्येतृ विद्वान हैं लेकिन इतिहासवेत्ता नहीं। डा० भालमशाह खान के अनुसार इन दोनों धारणाओं में पुरानी और नई पीढ़ियों के साथ ही नये और पुराने दृष्टिकोण का अन्तर है। पुरानी पीढ़ी का इतिहास विषयक दृष्टिकोण परम्परागत पुराणों के इतिहास की शैली पर ही आधारित है। राजस्थान के लेखकों इतिहासकारों और विचारकों में अधिकांशतः इसी का अनुसरण किया है। राजप्रशस्ति अमर काव्य आदि ग्रन्थ इसी प्रवृत्ति को लेकर लिखे गये हैं। इनके विपरीत नई पीढ़ी उसे ही इतिहास मानती है जिममें वैज्ञानिक पद्धति से तथा तथ्य का विश्लेषण कर शुद्ध तथ्य का प्रतिपादन किया हो।

जहाँ तक तथ्य कथन और तथ्य प्रतिपादन का प्रश्न है सूयमल्ल पर हम अग्रणी नहीं उठा सकते हैं। इसके लिये प्रत्यक्ष प्रमाण यह है कि उसने निष्पक्ष भाव से अपने आश्रयदाताओं के राजवशीय दोषों का निर्देशन किया है। जैसे बुधसिंह का भ्रान्ती प्रमादी अग्रधर्मों तक की निसकोच मजा दी तथा बूढ़ी के प्रथमपत्न के लिए उत्तरदायी माना। सुजन के निबल पक्ष का भी उन्होंने खुलकर बयान किया। और तो और अपने स्वामी रामसिंह के बयान का जब अवसर आया तब भी सत्य तथ्य की ओर से विमुक्त नहीं हुए। उन्होंने बस भास्कर जैसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ की रचना छोड़, उसे अपूर्ण रखना स्वीकार किया पर तथ्यों को हटा कर रावराजा रामसिंह का मात्र स्तुति-परक इतिहास लिखना स्वीकार नहीं किया। डा० दशरथ शर्मा ने भी स्वीकार किया कि सूयमल्ल ने सभी घटनाओं का निष्पक्षता से बयान किया है। कवि की सत्य निष्ठा को देखकर ही बारहठ कृष्णसिंह ने उसे शायदपूर्वक इतिहासवेत्ता कहा है।

वश भास्कर की ऐतिहासिक महत्ता इसी से स्पष्ट है कि प्राधुनिक इतिहासकारों ने अपनी कृतियाँ में इसका उपयोग किया है। डॉ. मथुरालाल शर्मा ने इसके तृतीय एवं चतुर्थ भाग को ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही उपयोगी माना है। यह भाग बूढ़ी, कोटा एवं राजस्थान के इतिहास के लिए ही नहीं अपितु भारतीय इतिहास के लिए भी उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। कानूनगो ने तो दुःख प्रगट किया कि अभी तक भी इतिहासकारों ने इस ग्रंथ का भद्र ठक उचित मूल्य नहीं समझा। राजनीतिक इतिहास के साथ-साथ वश भास्कर का महत्त्व सामाजिक एवं सांस्कृतिक इतिहास जानने के रूप में अत्यधिक है।

सारांश में हम यह कह सकते हैं कि सूयमल्ल के ग्रंथ में विस्तारपूर्वक प्रक्रिया का प्रभाव हो परन्तु उनमें इस बात के प्रति बराबर गतकता बरती है कि उसकी रचना में असत्य और अशुद्ध का मेल न हो और इसी आधार पर वश भास्कर को एक ऐतिहासिक ग्रंथ बने तो अनुचित नहीं होगा। वास्तव में यह राजस्थान का अत्यन्त ही भाग्य और यशस्वी ग्रंथ है। मालमशाह खान ने ठीक ही लिखा है कि "वश भास्कर" में जो रश्मियाँ विकीर्ण हुईं, उनमें जहाँ एक ओर रण-ध्वस्त राजस्थान का अतीत आलोकित हुआ वहीं उसका बाका वीरत्व और पराक्रमी, शौर्य प्रदीप्त वाणी में मुखरित हो उठा जो राजस्थानी जन मानस को दूर तक प्रभावित करने में समर्थ हुआ। वास्तव में देखा जाय तो १९वीं २०वीं शताब्दी के चारणी रचनाकारों में एक विशेषता यह भी है कि उनमें प्रतिबद्ध राष्ट्रीयता के दिग्दर्शन होते हैं। अंग्रेजों के विरुद्ध देश भक्ति की उग्र विचारधारा का प्रतिपादन उनकी लेखनी से होता है। अतः इतिहास लेखन में भारत में राष्ट्रीय परम्परा की विचारधारा को पोषित करने में राजस्थान का भी कम योगदान नहीं है और इसका सर्वाधिक श्रेय सूयमल्ल मिश्रण को जाता है।

## अपूर्ण क्यों रहा वश भास्कर

घनश्याम वर्मा

वश भास्कर महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण की घण्टी की एक ऐसी आधार-स्तम्भ रचना है जो युगो युगों तक उनकी स्याति को जीवन्त बनाये रखने में समर्थ है। यह एक ऐसा काव्यमय इतिहास ग्रंथ है जिसने उस काल में राजस्थानी जनमानस को प्रेरित एवं प्रभावित किया। इस ग्रंथ में प्रसिद्ध चौहान शासकों के वश के इतिहास का बखान विस्तार पूर्वक किया गया है। इसके अलावा वश भास्कर युद्ध कला कौशल, ज्योतिष, योग धर्म, आध्यात्म तथा अत्याय पुण्यतन कलाओं एवं विज्ञानों के ज्ञान का समृद्ध कोष भी है। इस विनाल ग्रंथ में हाडा चौहान वश के करीब दो सौ नरेशों का बखान्त जीवन घर्षा, फौजी कारनामों एवं अत्यय क्रिया कलाओं का विशद बखान महाकवि ने किया है।

वश भास्कर की रचना रावराजा रामसिंह के आदेश में उनके दरबारी कवि सूर्यमल्ल ने ज्योतिष शास्त्र की नितान्त सूक्ष्म गणना के आधार पर विक्रम संवत् १८६७ वशाब्द बुधो तुनीया सोमवार अर्थात् ४ मई १८४० में आरम्भ की। उस काल में इस महाकाव्य के सृजन में दस हजार रुपये व्यय हुए थे जिससे यह सिद्ध होता है कि नरेश रामसिंह ने इस महत्वाकांक्षी ग्रंथ के निर्माण में नितनी रुचि ली थी। दुर्भाग्य वश ग्रंथ अधूरा ही रहा जिनके पार्श्व में रामसिंह की नाराजगी प्रमुख कारण था।

सूर्यमल्ल ने इस ग्रंथ के निर्माण में श्रुति लेख पद्धति काम में ली। सूर्यमल्ल के पौत्र ठाकुर बालूदान के पुत्र क कथनानुसार आठ व्यक्ति सूर्यमल्ल जी के दायें बायें

बैठकर बहुत कठिनाई से उनकी कविता का निपिबद्ध कर पाते थे। कहा जाता है कि व इन लेखकों को सुबह से शाम तक अपने साथ रखते। मद्यपान करने व बाद भयवा जब कभी उन्हें लहर आती कि भ्रचानक 'दू' करते। 'दू' करत ही लेखक सावधान हो जाते और लिखने को तत्पर हो उठते। ज्यों ही कवि के मुख में वाणी फूटती कि व लोग लिखने लग जाते। सरपट क्लम दौड़ने लगती। तब का ब्रम टूट गया ता दूसरा लेखक उसे पकड कर जोड देता। घंटो तक सरस्वती कवि की जिह्वा पर नृत्यरत रहती। भ्रचानक ब्रम टूटता तब वह कह उठते—उस ! सरस्वती माना ! बृषा करो ! ध्रव मरी क्षमता नहीं ग्ही अधिक वाणी को बहून करने की ! उठ करो माँ ! लघ्वा साम लेकर सूयमल्ल माया ऊँचा करत। इसी पद्धति स वग भास्कर की रचना हुई। मद्योमाद क कारण वग भास्कर मे यत्र तत्र ऐतिहासिक सन् सवत् की भूलें भी हुई हैं।

महाकवि ने महाभारत सद्य "स विशाल ग्रथ की रवि कं गी ध्रयनो बारह अशो और सहस्र मयूखो मे रचना की योजना बनाई थी परंतु योजना पूरा रूप स ब्रियार्चित नहीं हो सकी। दो ध्रयनो मे पूर्वार्ण तथा उत्तरार्ण में डेढ राशि (अग) मात्र है। इसम २१० मयूखो मे छ राशियो की रचना के बाद पूर्वार्ण की समाप्ति तथा उत्तरार्ण मे सातवी राशि लिखकर आठवी राशि पूरी भी नहीं कर पाया था कि महान काम को बीच मे रोक देना पडा। यदि उत्तरार्ण भी पूर्वार्ण के समान याजना नुसार सृजित किया जाता तो बश भास्कर की पूति म साठे तीन राशियो के अन्तगत ६२७ मयूखो का निर्माण और होता तब इसका आकार तिगुना हो जाता और अनुमानत यह ग्रथ दस हजार मुद्रित पृष्ठो मे पूरा हा पाता जबकि अभी यह अघुरा होते हुए भी ढाई हजार मुद्रित पृष्ठो मे है। सक्षिप्त टीका सहित पृष्ठो की संख्या ४ हजार ३६८ तक पहुँची है।

ग्रथ के प्रेरक रावराजा रामसिंह और प्रणेत सूर्यमल्ल के जीवित रहत हुए भी ग्रथ का अधूरा रह जाना इतिहास की उल्लेखनीय घटना है। कहा जाता है कि जब रामसिंह ने सूर्यमल्ल से वग का इतिहास लिखने को कहा था तब सूर्यमल्ल न यह निवदन कर दिया था कि वह जो भी बात लिखेगा वह सच ही लिखेगा। उसका नरेश बुरा न मानेगा। रावराजा रामसिंह ने उनकी बात मान ली। तब उ हीने ग्रथ की रचना आरभ की थी। सूर्यमल्ल रामसिंह के पूवज राजाओ के गुणावगुण विस्तार पूवक लिखाते रहे। जब रामसिंह की बारी आई तब उनके गुण दोष भी लिखे जान लगे। यह बात किसी तरह रामसिंह तक पहुँची तब उसने कहा कि सूर्यमल्ल आपने मेरे वाप दादाओ के जो दोष लिखे हैं उह पदकर ता मैंने सब किया लेकिन अपने गोपो के लिए नहीं कर सकता। सूर्यमल्ल ने स्पष्ट कहा कि जब सबके दोष लिखे गय हैं तो आपने भी लिखे जायेंगे। रामसिंह ने कहा कि ऐसा लिखने से तो नहीं लिखना ही अच्छा है। यह सुनकर सूर्यमल्ल ने उसी दिन स वश भास्कर बनाना छोड दिया। सवत् १६१३ मे पहली बार रचना स्यगित हुई। रामसिंह क आदेश से पुन सवत् १६१४ म रचना आरभ हुई लेकिन कवि का ध्रव मन नहीं रम सका और रचना अंतिम रूप मे बंद हो गई।

इस ग्रन्थ की रचना अथर्वरुद्र होने के समय रामसिंह के राज्यकाल का लगभग सन् १८६० तक का इतिहास लिखा जा चुका था। यहाँ तक रामसिंह के चरित्र का उज्ज्वल पक्ष वर्णित है। जब उसके दूसरे पक्ष को जानने के पृष्ठ पलटते हैं तो सूर्यमल्लस्य काव्य समाप्तमिदम् हमारे सामने घाता है और चागे उसके दत्तक पुत्र मुरारिदान द्वारा रचित निरास्तुति परक 'राम चरित्र' धारभ हो जाता है। और इसी के साथ वन भास्कर समाप्त हो जाता है। रचना बन करने के बाद सूर्यमल्ल ८-१० वय तक जीवित रहा लेकिन ग्रथ की धोर बिल्कुल उन्मुख नहीं हुआ। सूर्यमल्ल के मरणोपरान्त उनके दत्तक पुत्र मुरारिदान ने रामसिंह ने घाटवी राशि की प्रति करवाई और पुरस्कार में उसे एक गाव दिया। सूर्यमल्ल की मृत्यु के बाद उसकी छ विधवा परिणयो का भी एक गाव धाजीवन दे दिया गया।

वसु भास्कर की रचना के महायज्ञ को बीच में रोक देने की घटना से यह सिद्ध होता है कि महाकवि कितना गत्य निष्ठ रङ्ग प्रतिभ स्वाभिमानी और राष्ट्र प्रेमी था। राजस्थान के इतिहास में सूर्यमल्ल जसा बहुगुणी व्यक्तित्व दूढ़ने से नहीं मिलता जिसने जीते जी अपने स्वामी की गहरी भक्ति और अनिच्छा होने पर उतनी ही विमुक्ति भावना से सेवा की। सूर्यमल्ल को यह सस्कार पतुब रूप में ही प्राप्त हुआ था। यह छ भाषाओं का प्रवाण्ड विद्वान और वीररसावतार था जिसकी अमर कृति वसु भास्कर युगों युगों तक राजस्थान की सभ्यता और सस्कृति के स्मारक ग्रथ के रूप में ही नहीं भारतीय ज्ञान परम्परा का समृद्ध कोष के रूप में भी अनुपम बना रहेगा।



# राष्ट्रीय चेतना और क्रातिचेता महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण

डॉ० लक्ष्मीनारायण नन्दा

महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण एक क्रातिचेता और यदायकी साहित्यकार थे।

उनके काव्य का मर्मक मूल्यांकन तत्कालीन युग और परिবেश को ध्यान में रखकर ही किया जा सकता है। जब तक हम उस काल की सामाजिक, साम्कृतिक और राजनीतिक परिस्थितियों को ध्यान में नहीं रखेंगे तब तक उस रचनाकार के सृजन की भसीभाति नहीं समझ पायेंगे। सूर्यमल्ल का समय अंग्रेजों के वचस्व का काल था। अंग्रेजों का सम्पूर्ण भारत पर निरकुश आधिपत्य था। उन्होंने स्थानीय फूट का भरपूर लाभ उठाया और भारत को छोटे छोटे टुकड़ों में बिखर दिया। अंग्रेजों की सत्ता का आधार ही राष्ट्र, समाज और जाति का विभाजन था। अंग्रेजों ने दण्ड एक दीनता से स्थानीय जनता से साम्प्रदायिक विद्वेष पैदा कर दिया था। अंग्रेजों की कूटनीति का सीधा फल था भारतीय जनता को गुलामी के शिकारे में घुँसा देना। इस दमघोड़ वातावरण को लेकर स्थानीय शासन कर अपनी सत्ता को सशक्त करना। इस दमघोड़ वातावरण को लेकर स्थानीय जनता में रोष एवं आक्रोश भी था लेकिन उन्हें कोई माग दिखाई नहीं दे रहा था। अन्दर ही अन्दर अंग्रेजों के विरुद्ध जन-असंतोष भी बढ़ता जा रहा था लेकिन इसे एक दिशा नहीं मिल पा रही थी। संचार साधनों की गूनता जन-सम्पर्क का अभाव तथा सामन्तशाही के कारण इस समय इस आक्रोश को अंग्रेजों के विरुद्ध प्रहार करने के लिए उचित नेतृत्व और संगठन की आवश्यकता थी। एक राष्ट्रीय चेतना और उसको एक दिशा देने हेतु घरातल तयार किया जाना था। ऐसे ही समय राजस्थान में बूढ़ी

के महाकवि सूर्यमल्ल मिश्रण ने सम्पूर्ण राष्ट्रीय चेतना और जन-जागृति से धारणता जोड़ा। सूर्यमल्लजी का व्यक्तित्व धीरे धीरे राष्ट्रीयता और जन चेतना का पर्याय शील जा रहा था। वे अंग्रेजों से मुक्ति और अपनी धरती को आजाद कराने के लिए प्रयत्न यही हुए। अपनी रचनाधर्मिता का उन्होंने यही लक्ष्य रखा। उनका उद्देश्य और गतक राष्ट्रीय था। सूर्यमल्ल का काव्य धोजपूर्ण था। उन्होंने इस सांस्कृतिक जागरण के समय रचनाओं की चेतना के लिए मसूहबद्ध होने हेतु जगह-जगह से सदेशवाहक और पत्र भेजे और सूचना की को सप्रहीत किया। सूर्यमल्ल जी एक स्वप्न देख रहे थे और वह स्वप्न राष्ट्र की स्वाधीनता का था। अपनी भूमि की दासता से मुक्ति का था। उन्होंने अपने सृजन पित प्रतियक्षा को और अपनी सम्पूर्ण सुख सुविधाओं को देश की स्वतंत्रता के लिए सम कर दिया। उनसे लिए राष्ट्रीय चेतना की जागृति व विस्तार सर्वोपरि था। देश-

दरमसल राष्ट्रीयता के मूल में देशभक्ति की भावना निहित होती है। यह है भक्ति में व्यक्ति का वह समग्र देश में लीन होकर अपने रूप को विस्तारित करके शक्ति और यही देशभक्ति इस व्यक्ति को समष्टि में परिवर्तित करती है। फिर यही अ या जाति, समाज या राष्ट्र का पर्याय बन जाता है। राष्ट्रीय साहित्य में किसी भी देश से जाति का समूचा रागात्मक रूप मिलता है। विनाल जनचेतना की जागृति की दृष्टि ही इस साहित्य का बड़ा महत्व है। इस साहित्य में केवल देश या राष्ट्र की प्रशंसा का नही है अपितु जन आकांक्षाएँ, जन स्वप्न और जन रोष भी समाहित हैं। इस प्रा के जनता की भावना ही राष्ट्रीय साहित्य में प्रतिध्वनित होती है। और सूर्यमल्ल साहित्य को देखें तो इसमें राष्ट्रीय चेतना और जन जागृति सर्वाधिक है। उन्हें

सूर्यमल्ल जी बूढ़ी के शासक रावराजा रामसिंह के यहाँ थे। महाकवि ने के अंग्रेजों के विरुद्ध सघष करने के लिए तैयार कर लिया था। इसका प्रमाण नामनी और ठाकुर बक्तावर सिंह को सवत् १९१४ में लिखे एक पत्र का यह अंश दृष्टव्य है— 'जो उधर की तरफ से पृथ्वी तथा अस्तराओं के आशिक लोगों में राज्य और प्राणों की बना लगाने वाले धीर जो कुछ अपने साथी होते हुए दिखाई पड़ते हों तो गुप्त रूप से लिखें हैं सो अयत्न भी बीज नहीं डूबा है। इसलिए और भी कई साथी होने के लिए तयार तो और बाद में भी कई साथी तैयार हो जावेंगे और साथी तैयार करने का दायित्व का हम लोगों का कुल क्रमागत है। आप वहाँ से सूची भेजेंगे तो वहाँ से भी ब्योरेवार लिखो जायेगा। इस समय तो गुप्त ही ठीक है।' प्रस्तुत पत्र स्पष्ट करता है कि कवि शह उन या मरजीवों की टोली सगठित कर रहा था। कवि अंग्रेजों के विरुद्ध एक ऐसे सगठने की कल्पना को साकार करना चाहता था जो येन केन प्रकारेण सघष करे और अ युद्ध कौशल से देश को आजाद करायें। सूर्यमल्ल जी जानते थे कि जन चेतना का सगठन शक्ति से ही ये अंग्रेज हिन्दुस्तान से जाएँगे अथवा इनकी दासता से मुक्ति से और कोई साधन नहीं है। एकता और राज्य क्रांति में कितनी रुचि थी यह इस पत्र स्पष्ट है जिसमें सूर्यमल्ल जी ठाकुर बक्तावर सिंह को लिखते हैं 'इसलिये राजपूतों, जब कभी धीरत्व की भावना देखी या सुनी जाती है तब मन में आनन्द आ जाने का व्यसन है। लोभ अनेक तरह के होते हैं उनमें से रजपूत की रजपूती देखने का भी प



लोभ है। इस लोभ का मुँह पर अधिक प्रसर है और सुनते हैं कि साधो भी बहुत मिल जायेंगे पर हिन्दुस्तान के दिन अच्छे नहीं हैं इसलिए आपस में एकता नहीं करते।' सूयमल्ल जी बूढ़ी में बैठे हुए भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दोनों ही पक्षों को देखते हैं वे जानते हैं कि सफलता का परिणाम क्या होगा और प्रसन्नता की स्थिति से भी वे पूरुणतया परिचित हैं। इसलिए सूयमल्ल जी अपने पत्र और कविता के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना में सन्तुष्ट थे।

राष्ट्रीय कविता राष्ट्र की घटकन होती है। राष्ट्र या राष्ट्रीयता जिस शब्द कई बार हमें सम्मिलित करते हैं क्योंकि पारश्चात्य विचारकों के अनुरूप राष्ट्र की परि-कल्पना उस युग में लागू नहीं होती। उस समय जो जातीय चेतना है उसे ही राष्ट्रीय चेतना का पर्याय माना जा सकता है। भूमि जन और वृद्धा की संस्कृति का सम्मिलित रूप राष्ट्र कहा जा सकता है यानी कि भौगोलिक एकता, राजनतिक एकता और सांस्कृतिक एकता का तात्पर्य ही राष्ट्र है। अंग्रेजी में जिस शब्द को कहा है वह राष्ट्र है और 'नेशनलिस्टिक' कहा गया है उस ही सामान्यतया राष्ट्रीय का पर्याय माना जाता है। 'नेशनलिज्म एण्ड गवर्नमेण्ट पुस्तक में श्री जिमरन ने लिखा है— मेरी दृष्टि में राष्ट्रीयता का प्रश्न सामूहिक जीवन सामूहिक विकास और सामूहिक आत्म सम्मान से जुड़ा है।' जब किसी जन समूह में धर्म भाषा, जाति संस्कृति इतिहास और भूगोल की एकता हो तो वह राष्ट्र बनता है। इसका स्पष्ट तात्पर्य यह है कि किसी जनसमूह की बुनियादी एकता ही उस राष्ट्र बनाती है। इस प्रकार जब हम सूयमल्ल के साहित्य में राष्ट्रीय साहित्य के सद्म में विचार करते हैं तो स्पष्ट ही लक्षित होता है कि उनका साहित्य राष्ट्रीय एकता के लिए समर्पित साहित्य था। सूयमल्ल जी के लिखे प्रथम में सर्वाधिक महत्वपूर्ण वश भास्कर' और वीर सतसई है। वश भास्कर ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक बृहद ग्रन्थ है तो वीर सतसई स्वतंत्रता के अनुष्ठान का महत्वपूर्ण दस्तावेज। वश भास्कर एक प्रबंध काव्य है और विंगद वरुण के अनुरूप ही लिखा गया है और वस्तु प्रधान है। वश भास्कर पाठकों को आतंकिन करता है तो सतसई उसे सतुष्ट करती है। भारत के वीर—साहित्य में इस वीर सतसई का शीघ्र स्थान है। लोकप्रियता की दृष्टि से सूयमल्ल जी को वीर सतसई को सर्वाधिक महत्व प्राप्त है। यहाँ भावों की सकीर्णता नहीं है। वीरत्व की प्रेरणा मिलती है। यह वस्तु प्रधान नहीं भाव प्रधान है। इसमें भावों की सावजन्यता और सावकालिकता है। सतसई वीर रसात्मक रचना है। सूयमल्ल का रचनाकर्म सोद्देश्य रहा। वे स्वदेश स्वाभिमान और स्वाधीनता के लिए समर्पित रहे और यही उनकी कविता का अन्तर्ग रूप है। सूयमल्ल जी की कविता में उल्लेख राष्ट्र प्रेम मिलता है और जो स्वाधीनता के लिए संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है। सूयमल्ल जी की कृति में राष्ट्रीय चेतना का निखरा स्वरूप है। वीर सतसई की भूमिका में सपादकगण लिखते हैं जिस समय सतसई का निर्माण हुआ उस समय देश में सन् ५७ के विद्रोह की ज्वाला भड़क रही थी। सारा देश विदेशी सत्ता का तर्कना पलटने के लिए व्यग्र हो उठा था। गदर कालीन परिस्थिति का कवि पर बड़ा स्फूर्ति दायक प्रभाव पड़ा था उनकी इच्छा थी कि वे प्रेरणा देकर निखरी हुई राजपूत शक्ति

को एक मूत्र में बाध कर विदेशियों को विरुद्ध मोर्चे के लिए लड़ी कर दें। लोगों को प्रेरणा देने के लिए जो कुछ उद्योगों निम्ना पढ़ी की, वह सब तात्कालिक परिस्थितियों के दबाव के कारण पोशीदा रूप में हुई। काव्य की व्यंजना शक्ति का प्रयोग इस पोशी देपन का बनाये रखने के लिए प्रचुर मात्रा में किया गया। इस उद्देश्य को लेकर सन् १९१४ में सुयमल्ल जी ने उग्र महान् कृति का निर्माण शुरू किया जिसका नाम है 'वीर सतसई।' [ वीर सतसई भूमिका, पृ० ७२ ]

वीर सतसई सुयमल्ल जी द्वारा सतसई परम्परा में लिखा गया मुक्तक काव्य ग्रन्थ है और इसमें कुल २८८ दोहे हैं। यह काव्य वीर रस का अद्वितीय उदाहरण है। इसमें प्रयुक्त रजपूत वस्तुतः एक प्रतीक है और उसके माध्यम से ही वीर रस की सरिता बहती

वीर सतसई में राष्ट्र प्रेम और जनश्राकुलता का विशद चित्रण हुआ है। प्रारम्भ में ही कवि कहता है कि समय ने पलटा स्वाया है अर्थात् क्रांति का पदाग्रण होना वाला है। सुयमल्ल जी तत्कालीन राजपूतों की विलासिता स्वेच्छाचारिता और उनकी अकर्मण्यता के साथ साथ अग्रजों के सहयोगी होत देवकर विधुग्ध हा उठते हैं।

इस डंडा मिला एकरी भूल कुल साम्राज्य ।

सूरा शालस ऐस मैं, अग्रज गुमाई श्राव ।

समय चलने का प्रभाव राजपूतों पर पड़ने लगा था। कवि उन क्रांतिकारियों का स्वागत करता है जो सन् ५७ में देश की गुलामी को मुक्त करने के लिए कमर कस कर युद्ध क्षेत्र में गए थे और जो नहीं गए उनके आवाहन करता है।

हैं बलिहारी राणिया, पाल बजाए दीह ।

वीर जमी रा जै जणै साकल हीटा सीह ॥

जिस घरती पर मनुष्य रहता है और जो उनके अधिकार में है उससे उसका प्रेम होना स्वाभाविक ही है। मैं अपने बच्चों को पालने में ही दशहृत के लिए अपनी घरती का अर्थ किसी को नहीं देने के लिए सिखाती है। इस राष्ट्रीय भावना का मूलरूप कवि ने इस प्रकार किया है। यह दोहा राष्ट्रीय चेतना का मूलस्रोत है।

इना न देणो आपणो हालरिया हुलगाय ।

पूत सिखावै पालण मरण बढाय माय ।

जहाँ पर वीर निवास करते हैं उन भोपटियों का बभ्रव राज-प्रासादों से किसी भी तरह कम नहीं है और उन पर कीमती राज प्रासाद समर्पित किए जा सकते हैं

टोटे मरका भीतडा घाते ऊपर घास ।

वारी जै भइ भू पडा अघपतिया आवास ॥

अपनी भूमि के लिए तो सर्वस्व समर्पित किया जा सकता है इसके समक्ष धन की क्या कीमत है? यह तो वीर भोग्या वसुधरा है—

कायर घर ऊढा कहै की धन जोडे काम ।

कण कण सचे कीडिया, जोवे तीतर जाम ॥

सूयमल्ल जी ने जिस नारी को अपना काय्य का आधार बनाया है वह भी वीर समाज में उपयुक्त ही है। वह वीरांगना है और यह प्रसन्न है कि उसका शरीर को कोई उसकी जीवितावस्था में स्पष्ट भी कर ले। अपना वीर पति की अनुपस्थिति में मात्र सना द्वारा भेरी परने पर यह क्षत्राणी— गिहपुत्री तलवार उठाकर शत्रु सना का मुकाबला करती है न कि टसूने बहाती है। वह रणचढी बन जाती है।

गाठ गया सब गहरा, वनी ध्वानक धाय।

मीहण जाई सीहणी सीधी तेग उठाय ॥'

सूयमल्ल जी ने स्त्री के गौरवपूर्ण पक्ष का यशमान पूरा मात्या के साथ किया है। व जिस वीरांगना की पूजा करते हैं वह कायर नहीं है और न उस कायर पति या पुत्र की चाह है। व कहते हैं कि वीर स्त्री सब कुछ सह सकती है लेकिन दूध को सज्जित करने वाला पुत्र और बलय [चू] को सज्जित करने वाला पति उसने लिए प्रसन्न है इसीलिए वह कायर पुत्र और पति की कटु भत्सना करती है—

सहणी सवरी हू सखी, दो उर चन्टी दाह।

दूध सजाण पुत सम बलय सजाण नाह ॥

सूयमल्ल जी का इस समय ऐसे वीरों की आवश्यकता है जो गुलामी की ताह श्रुत्वाओं का तोड़न वाले हों। एक वीर स्त्री शत्रुओं को मावधान करती है कि मेरे पति को निद्रावश जानकर छेड़ो मत और यहाँ से भाग जाओ। तुम्हारे भाग जान से ही तुम्हारी स्त्रियों का चूड़ा सुरक्षित रहेगा अर्थात् तुम्हारी सब कुशल नहीं है देखें—

नीदाणी गिए टेक्ला, पुलो न छेडा जीव।

जाय पुजावो पाव ही चूडो घण चिरजीवी ॥

ब्राह्मिणी कवि का यह श्राठ वर्षीय बालक शत्रु के लिए काल है—

भोला जाणो भूलिया बरसा श्राठा बाल

एक घराण सीहणी कबर जण सो काल।

कत्तव्य व प्रेम में स किसी एक का अपन करना बड़ा कठिन काम है। ऐसी परीक्षा की घड़ी में वीरों के समक्ष किसी प्रकार का अन्तसंघर्ष नहीं है। प्रेम की अपेक्षा कत्तव्य यहाँ सर्वोपरि है। व्यक्ति हित की अपेक्षा राष्ट्र हित प्रमुख है। वह कत्तव्य पालन व अपनी धरती के लिए सबकुछ बर्बाद करता है—

बब सुगाथी बीद नू पैसता घर धाय।

चवल साम्रै चालियो अचल बभ छुडाय।

विवाह मठप से आते हुए वर को युद्ध के नगाड़े का आवाज सुनाई देते ही वह मदमस्त वीर योद्धा एक भटकके से अचानक बबन छुड़ाकर समर क्षेत्र की उड़त हो जाता है। वह क्षण भर के लिए भी नहीं विचलता। शत्रु-सना समक्ष है और ऐसे समय में अपनी भूमि की रक्षा करना उसका प्रथम कर्तव्य है। यही कत्तव्य चेतना कवि जन जन में चाहता था।

वीर पुरुष समय की प्रतीक्षा नहीं करता है। उसकी वीरता छुपी नहीं रह सकती है। वीरत्व उमका स्वभाव है और ब्राह्मिण्य में ब्राह्मिण्य के लिए सदैव तत्पर रहता है। कवि कहता है—

नागण जाया चीटला मीहण जाया साव ।

राणी जाया नह रुक सो कुम वाट सुभाव ॥

नागिन से उरपन सप शिगु, निहवी पुत्र और राजपूतो का स्वभाव है कि किसी के भी रोके नहीं रक्त। वे अपने स्वभावानुसार अपने कमदोत्र में सत्रिय होंगे ही और यह स्वाभाविक क्रिया है।

दूरवीर के लिए उरमाह और स्फूर्ति स्वाभाविक है। वह पैदा होते ही वीरोचित क्रियाएँ करता है। यह उसका काम है। कवि कहत है—

पाल बजता ह मली दीठी नण फुलाय ।

बाजा रें सिर चेतनों भूणा कवण गिलाय ॥

बलिदान और त्याग की भावना यहां के रक्त में घुलीमिली हुई है। चाहे पिता हो या पुत्र उनके लिए तो प्राणोत्सग एक महती काम है। वीर पुत्र अपने वीर पिता का स्थान ग्रहण करता है। यह एक दृष्टान्त द्वारा कवि स्पष्ट करता है—

धुर सूती मरियो धवन मकट हचक्का छाया ।

तिण रो बाली बाछ्ढी तडे श्वष लगाय ॥

अपनी धरती की रक्षा बहादुर ही कर सकता है। मघपरत रहने वाला ही जीवित रहता है। वीर भोग्या धमुशरा ह। धश्वास्त्र होकर निरंतर सघष करने वाला ही अपने राज्य की रक्षा करता है। दृष्टव्य है—

घोडा घर ढाला पटल भाला धभ बणाया ।

जे ठाकुर भोगे जमी और किसान अपणाय ॥

ऐसा ही एक चित्र और दृष्टव्य है। वीर अपने ठाकुर या स्वामी के प्रति पूणत समर्पित होता है वह उससे विमुक्त होने की कल्पना भी नहीं कर सकता। अपने मशकत स्वामी के श्रम की खुमारी उमकी मृत्यु पर ही उत्तर सकती है। यह धरती हमारी है और इसका नशा उत्तरना मभव नहीं है। अपने स्वामी के लिए प्राणोत्सग करने के लिए वीर हमेशा तयार रहता है—

डाकी ठाकर गी रिजक ताखा रो विप एक ।

गहल मुवा ही उत्तरें सुसिया सूर अनेक ॥

प्रकाश का महत्व अधकार की तुलना से ज्ञात होता है। कायर व्यक्ति कही भी प्रशंसा अर्पित नहीं करता है उसे सम्मान नहीं मिलता। वीर पत्नी भी उसे प्रताडित करती है। व्यंग्यात्मक उक्ति देखिये।

कत घरे किम भाविया तेगा रो घण प्राण ।

लहणे मुक लुकीजिये बरो रो न बिसास ॥

x

x

x

कत भला पर धायिया पहरीजं मा रग ।

धय पग साजो पूजिया भय जे भटैग ॥

बायर क पहोग म भी रहना काई पग नही करता । जरी प्राणों का बलिदान होना है तिर कटवाया वो वीरवर तपर ११ । उम दग पर योद्धावर हान का घाबहान यह कवि करता है—

नह पहोग बायर नरां हलो धाम गुहाय ।

बनिहारी जिए दगटै माया मोस बिनाय ॥

सूयमल्ल जो का यही वाशा है कि बहादुरी और त्याग न हा दग का नाम ऊँचा हागा और यि साहम शक्य थीता और मायामान विमान की गति है ता यह दग कभी गुलाम नही रह करता है ।

वीर सतगई के दोह तथा धपनी धर्म बाध्य रचनामा क माध्यम से सूयमल्ल जा न धपेजो के विरुद्ध युगीन जन चेतना जागत को और धपेजा की कि मगठिन होकर एक सगत्त प्रनिरोध बिया जाय सो य विदगी गात समन्तर पार धसे जायेंगे । कवि को समय की प्रतीक्षा थी और वह धीरे धीरे धा रहा था । वह प्रतीक्षा पूर्ण हुई । वे समय को पहचान गये । समय की अनुकूलता जानकर उन्होंने धपनी बाध्य प्रतिभा का उपयोग बिया और बोर सतगई का निर्माण बिया जिम मुन कर बायरो म भी त्माह व शक्ति सचार हा जाय तथा वे धपेजो का सामना कर गये ।

सतगई दाहामयी मीसग गुरज मास ।

जपे भदरानी जठ मुन बायर सास ॥

नयो रजागुण ज्या नरा धा पूरो न उपांग ।

व भी मुणता ऊफणै पूग वीर प्रमाण ॥

जै दोही पस ठजला जूभण पूरा जोष ।

मुणता वे भट सो गुणा वीर प्रकासण बाध ।

स्पष्ट है कि इस वीर सतसई का उद्देश्य राष्ट्रीय स्वाधीनता सश्राम में राजपूतो का जूझ मरन के लिए सगठित शक्ति को जागृत करने हेतु बिया गया था । यह हमारा दुर्भाग्य रहा कि पारस्परिक फूट, घात प्रतिघात अपूरण तयारी और सठगन शक्ति के अभाव से इस शक्ति का सम्यक् विकास न हो सका और यह विद्रोह या स्वाधीनता सश्राम बुचल दिया गया । सबत्र गहन अधकार छा गया और सभी स्वप्न भग हो गये । ऐसे समय में सूयमल्ल जी का व्यथित हृदय निराशा से चीत्कार कर उठा—

त्रिग बा भूम न जापिता गद गिवल गिडराज ।

तिए वन जबुक तालडा ऊधम मडै घाज ॥

जिस वन में हाथी गडे और सूअर भूल कर नहीं जाते थे वनराज (सिंह) के निधन पर उसी वन में गीदड ऊधम मचा रहे हैं और इसी स्थान पर घाकर महाकवि को वाणी मौन हो गई । यह देश का दुर्भाग्य था कि स्थानीय राजा नहीं जागत हुए और क्रांति असफल हो गई । इस असफलता से व व्यथित हो गये ।

सूयमल्ल जी ने डा० फूर्लसिंह जी पिपल्या की पत्र लिखा था। उसका अंश दृष्टव्य है— 'परन्तु मेरी यह बात प्रायः याद रखिये कि जो इन बार अंग्रेज रह गया तो वही सब-शक्तिमान हो जायेगा। पृथ्वी का मालिक कोई न रह सकेगा।' समय ने देखा है कि १८५७ की क्रांति की असफलता के पश्चात् अंग्रेज अधिक नृशंस प्रत्याचारी और बबर हो गये और उन्होंने दमन व प्रतिगाथ के नये मार्ग तलाशे। लेकिन यह भी सत्य है कि अंग्रेजों पर किया गया यह प्रहार व्यय नहीं हुआ और क्रांति का सूत्रपात हो गया जो प्रागे चलकर भारत की स्वाधीनता का आधार स्तम्भ बना।

महाकवि सूयमल्ल जन्मजात कवि थे व साधना से कवि नहीं बने। उनकी प्रतिभा उनका काव्य—कौशल, उनका रचना कम अद्वितीय है। वे धीरे-धीरे सात्मक रचना के लिए ही नहीं राष्ट्रीय चेतना और जन-जागृति को दृष्टि से हिन्दी साहित्य के शीघ्र रचनाकार हैं।











